अध्याय १३

रथयात्रा के समय महाप्रभु का भावमय नृत्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपनी पुस्तक *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में इस अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है : प्रात:काल स्नान करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने अर्चाविग्रहों (जगन्नाथ, बलदेव तथा सुभद्रा) को उनके तीन रथों पर विराजमान होते देखा। यह उत्सव पाण्डु-विजय कहलाता है। इस अवसर पर राजा प्रतापरुद्र ने सुनहरी मूठ वाली एक झाड़ू ली और मार्ग साफ करना शुरू कर दिया। भगवान् जगन्नाथ ने लक्ष्मीदेवी से अनुमति ली और गुण्डिचा मन्दिर जाने के लिए वे रथ पर चढ़कर रवाना हो गये। मन्दिर तक का मार्ग चौड़े बालुकामय समुद्री-तट के किनारे से होकर जाता था और मार्ग के दोनों ओर रिहायशी मकान तथा बगीचे थे। इस मार्ग पर *गौड़* कहे जाने वाले सेवकों ने रथों को खींचना शुरू किया। श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी संकीर्तन-टोली के सात विभाग कर दिये। प्रत्येक विभाग के पास दो मृदंग थे—इस तरह कुल चौदह मृदंग हो गये। कीर्तन करते समय महाप्रभु में दिव्य भाव के अनेक लक्षण प्रकट हुए और जगन्नाथ तथा श्री चैतन्य महाप्रभु ने अत्यन्त आनन्दपूर्वक अपनी-अपनी अनुभूतियों का विनिमय किया। जब तीनों रथ बलगण्डि नामक स्थान पर पहुँच गये, तो भक्तों ने अर्चाविग्रहों को साधारण भोजन अर्पित किया। इस अवसर पर श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्तों ने नाचने के बाद पास के उद्यान में थोड़ा विश्राम किया।

স জীয়াৎকৃষ্ণ-চৈতন্যঃ শ্রী-রথাগ্রে ননর্ত যঃ ।
যেনাসীজ্জগতাং চিত্রং জগন্নাথোঽঙ্গপি বিস্মিতঃ ॥১॥

स जीयात्कृष्ण-चैतन्यः श्री-रथाग्रे ननर्त ग्रः ।
ग्रेनासीज्जगतां चित्रं जगन्नाथोऽपि विस्मितः ॥ १ ॥

सः—वे; **जीयात्**—दीर्घायु हों; **कृष्ण-चैतन्यः**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **श्री-रथ-अग्रे**—श्री जगन्नाथ के रथ के आगे; **ननर्त**—जिन्होंने नृत्य किया; **ग्रः**—जिनसे; **ग्रेन**—हुआ; **आसीत्**—जो; **जगताम्**—सारे जगत् को; **चित्रम्**—आश्चर्य; **जगन्नाथः**—भगवान् जगन्नाथ; **अपि**—भी; **विस्मितः**—चकित हुए।

अनुवाद

श्री जगन्नाथ के रथ के समक्ष नृत्य वाले पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य की जय हो! उनके नृत्य को देखकर न केवल सारा ब्रह्माण्ड चकित था, अपितु स्वयं भगवान् जगन्नाथ भी अत्यधिक चकित हो गये।

জয় জয় শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য নিত্যানন্দ ।
জয়াদ্বৈত-চন্দ্র জয় গৌর-ভক্ত-বৃন্দ ॥২॥

জয় জয় শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য নিত্যানন্দ ।
জয়াদ্বৈত-চন্দ্র জয় গৌর-ভক্ত-বৃন্দ ॥ ২ ॥

জয় জয়—জয় हो; **শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য**—श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु; **নিত্যানন্দ**—नित्यानन्द प्रभु की; **জয়**—जय हो; **অদ্বৈত-চন্দ্র**—अद्वैत आचार्य की; **জয়**—जय हो; **গৌর-ভক্ত-বৃন্দ**—चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की।

अनुवाद

श्रीकृष्ण चैतन्य तथा प्रभु नित्यानन्द की जय हो! अद्वैतचन्द्र की जय हो! चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की जय हो!

জয় শ্রোতা-গণ, শুন, করি' এক মন ।
রথ-যাত্রায় নৃত্য প্রভুর পরম মোহন ॥৩॥

জয় শ্রোতা-গণ, শুন, করি' এক মন ।
রথ-যাত্রায় নৃত্য প্রভুর পরম মোহন ॥ ৩ ॥

জয়—जय हो; **শ্রোতা-গণ**—श्रोतागण की; **শুন**—कृपया सुनो; **করি'**—करके; **এক মন**—मन को सावधान; **রথ-যাত্রায়**—रथयात्रा उत्सव में; **নৃত্য**—नृत्य; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **পরম**—अत्यन्त; **মোহন**—आकर्षक ।

अनुवाद

श्री चैतन्य-चरितामृत के श्रोताओं की जय हो! अब कृपा करके रथयात्रा उत्सव के समय श्री चैतन्य महाप्रभु के नृत्य का विवरण सुनें। उनका नृत्य अत्यन्त मनोहारी है। कृपा करके इसे ध्यानपूर्वक सुनें।

आर दिन महाप्रभु हञा सावधान ।
रात्रे उठि' गण-सङ्गे कैल प्रातः-स्नान ॥४॥

आर दिन महाप्रभु हञा सावधान ।
रात्रे उठि' गण-सङ्गे कैल प्रातः-स्नान ॥४॥

आर दिन—अगले दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हञा**—होकर; **सावधान**—सावधान; **रात्रे उठि'**—रात को उठकर; **गण-सङ्गे**—निजी भक्तों के साथ; **कैल**—लिया; **प्रातः-स्नान**—प्रातः स्नान।

अनुवाद

अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके निजी संगी अँधेरे में ही जग गये और उन्होंने ध्यानपूर्वक प्रातःकालीन स्नान किया।

पाण्डु-विजय देखिवारे करिल गमन ।
जगन्नाथ यात्रा कैल छाड़ि' सिंहासन ॥५॥

पाण्डु-विजय देखिबारे करिल गमन ।
जगन्नाथ यात्रा कैल छाड़ि' सिंहासन ॥५॥

पाण्डु-विजय—पांडु विजय नामक उत्सव; **देखिबारे**—देखने के लिए; **करिल**—किया; **गमन**—गमन; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **यात्रा**—यात्रा; **कैल**—की; **छाड़ि'**—छोड़कर; **सिंहासन**—सिंहासन को।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु अपने संगियों समेत पाण्डुविजय उत्सव देखने गये। इस उत्सव में भगवान् जगन्नाथ अपना सिंहासन छोड़कर रथ पर चढ़ते हैं।

আপনি প্রতাপরুদ্র লঞা পাত্র-গণ ।
মহাপ্রভুর গণে করায় বিজয়-দর্শন ॥৬॥

আপনি প্রতাপরুদ্র লঞা পাত্র-গণ ।
মহাপ্রভুর গণে করায় বিজয়-দর্শন ॥ ৬ ॥

আপনি—স্वयं; **প্রতাপরুদ্র**—राजा प्रतापरुद्र ने; **লঞা**—अपने साथ लेकर; **পাত্র-গণ**—अपने साथियों को; **মহাপ্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **গণে**—साथियों को; **করায়**—कराया; **বিজয়-দর্শন**—विजय दर्शन उत्सव का दर्शन।

अनुवाद

राजा प्रतापरुद्र तथा उनके संगियों ने श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त संगियों को पाण्डुविजय उत्सव देखने की अनुमति प्रदान की।

অদ্বৈত, নিতাই আদি সঙ্গে ভক্ত-গণ ।
সুখে মহাপ্রভু দেখে ঈশ্বর-গমন ॥৭॥

অদ্বৈত, নিতাই আদি সঙ্গে ভক্ত-গণ ।
সুখে মহাপ্রভু দেখে ঈশ্বর-গমন ॥ ৭ ॥

অদ্বৈত—अद्वैत आचार्य; **নিতাই**—नित्यानन्द प्रभु; **আদি**—आदि; **সঙ্গে**—के साथ; **ভক্ত-গণ**—भक्तगण; **সুখে**—अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **দেখে**—देखा; **ঈশ্বর-গমন**—भगवान् की रथयात्रा का गमन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु तथा अद्वैत आचार्य, नित्यानन्द प्रभु इत्यादि अन्य प्रमुख भक्त यह देखकर परम सुखी थे कि भगवान् जगन्नाथ किस तरह रथयात्रा शुरू करने जा रहे हैं।

বলিষ্ঠ দয়িতা' গণ—যেন মত্ত হাতী ।
জগন্নাথ বিজয় করায় করি' হাতাহাতি ॥৮॥

বলিষ্ঠ দয়িতা' গণ—যেন মত্ত হাতী ।
জগন্নাথ বিজয় করায় করি' হাতাহাতি ॥ ৮ ॥

বলিষ্ঠ দয়িতা' গণ—बहुत बलवान जगन्नाथ को उठाने वाले दयिता; **যেন**—जैसे; **মত্ত হাতী**—उन्मत्त हाथी; **জগন্নাথ**—भगवान् जगन्नाथ का; **বিজয়**—प्रस्थान; **করায়**—कराया ; **করি'**—करके; **হাতাহাতি**—हाथों हाथ।

अनुवाद

बलिष्ठ दयिता (जगन्नाथ अर्चाविग्रह को ले जाने वाले) मत्त हाथियों के समान शक्तिशाली थे। वे भगवान् जगन्नाथ को हाथोंहाथ सिंहासन से रथ तक ले गये।

तात्पर्य

दयिता शब्द उस व्यक्ति का सूचक है, जिसे भगवान् की कृपा प्राप्त हो चुकी है। भगवान् जगन्नाथ के अनेक बलिष्ठ सेवक हैं, जिन्हें *दयिता* कहा जाता है। ये सेवक बहुत उच्च कुलों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के नहीं होते, किन्तु भगवान् की सेवा में लगे रहने के कारण वे उच्च सम्मानित पद पर उन्नत हुए हैं। इस तरह वे *दयिता* कहलाते हैं। भगवान् जगन्नाथ के ये सेवक स्नान-यात्रा के दिन से लेकर सिंहासन से रथ तक ले जाये जाने वाले दिन तक भगवान् जगन्नाथ की देखभाल करते हैं। *क्षेत्र-माहात्म्य* में इन दयिताओं को शबरों से आया माना जाता है। शबर ऐसी जाति का नाम है, जिनका धंधा शूकर पालना और बेचना है। किन्तु ऐसे अनेक दयिता भी हैं, जो ब्राह्मण जाति के हैं। ब्राह्मण कुलों से आने वाले ऐसे दयिता *दयितापति* कहलाते हैं। ये दयितापति *अनवसर* के समय अर्थात् स्नान-यात्रा के बाद की विश्रान्ति अवधि में भगवान् जगन्नाथ को मिठाइयाँ चढ़ाते हैं। ये नित्य प्रात:काल मिठाइयाँ भी चढ़ाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि अनवसर के समय भगवान् जगन्नाथ ज्वर से पीड़ित रहते हैं और दयितापति उन्हें फलों के रस के रूप में औषधियाँ देते हैं। कहा जाता है कि प्रारम्भ में भगवान् जगन्नाथ शबरों द्वारा पूजित थे और नीलमाधव अर्चाविग्रह कहलाते थे। किन्तु बाद में जब अर्चाविग्रह की स्थापना मन्दिर के भीतर हो गई, तो वे जगन्नाथ कहलाने लगे। चूँकि ये अर्चाविग्रह शबरों से प्राप्त किये गये थे, इसलिए सारे शबर भक्त दयिताओं के पद पर उन्नत हुए।

কতক দয়িতা করে স্কন্ধ আলম্বন ।
কতক দয়িতা ধরে শ্রী-পদ্ম-চরণ ॥৯॥

कतक दयिता करे स्कन्ध आलम्बन ।
कतक दयिता धरे श्री-पद्म-चरण ॥ ९ ॥

कतक दयिता—कुछ दयिताओं ने; **करे**—किया; **स्कन्ध**—कंधो को; **आलम्बन**—पकड़ा; **कतक**—कुछ; **दयिता**—दयिताओं ने; **धरे**—पकड़े; **श्री-पद्म-चरण**—भगवान् के चरणकमल।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ के अर्चाविग्रह को ले जाते समय कुछ दयिताओं ने उनके कन्धे पकड़े और कुछ ने उनके चरणकमल पकड़ लिए।

कटि-तटे बद्ध, दृढ़ स्थूल पट्ट-डोरी ।
दुइ दिके दयिता-गण उठाय ताहा धरि' ॥ १० ॥

कटि-तटे बद्ध, दृढ़ स्थूल पट्ट-डोरी ।
दुइ दिके दयिता-गण उठाय ताहा धरि' ॥ १० ॥

कटि-तटे—कमर पर; **बद्ध**—बाँधी; **दृढ़**—दृढ़; **स्थूल**—मोटी; **पट्ट-डोरी**—रेशमी डोरी; **दुइ दिके**—दोनों ओर से; **दयिता-गण**—दयिताओं ने; **उठाय**—उठाया; **ताहा**—उस रस्सी को; **धरि'**—पकड़कर।

अनुवाद

जगन्नाथजी के अर्चाविग्रह की कमर पर मजबूत मोटी रेशम की रस्सी बाँधी गई। दयिताओं ने दोनों ओर से इस रस्सी को पकड़ लिया और अर्चाविग्रह को ऊपर उठा लिया।

उच्च दृढ़ तुली सब पाति' स्थाने स्थाने ।
एक तुली हैते त्वराय आर तुलीते आने ॥ ११ ॥

उच्च दृढ़ तुली सब पाति' स्थाने स्थाने ।
एक तुली हैते त्वराय आर तुलीते आने ॥ ११ ॥

उच्च—ऊँचे; **दृढ़**—मज़बूत; **तुली**—कपास के गद्दे; **सब**—सब; **पाति'**—फैलाकर; **स्थाने स्थाने**—जगह जगह; **एक तुली**—एक गद्दे; **हैते**—से; **त्वराय**—अति शीघ्र; **आर**—अगले; **तुलीते**—गद्दे पर; **आने**—लाए।

अनुवाद

सिंहासन से लेकर रथ तक धुनी रुई के मजबूत गद्दे (तुली) बिछा

दिये गये और जगन्नाथजी का भारी अर्चाविग्रह दयिताओं द्वारा एक गद्दे से दूसरे गद्दे तक ले जाया गया।

প্রভু-পদাঘাতে তুলী হয় খণ্ড খণ্ড ।
তুলা সব উড়ি' যায়, শব্দ হয় প্রচণ্ড ॥১২॥

প্রভু-পদাঘাতে তুলী হয় খণ্ড খণ্ড ।
তুলা সব উড়ি' য়ায়, শব্দ হয় প্রচণ্ড ॥১২॥

प्रभु-पद-आघाते—भगवान् जगन्नाथ की ठोकर से; **तुली**—गद्दे; **हय**—हो गये; **खण्ड खण्ड**—खण्ड खण्ड; **तुला**—अन्दर की कपास; **सब**—सब; **उड़ि' य़ाय**—उड़ गई; **शब्द**—ध्वनि; **हय**—हुई; **प्रचण्ड**—बहुत ऊँची।

अनुवाद

जब दयितागण जगन्नाथजी के भारी अर्चाविग्रह को एक गद्दे से दूसरे तक ले जा रहे थे, तब कुछ गद्दे टूट गये और उनकी रुई हवा में उड़ने लगी। इन गद्दों के टूटने से पटाखे जैसा प्रचण्ड शब्द हुआ।

বিশ্বম্ভর জগন্নাথে কে চালাইতে পারে? ।
আপন ইচ্ছায় চলে করিতে বিহারে ॥১৩॥

বিশ্বম্ভর জগন্নাথে কে চালাইতে পারে? ।
আপন ইচ্ছায় চলে করিতে বিহারে ॥১৩॥

विश्वम्भर—ब्रह्माण्ड के पालक; **जगन्नाथे**—भगवान् जगन्नाथ; **के**—कौन; **चालाइते**—उठा; **पारे**—सकता है; **आपन**—स्वयं की; **इच्छाय**—मर्जी से; **चले**—चलते हैं; **करिते**—करने; **विहारे**—लीला।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पालनहार हैं। भला उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक कौन ले जा सकता है? किन्तु भगवान् स्वयं अपनी इच्छा से अपनी लीलाएँ करने के लिए चलते हैं।

মহাপ্রভু 'মণিমা' 'মণিমা' করে ধ্বনি ।
নানা-বাদ্য-কোলাহলে কিছুই না শুনি ॥১৪॥

महाप्रभु 'मणिमा' 'मणिमा' करे ध्वनि ।
नाना-वाद्य-कोलाहले किछुइ ना शुनि ॥ १४॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मणिमा मणिमा**—सम्मानसूचक शब्द; **करे**—कर रहे थे; **ध्वनि**—उच्चारण; **नाना**—नाना; **वाद्य**—वाद्ययंत्र; **कोलाहले**—ऊँची गूँज से; **किछुइ**—कुछ भी; **ना**—नहीं; **शुनि**—सुनाई दे सकता था।

अनुवाद

जब भगवान् को सिंहासन से रथ तक ले जाये जा रहे थे, तब विविध वाद्य-यंत्रों से तुमुल ध्वनि हो रही थी और श्री चैतन्य महाप्रभु "मणिमा! मणिमा!" का उच्चारण कर रहे थे किन्तु उनकी आवाज किसी को सुनाई नहीं दे रही थी।

तात्पर्य

उड़ीसा में *मणिमा* शब्द का प्रयोग भद्र व्यक्ति को सम्बोधित करने के लिए किया जाता है। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान् जगन्नाथजी को अत्यन्त आदरपूर्वक सम्बोधित कर रहे थे।

तबे प्रतापरुद्र करे आपने सेवन ।
सुवर्ण-मार्जनी लञा करे पथ सम्मार्जन ॥ १५॥
तबे प्रतापरुद्र करे आपने सेवन ।
सुवर्ण-मार्जनी लञा करे पथ सम्मार्जन ॥ १५॥

तबे—उस समय; **प्रतापरुद्र**—राजा प्रतापरुद्र ने; **करे**—की; **आपने**—स्वयं; **सेवन**—सेवा; **सुवर्ण**—स्वर्ण की; **मार्जनी**—झाड़ू; **लञा**—लेकर; **करे**—किया; **पथ**—सड़क को; **सम्मार्जन**—साफ।

अनुवाद

जब भगवान् को सिंहासन से रथ तक ले जाये जा रहे थे, तब राजा प्रतापरुद्र हाथ में सुनहरी मूठ वाली झाड़ू लिए भगवान् की सेवा हेतु मार्ग की सफाई करने में व्यस्त थे।

चन्दन-जलेते करे पथ निषेचने ।
तुच्छ सेवा करे बसि' राज-सिंहासने ॥ १६॥

चन्दन-जलेते करे पथ निषेचने ।
तुच्छ सेवा करे वसि' राज-सिंहासने ॥ १६ ॥

चन्दन-जलेते—चन्दन-जल से; **करे**—किया; **पथ**—सड़क का; **निषेचने**—छिड़काव; **तुच्छ**—तुच्छ; **सेवा**—सेवा; **करे**—की; **वसि'**—यद्यपि अधिकारी थे; **राज-सिंहासने**—राज सिंहासन के।

अनुवाद

राजा ने मार्ग पर चन्दन से सुगन्धित जल का छिड़काव किया। यद्यपि वे राज-सिंहासन के स्वामी थे, किन्तु भगवान् जगन्नाथ के लिए तुच्छ सेवा में लगे हुए थे।

উত্তম হঞা রাজা করে তুচ্ছ সেবন ।
অতএব জগন্নাথের কৃপার ভাজন ॥ ১৭ ॥

उत्तम हञा राजा करे तुच्छ सेवन ।
अतएव जगन्नाथेर कृपार भाजन ॥ १७ ॥

उत्तम हञा—यद्यपि अति आदरणीय; **राजा**—राजा ने; **करे**—स्वीकार की; **तुच्छ**—तुच्छ; **सेवन**—सेवा; **अतएव**—अतएव; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ की; **कृपार**—कृपा का; **भाजन**—योग्य पात्र।

अनुवाद

यद्यपि राजा अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति थे, फिर भी भगवान् के लिए वे तुच्छ सेवा कर रहे थे। अतएव वे भगवान् की कृपा प्राप्त करने के उपयुक्त पात्र बन गये।

মহাপ্রভু সুখ পাইল সে-সেবা দেখিতে ।
মহাপ্রভুর কৃপা হৈল সে-সেবা হইতে ॥ ১৮ ॥

महाप्रभु सुख पाइल से-सेवा देखिते ।
महाप्रभुर कृपा हैल से-सेवा हइते ॥ १८ ॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सुख पाइल**—अत्यन्त प्रसन्न हुए; **से सेवा**—उस प्रकार की सेवा से; **देखिते**—देखकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा; **हैल**—हुई; **से सेवा हइते**—उस सेवा के कारण।

अनुवाद

राजा को ऐसी तुच्छ सेवा में संलग्न देखकर चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए। यह सेवा करने से ही राजा को महाप्रभु की कृपा प्राप्त हो पाई।

तात्पर्य

भगवान् की कृपा प्राप्त हुए बिना मनुष्य न तो भगवान् को समझ सकता है, न ही उनकी भक्ति में लग सकता है :

अथापि ते देव पदाम्बुजद्वय-
प्रसादलेशानुगृहीत एव हि।
जानाति तत्त्वं भगवन्महिम्नो
न चान्य एकोऽपि चिरं विचिन्वन्॥

(*भागवत* १०.१४.२९)

जिस भक्त को भगवान् की थोड़ी सी भी कृपा प्राप्त होती है, वही उन्हें समझ सकता है। अन्य लोग उन्हें समझने के लिए भले ही उनका दार्शनिक चिन्तन क्यों न करें, लेकिन वे उन्हें तनिक भी समझ नहीं पाते। यद्यपि महाराज प्रतापरुद्र श्री चैतन्य महाप्रभु को मिलने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे, किन्तु महाप्रभु ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया। किन्तु जब महाप्रभु ने देखा कि राजा भगवान् जगन्नाथ की तुच्छ सेवा में लगा है, तब वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। इस तरह राजा श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा पाने का पात्र बन सका। यदि कोई भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु को जगत्-गुरु और जगन्नाथजी को भगवान् कृष्ण स्वीकार कर लेता है, तो उसे कृष्ण तथा गुरु दोनों की सम्मिलित कृपा प्राप्त होती है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने रूप गोस्वामी को अपने उपदेशों में यही कहा है (*चैतन्य-चरितामृत, मध्य* १९.१५१) :

ब्रह्माण्ड भ्रमिते कोन भाग्यवान् जीव।
गुरु-कृष्ण-प्रसादे पाय भक्ति-लता-बीज॥

भक्ति का बीज अंकुरित होकर दिव्य लता का रूप धारण करता है। अन्त में यह लता आध्यात्मिक आकाश में भगवान् के चरणकमलों तक जा पहुँचती है। यह भक्ति-बीज भगवान् तथा गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है। भगवान्

की ही कृपा से प्रामाणिक गुरु की संगति प्राप्त होती है और गुरु की कृपा से भक्ति करने का अवसर प्राप्त होता है। भक्ति अर्थात् भक्तियोग की विद्या मनुष्य को इस लोक से वैकुण्ठ लोक ले जाती है।

रथের সাজনি দেখি' লোকে চমত্কার ।
নব হেমময় রথ—সুমেরু-আকার ॥ ১৯॥

रथेर साजनि देखि' लोके चमत्कार ।
नव हेममय रथ—सुमेरु-आकार ॥ १९॥

रथेर—रथ की; **साजनि**—सजावट; **देखि'**—देखकर; **लोके**—लोग; **चमत्कार**—चकित हो गये; **नव**—नया; **हेम-मय**—सुनहरा; **रथ**—रथ; **सुमेरु-आकार**—सुमेरू पर्वत जितना ऊँचा।

अनुवाद

रथ की सजावट देखकर हर व्यक्ति आश्चर्यचकित था। रथ नये सिरे से सोने का बना लग रहा था और सुमेरु पर्वत जितना ऊँचा था।

तात्पर्य

१९७३ ई. में लन्दन, इंग्लैंड में विशाल रथयात्रा का आयोजन किया गया था और रथ को ट्रैफैल्गर स्क्वायर तक लाया गया था। लन्दन के दैनिक समाचार-पत्र 'गार्डियन' के मुखपृष्ठ पर चित्र के नीचे शीर्षक छपा था, "ट्रैफैल्गर स्क्वायर में इस्कॉन की रथयात्रा नेल्सन स्तम्भ की समता करने वाली है।" नेल्सन स्तम्भ लार्ड नेल्सन की अत्यन्त प्रभावशाली मूर्ति है और काफी दूर से दिखती है। जिस तरह पुरी के निवासी रथयात्रा के रथ की तुलना सुमेरु पर्वत से कर रहे थे, उसी तरह लन्दन के निवासियों ने रथ की समता नेल्सन-स्मारक से की।

শত শত সু-চামর-দর্পণে উজ্জ্বল ।
উপরে পতাকা শোভে চাঁদোয়া নির্মল ॥২০॥

शत शत सु-चामर-दर्पणे उज्ज्वल ।
उपरे पताका शोभे चाँदोया निर्मल ॥ २०॥

शत शत—सैंकड़ों; **सु-चामर**—सुन्दर सफेद चामर; **दर्पणे**—दर्पण-सहित; **उज्ज्वल**—चमकदार; **उपरे**—ऊँचाई पर; **पताका**—झंडा; **शोभे**—शोभा दे रहा था; **चाँदोया**—छत्र; **निर्मल**—निर्मल।

अनुवाद

इस सजावट में चमकीले शीशे तथा सैंकड़ों चामर थे। रथ के ऊपर स्वच्छ छत्र तथा एक अत्यन्त सुन्दर झंडा था।

घाघर, किङ्किणी बाजे, घण्टार कणित ।
नाना चित्र-पट्ट-वस्त्रे रथ विभूषित ॥२१॥

घाघर, किङ्किणी बाजे, घण्टार क्वणित ।
नाना चित्र-पट्ट-वस्त्रे रथ विभूषित ॥ २१ ॥

घाघर—घड़ियाल; **किङ्किणी**—छोटी घण्टिया; **बाजे**—बज रही थीं; **घण्टार**—घण्टियों के; **क्वणित**—बजने की ध्वनि; **नाना**—अनेक; **चित्र**—चित्र; **पट्ट-वस्त्रे**—रेशमी कपड़े से; **रथ**—रथ; **विभूषित**—सुशोभित था।

अनुवाद

रथ को रेशमी वस्त्र तथा विविध चित्रों से भी सजाया गया था। अनेक पितल के घंटे, घड़ियाल तथा घुंघरू बज रहे थे।

लीलाय चड़िल ईश्वर रथेर उपर ।
आर दुई रथे चड़े सुभद्रा, हलधर ॥२२॥

लीलाय चड़िल ईश्वर रथेर उपर ।
आर दुइ रथे चड़े सुभद्रा, हलधर ॥ २२ ॥

लीलाय—लीला के लिए; **चड़िल**—चढ़ गये; **ईश्वर**—परम भगवान्; **रथेर**—रथ के; **उपर**—ऊपर; **आर दुइ**—और दो; **रथे**—रथों में; **चड़े**—चढ़ गये; **सुभद्रा**—भगवान् जगन्नाथ की बहन सुभद्रा; **हलधर**—बलराम।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ रथयात्रा-लीला के लिए एक रथ पर चढ़े और उनकी बहन सुभद्रा तथा बड़े भाई बलराम अन्य दो रथों पर आरूढ़ हुए।

পঞ্চ-দশ দিন ঈশ্বর মহা-লক্ষ্মী লঞা ।
তাঁর সঙ্গে ক্রীড়া কৈল নিভৃতে বসিয়া ॥২৩॥

পञ্চ-দশ দিন ঈশ্বর মহা-লক্ষ্মী লঞা ।
তাঁর সঙ্গে ক্রীড়া কৈল নিভৃতে বসিয়া ॥ ২৩॥

पञ्च-दश दिन—पन्द्रह दिन; **ईश्वर**—भगवान्; **महा-लक्ष्मी**—महालक्ष्मी; **लञा**—के साथ; **ताँर सङ्गे**—उसकी संगति में; **क्रीड़ा**—आनन्द; **कैल**—किया; **निभृते**—एकान्त स्थान में; **वसिया**—बैठकर।

अनुवाद

भगवान् पन्द्रह दिनों तक महालक्ष्मी के साथ एकान्त स्थान में रहे और उनके साथ क्रीड़ा-विहार किया।

तात्पर्य

अनवसर का पन्द्रह दिन का काल महालक्ष्मी के रहने के एकान्त स्थान के सम्मान में *निभृत* भी कहलाता है। वहाँ पर पन्द्रह दिन रहने के बाद भगवान् जगन्नाथ ने महालक्ष्मी से जाने की अनुमति ली।

তাঁহার সম্মতি লঞা ভক্তে সুখ দিতে ।
রথে চড়ি' বাহির হৈল বিহার করিতে ॥২৪॥

তাঁহার সম্মতি লঞা ভক্তে সুখ দিতে ।
রথে চড়ি' বাহির হৈল বিহার করিতে ॥ ২৪॥

ताँहार सम्मति—उनकी आज्ञा; **लञा**—लेकर; **भक्ते**—भक्तों को; **सुख दिते**—सुख देने के लिए; **रथे चड़ि'**—रथ पर चढ़कर; **बाहिर हैल**—बाहर आये; **विहार करिते**—लीला करने।

अनुवाद

महालक्ष्मी की अनुमति लेकर भगवान् रथ पर चढ़ने और भक्तों के आनन्द हेतु अपनी लीलाएँ करने के लिए बाहर आये।

तात्पर्य

इस सम्बन्ध में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि आदर्श पति के रूप में भगवान् जगन्नाथ अपनी पत्नी महालक्ष्मी के साथ पंद्रह दिनों तक एकान्त में रहे। तो भी भगवान् अपने भक्तों को सुख देने के लिए एकान्त

स्थान से बाहर आना चाह रहे थे। भगवान् दो प्रकार से भोग करते हैं— *स्वकीय* तथा *परकीय। स्वकीय* रस में भगवान् का माधुर्य प्रेम द्वारका के विधि-विधानों को दर्शाता है, जहाँ भगवान् की कई रानियाँ हैं। किन्तु वृन्दावन में भगवान् का माधुर्य प्रेम अपनी विवाहिता पत्नियों के साथ न होकर गोपियों के साथ होता है। गोपियों के साथ यह माधुर्य प्रेम *परकीय रस* कहलाता है। भगवान् जगन्नाथ उस एकान्त स्थान को छोड़ देते हैं, जहाँ वे महालक्ष्मी के साथ स्वकीय रस का भोग करते हैं और वे वृन्दावन चले जाते हैं, जहाँ वे परकीय रस का भोग करते हैं। अतएव भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर हमें याद दिलाते हैं कि परकीय रस में भगवान् को स्वकीय रस से अधिक आनन्द प्राप्त होता है।

भौतिक जगत् में अविवाहिता कुमारियों के साथ प्रेम-व्यवहार अर्थात् परकीय रस अत्यन्त अधम सम्बन्ध माना जाता है, किन्तु आध्यात्मिक जगत् में इस प्रकार के प्रेम-व्यवहार को परम आनन्द माना जाता है। भौतिक जगत् में प्रत्येक वस्तु आध्यात्मिक जगत् का प्रतिबिम्ब मात्र है और वह प्रतिबिम्ब भी उल्टा या विकृत होता है। हम भौतिक जगत् के अपने अनुभवों के आधार पर आध्यात्मिक जगत् के व्यवहारों को नहीं समझ सकते। इसीलिए लौकिक विद्वान तथा शब्द तोड़ने-मरोड़ने वाले लोग गोपियों के साथ के प्रेम व्यवहार को गलत समझते हैं। आध्यात्मिक जगत् के परकीय रस की चर्चा केवल ऐसे व्यक्ति द्वारा की जानी चाहिए, जो भक्ति में अत्यन्त उन्नत हो। आध्यात्मिक जगत् के परकीय रस की तुलना भौतिक जगत् के परकीय रस से नहीं की जा सकती। पहला सोने के तुल्य है और दूसरा लोहे के समान है। दोनों में इतना अधिक अन्तर होता है कि वास्तव में उनकी तुलना ही नहीं की जा सकती। किन्तु जिस प्रकार एक जानकार व्यक्ति लोहे और सोने का अन्तर समझ सकता है उसी प्रकार, जिसे समुचित अनुभूति होती है, वह आध्यात्मिक जगत् के दिव्य कार्यकलापों से और भौतिक जगत् के कार्यकलापों में सरलता से अन्तर बता सकता है।

সূক্ষ্ম শ্বেত-বালু পথে পুলিনের সম ।
দুই দিকে টোটা, সব—যেন বৃন্দাবন ॥২৫॥

सूक्ष्म श्वेत-बालु पथे पुलिनेर सम ।
दुइ दिके टोटा, सब—ग्रेन वृन्दावन ॥ २५॥

सूक्ष्म—सूक्ष्म; **श्वेत-बालु**—सफेद बालु; **पथे**—मार्ग पर; **पुलिनेर सम**—यमुना तट की भाँति; **दुइ दिके**—दोनों ओर; **टोटा**—उद्यान; **सब**—सब; **ग्रेन**—की भाँति; **वृन्दावन**—वृन्दावन के पावन स्थान जैसे।

अनुवाद

सारे मार्ग में बिछी महीन श्वेत बालू यमुना-तट के समान लग रही थी और दोनों ओर के छोटे-छोटे बगीचे वृन्दावन के बगीचों जैसे लग रहे थे।

रथे चड़ि' जगन्नाथ करिला गमन ।
दुई-पार्श्वे देखि' चले आनन्दित-मन ॥२६॥
रथे चड़ि' जगन्नाथ करिला गमन ।
दुइ-पार्श्वे देखि' चले आनन्दित-मन ॥ २६॥

रथे चड़ि'—रथ पर चढ़कर; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **करिला गमन**—गमन कर रहे थे; **दुइ-पार्श्वे**—दोनों ओर; **देखि'**—देखकर; **चले**—चले; **आनन्दित**—आनन्दपूर्वक; **मन**—मन में।

अनुवाद

जब भगवान् जगन्नाथ रथ पर चढ़ गये और उन्होंने दोनों ओर के सौन्दर्य को निहारा, तो उनका मन आनन्द से भर गया।

'गौड़' सब रथ टाने करिया आनन्द ।
क्षणे शीघ्र चले रथ, क्षणे चले मन्द ॥२७॥
'गौड़' सब रथ टाने करिया आनन्द ।
क्षणे शीघ्र चले रथ, क्षणे चले मन्द ॥ २७॥

गौड़—रथ खींचने वाले; **सब**—सब; **रथ**—रथ; **टाने**—खींचते थे; **करिया**—अनुभव करते हुए; **आनन्द**—आनन्द; **क्षणे**—कभी-कभी; **शीघ्र चले**—शीघ्र चलते थे; **रथ**—रथ; **क्षणे**—कभी-कभी; **चले**—जाते थे; **मन्द**—अति मन्द गति से।

अनुवाद

रथ को खींचने वाले गौड़ कहलाते थे और वे रथ को अतीव आनन्द

से खींच रहे थे। किन्तु यह रथ कभी तो बहुत तेज चलता था और कभी अत्यन्त मन्द हो जाता था।

क्षणे स्थिर हञा रहे, टानिलेह ना चले ।
ईश्वर-इच्छाय चले, ना चले कारो बले ॥२८॥

क्षणे स्थिर हञा रहे, टानिलेह ना चले ।
ईश्वर-इच्छाय चले, ना चले कारो बले ॥ २८ ॥

क्षणे—कभी-कभी; **स्थिर**—स्थिर; **हञा**—होकर; **रहे**—खड़े रहते थे; **टानिलेह**—खींचे जाने के बावजूद; **ना चले**—नहीं चलते थे; **ईश्वर-इच्छाय**—भगवान् की इच्छा से; **चले**—चलते थे; **ना चले**—नहीं चलते थे; **कारो**—किसी के भी; **बले**—बल से।

अनुवाद

कभी रथ स्थिर हो जाता और टस से मस न होता, भले ही इसे कितने ही जोर से क्यों न खींचा जाता। अतः यह रथ भगवान् की इच्छा से चल रहा था, किसी सामान्य व्यक्ति की शक्ति से नहीं।

तबे महाप्रभु सब लञा भक्त-गण ।
स्वहस्ते पराइल सबे माल्य-चन्दन ॥२९॥

तबे महाप्रभु सब लञा भक्त-गण ।
स्वहस्ते पराइल सबे माल्य-चन्दन ॥ २९ ॥

तबे—उस समय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सब**—सब; **लञा**—लेकर; **भक्त-गण**—भक्तगण; **स्व-हस्ते**—अपने हाथ से; **पराइल**—सजाया; **सबे**—प्रत्येक को; **माल्य-चन्दन**—पुष्प मालाओं से और चन्दन लेप से।

अनुवाद

जब रथ स्थिर हो गया, तो महाप्रभु ने अपने सारे भक्तों को एकत्र किया और उन्हें अपने हाथों से फूलों की माला तथा चन्दन से सजाया।

परमानन्द पूरी, आर भारती ब्रह्मानन्द ।
श्री-हस्ते चन्दन पाञा बाड़िल आनन्द ॥३०॥

परमानन्द पुरी, आर भारती ब्रह्मानन्द ।
श्री-हस्ते चन्दन पाञा बाड़िल आनन्द ॥ ३० ॥

परमानन्द पुरी—परमानन्द पुरी; **आर**—और; **भारती ब्रह्मानन्द**—ब्रह्मानन्द भारती; **श्री-हस्ते**—श्री चैतन्य महाप्रभु के हाथ से; **चन्दन**—चन्दन का लेप; **पाञा**—पाकर; **बाड़िल**—बढ़ गया; **आनन्द**—दिव्य आनन्द।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने हाथों से परमानन्द पुरी तथा ब्रह्मानन्द भारती को मालाएँ तथा चन्दन प्रदान किया। इससे उनका दिव्य आनन्द बढ़ गया।

अद्वैत-आचार्य, आर प्रभु-नित्यानन्द ।
श्री-हस्त-स्पर्शे दुँहार हइल आनन्द ॥ ३१ ॥

अद्वैत-आचार्य्र, आर प्रभु-नित्यानन्द ।
श्री-हस्त-स्पर्शे दुँहार हइल आनन्द ॥ ३१ ॥

अद्वैत-आचार्य्र—अद्वैत आचार्य; **आर**—और; **प्रभु-नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **श्री-हस्त-स्पर्शे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य हस्त के स्पर्श से; **दुँहार**—उन दोनों को; **हइल**—हो गया; **आनन्द**—दिव्य आनन्द।

अनुवाद

इसी तरह जब अद्वैत आचार्य तथा नित्यानन्द प्रभु को श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य हाथों का स्पर्श प्राप्त हुआ, तो वे दोनों अत्यन्त प्रसन्न हुए।

कीर्तनीया-गणे दिल माल्य-चन्दन ।
स्वरूप, श्रीवास,——याँहा मुख्य दुई-जन ॥ ३२ ॥

कीर्तनीया-गणे दिल माल्य-चन्दन ।
स्वरूप, श्रीवास,——याँहा मुख्य दुइ-जन ॥ ३२ ॥

कीर्तनीया-गणे—कीर्तन करने वालों को; **दिल**—दिया; **माल्य-चन्दन**—मालाएँ और चन्दन लेप; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **श्रीवास**—श्रीवास; **याँहा**—जहाँ; **मुख्य**—मुख्य; **दुइ-जन**—दोनों व्यक्ति।

अनुवाद

महाप्रभु ने संकीर्तन करने वालों को भी मालाएँ तथा चन्दन दिया। दो मुख्य कीर्तनिये थे—स्वरूप दामोदर तथा श्रीवास ठाकुर।

चारि सम्प्रदाये हैल चब्बिश गायन ।
दुई दुई मार्दङ्गिक हैल अष्ट जन ॥३३॥

चारि सम्प्रदाये हैल चब्बिश गायन ।
दुइ दुइ मार्दङ्गिक हैल अष्ट जन ॥ ३३॥

चारि सम्प्रदाये—चारों टोलियों में; **हैल**—हो गये; **चब्बिश**—चौबीस; **गायन**—कीर्तन करने वाले; **दुइ दुइ**—प्रत्येक टोली में दो व्यक्ति; **मार्दङ्गिक**—मृदंग बजाने वाले; **हैल**—थे; **अष्ट जन**—आठ व्यक्ति।

अनुवाद

कीतर्न करने वालों की कुल चार टोलियाँ थीं, जिनमें कुल चौबीस कीर्तनिये थे। प्रत्येक टोली में दो-दो मृदंगवादक थे, जिससे आठ अतिरिक्त व्यक्ति हो गये।

तबे महाप्रभु मने विचार करिया ।
चारि सम्प्रदाय दिल गायन बाँटिया ॥३४॥

तबे महाप्रभु मने विचार करिया ।
चारि सम्प्रदाय दिल गायन बाँटिया ॥ ३४॥

तबे—इसके बाद; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **मने**—मन में; **विचार करिया**—विचार करके; **चारि सम्प्रदाय**—चार टोलियाँ; **दिल**—बना दीं; **गायन बाँटिया**—गायकों को बाँटकर।

अनुवाद

जब चार टोलियाँ बन गईं, तो थोड़ा-सा विचार करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तनियों को बाँट दिया।

नित्यानन्द, अद्वैत, हरिदास, वक्रेश्वरे ।
चारि जने आज्ञा दिल नृत्य करिबारे ॥३५॥

नित्यानन्द, अद्वैत, हरिदास, वक्रेश्वरे ।
चारि जने आज्ञा दिल नृत्य करिबारे ॥ ३५ ॥

नित्यानन्द—नित्यानन्द प्रभु; **अद्वैत**—अद्वैत आचार्य; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर; **वक्रेश्वरे**—वक्रेश्वर पण्डित; **चारि जने**—इन चार व्यक्तियों को; **आज्ञा दिल**—महाप्रभु ने आज्ञा दी; **नृत्य करिबारे**—नृत्य करने के लिए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु, अद्वैत आचार्य, हरिदास ठाकुर तथा वक्रेश्वर पण्डित को आज्ञा दी कि वे चारों टोलियों में से प्रत्येक में जाकर नृत्य करें।

প্রথম সম্প্রদায়ে কৈল স্বরূপ—প্রধান ।
আর পঞ্চ-জন দিল তাঁর পালিগান ॥ ৩৬ ॥

প্রথম সম্প্রদায়ে কৈল স্বরূপ—প্রধান ।
আর পঞ্চ-জন দিল তাঁর পালিগান ॥ ৩৬ ॥

प्रथम सम्प्रदाये—पहली टोली में; **कैल**—बनाया; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर को; **प्रधान**—प्रधान; **आर**—और अन्य; **पञ्च-जन**—पाँच व्यक्ति; **दिल**—दिये; **ताँर**—उनके; **पालिगान**—कीर्तन का प्रत्युत्तर देने वाले सहायक।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर को पहली टोली का अगुवा चुना गया और उन्हें पाँच सहायक दिये गये, जो उनके कीर्तन को दुहरायें।

দামোদর, নারায়ণ, দত্ত গোবিন্দ ।
রাঘব পণ্ডিত, আর শ্রী-গোবিন্দানন্দ ॥ ৩৭ ॥

দামোদর, নারায়ণ, দত্ত গোবিন্দ ।
রাঘব পণ্ডিত, আর শ্রী-গোবিন্দানন্দ ॥ ৩৭ ॥

दामोदर—दामोदर पण्डित; **नारायण**—नारायण; **दत्त गोविन्द**—गोविन्द दत्त; **राघव पण्डित**—राघव पण्डित; **आर**—और; **श्री-गोविन्दानन्द**—श्री गोविन्दानन्द।

अनुवाद

जो पाँच जन स्वरूप दामोदर के गाने को दुहराते थे, वे थे दामोदर पण्डित, नारायण, गोविन्द दत्त, राघव पण्डित तथा श्री गोविन्दानन्द।

অদ্বৈতেরে নৃত্য করিবারে আজ্ঞা দিল ।
শ্রীবাস—প্রধান আর সম্প্রদায় কৈল ॥ ৩৮॥

অদ্বৈতেরে নৃত্য করিবারে আজ্ঞা দিল ।
শ্রীবাস—প্রধান আর সম্প্রদায় কৈল ॥ ৩৮॥

अद्वैतेरे—अद्वैत आचार्य को; **नृत्य**—नृत्य; **करिबारे**—करने के लिए; **आज्ञा**—आज्ञा; **दिल**—दी; **श्रीवास**—श्रीवास ठाकुर; **प्रधान**—प्रधान; **आर**—और दूसरा एक; **सम्प्रदाय**—दल; **कैल**—बनाया।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य प्रभु को पहली टोली में नृत्य करने के लिए आदेश मिला। तब महाप्रभु ने एक अन्य टोली बनाई, जिसके प्रधान व्यक्ति हुए श्रीवास ठाकुर।

तात्पर्य

प्रथम टोली के मुख्य गायक बनाये गये दामोदर स्वरूप और इस टोली के दुहराने वाले गायक थे दामोदर पण्डित, नारायण, गोविन्द दत्त, राघव पण्डित तथा गोविन्दानन्द। श्री अद्वैत आचार्य को नर्तक नियुक्त किये गये। फिर अगली टोली बनी और श्रीवास ठाकुर को प्रमुख गायक बनाये गये।

গঙ্গাদাস, হরিদাস, শ্রীমান্, শুভানন্দ ।
শ্রী-রাম পণ্ডিত, তাহাঁ নাচে নিত্যানন্দ ॥ ৩৯॥

গঙ্গাদাস, হরিদাস, শ্রীমান্, শুভানন্দ ।
শ্রী-রাম পণ্ডিত, তাহাঁ নাচে নিত্যানন্দ ॥ ৩৯॥

गङ्गादास—गंगादास; **हरिदास**—हरिदास; **श्रीमान्**—श्रीमान्; **शुभानन्द**—शुभानन्द; **श्री-राम पण्डित**—श्रीराम पण्डित; **ताहाँ**—वहाँ; **नाचे**—नाचे; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर के गाने को दोहराने वाले पाँच गायक थे—गंगादास,

हरिदास, श्रीमान्, शुभानन्द तथा श्रीराम पण्डित। श्री नित्यानन्द प्रभु को नर्तक नियुक्त किये गये।

বাসুদেব, গোপীনাথ, মুরারি যাহাঁ গায় ।
মুকুন্দ—প্রধান কৈল আর সম্প্রদায় ॥ ৪০ ॥

वासुदेव, गोपीनाथ, मुरारि ग्राहाँ गाय ।
मुकुन्द—प्रधान कैल आर सम्प्रदाय ॥ ४० ॥

वासुदेव—वासुदेव; **गोपीनाथ**—गोपीनाथ; **मुरारि**—मुरारि; **ग्राहाँ**—जहाँ; **गाय**—गाये; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **प्रधान**—प्रधान; **कैल**—बनाया; **आर**—एक अन्य; **सम्प्रदाय**—दल।

अनुवाद

एक अन्य टोली भी बना ली गई जिसमें वासुदेव, गोपीनाथ तथा मुरारि थे। ये सब दुहराने वाले गायक थे और मुकुन्द प्रधान गायक थे।

শ্রীকান্ত, বল্লভ-সেন আর দুই জন ।
হরিদাস-ঠাকুর তাহাঁ করেন নর্তন ॥ ৪১ ॥

श्रीकान्त, वल्लभ-सेन आर दुइ जन ।
हरिदास-ठाकुर ताहाँ करेन नर्तन ॥ ४१ ॥

श्रीकान्त, वल्लभ-सेन—श्रीकान्त एवं वल्लभ सेन; **आर**—अन्य; **दुइ जन**—दो व्यक्ति; **हरिदास-ठाकुर**—हरिदास ठाकुर ने; **ताहाँ**—वहाँ; **करेन**—किया; **नर्तन**—नृत्य।

अनुवाद

श्रीकान्त तथा वल्लभसेन नामक दो अन्य व्यक्ति दुहराने वाले गवैयों के साथ हो लिए। इस टोली के नर्तक थे ज्येष्ठ हरिदास (हरिदास ठाकुर)।

तात्पर्य

तीसरी टोली के प्रमुख गवैये मुकुन्द थे। इस टोली में वासुदेव, गोपीनाथ, मुरारि, श्रीकान्त तथा वल्लभसेन थे। बड़े हरिदास (हरिदास ठाकुर) नर्तक थे।

গোবিন্দ-ঘোষ—প্রধান কৈল আর সম্প্রদায় ।
হরিদাস, বিষ্ণুদাস, রাঘব, যাহাঁ গায় ॥ ৪২ ॥

गोविन्द-घोष—प्रधान कैल आर सम्प्रदाय ।
हरिदास, विष्णुदास, राघव, ग्राहाँ गाय ॥ ४२ ॥

गोविन्द-घोष—गोविन्द घोष को; **प्रधान**—प्रधान; **कैल**—बनाया; **आर**—और अन्य; **सम्प्रदाय**—दल; **हरिदास**—छोटा हरिदास; **विष्णुदास**—विष्णुदास; **राघव**—राघव; **ग्राहाँ**—जहाँ; **गाय**—गाते थे।

अनुवाद

महाप्रभु ने एक अन्य टोली बनाई, जिसके अगुवा गोविन्द धोष नियुक्त किये गये। इस टोली में छोटा हरिदास, विष्णुदास तथा राघव दुहराने वाले गवैये थे।

माधव, वासुदेव-घोष,—दुई सहोदर ।
नृत्य करेन ताहाँ पण्डित-वक्रेश्वर ॥ ४३ ॥

माधव, वासुदेव-घोष,—दुइ सहोदर ।
नृत्य करेन ताहाँ पण्डित-वक्रेश्वर ॥ ४३ ॥

माधव—माधव; **वासुदेव-घोष**—वासुदेव घोष; **दुइ सहोदर**—दोनों भाइयों ने; **नृत्य करेन**—नृत्य किया; **ताहाँ**—वहाँ; **पण्डित-वक्रेश्वर**—वक्रेश्वर पण्डित।

अनुवाद

माधव घोष तथा वासुदेव घोष नामक दोनों भाई भी इस टोली में दुहराने वालों में सम्मिलित हो गये। वक्रेश्वर पण्डित इसके नर्तक थे।

कुलीन-ग्रामेर एक कीर्तनीया-समाज ।
ताहाँ नृत्य करेन रामानन्द, सत्यराज ॥ ४४ ॥

कुलीन-ग्रामेर एक कीर्तनीया-समाज ।
ताहाँ नृत्य करेन रामानन्द, सत्यराज ॥ ४४ ॥

कुलीन-ग्रामेर—कुलीन-ग्राम नामक गाँव के; **एक**—एक; **कीर्तनीया-समाज**—संकीर्तन दल; **ताहाँ**—वहाँ; **नृत्य करेन**—नृत्य करते थे; **रामानन्द**—रामानन्द; **सत्यराज**—सत्यराज खान।

अनुवाद

कुलीन-ग्राम नामक गाँव की एक कीर्तनियों की टोली थी, जिसमें रामानन्द तथा सत्यराज नर्तक के रूप में नियुक्त किये गये।

শান্তিপুরের আচার্যের এক সম্প্রদায় ।
অচ্যুতানন্দ নাচে তথা, আর সব গায় ॥ ৪৫ ॥

शान्तिपुरेर आचार्य्येर एक सम्प्रदाय ।
अच्युतानन्द नाचे तथा, आर सब गाय ॥ ४५ ॥

शान्तिपुरेर—शान्तिपुर के; **आचार्य्येर**—अद्वैत आचार्य का; **एक**—एक; **सम्प्रदाय**—दल; **अच्युतानन्द**—अद्वैत आचार्य के पुत्र अच्युतानन्द; **नाचे**—नृत्य कर रहे थे; **तथा**—वहाँ; **आर**—बाकी; **सब**—सब; **गाय**—गा रहे थे।

अनुवाद

शान्तिपुर की भी एक टोली थी, जिसे अद्वैत आचार्य ने बनाइ थी। अच्युतानन्द इसके नर्तक थे और शेष लोग गवैये थे।

খণ্ডের সম্প্রদায় করে অন্যত্র কীর্তন ।
নরহরি নাচে তাঁহা শ্রী-রঘুনন্দন ॥ ৪৬ ॥

खण्डेर सम्प्रदाय करे अन्यत्र कीर्तन ।
नरहरि नाचे ताहाँ श्री-रघुनन्दन ॥ ४६ ॥

खण्डेर—खण्ड नामक स्थान के; **सम्प्रदाय**—दल ने; **करे**—किया; **अन्यत्र**—एक दूसरे स्थान पर; **कीर्तन**—कीर्तन; **नरहरि**—नरहरि; **नाचे**—नृत्य कर रहे थे; **ताहाँ**—वहाँ; **श्री-रघुनन्दन**—श्री रघुनन्दन।

अनुवाद

खण्ड के लोगों ने एक अन्य टोली बनाई थी। ये लोग एक भिन्न स्थान पर गा रहे थे। इस दल में नरहरि प्रभु तथा रघुनन्दन नाच रहे थे।

জগন্নাথের আগে চারি সম্প্রদায় গায় ।
দুই পাশে দুই, পাছে এক সম্প্রদায় ॥ ৪৭ ॥

जगन्नाथेर आगे चारि सम्प्रदाय गाय ।
दुइ पाशे दुइ, पाछे एक सम्प्रदाय ॥ ४७ ॥

जगन्नाथेर आगे—भगवान् जगन्नाथ के विग्रह के समक्ष; **चारि सम्प्रदाय गाय**—चारों दल कीर्तन कर रहे थे; **दुइ पाशे**—दोनों ओर; **दुइ**—अन्य दो दल; **पाछे**—पिछली ओर; **एक सम्प्रदाय**—एक दूसरा दल।

अनुवाद

चार टोलियाँ भगवान् जगन्नाथ के सामने कीर्तन कर रही थीं और नाच रही थीं। उनके दोनों ओर दो अन्य टोलियाँ थीं। पीछे भी एक टोली थी।

সাত সম্প্রদায়ে বাজে চৌদ্দ মাদল ।
যার ধ্বনি শুনি' বৈষ্ণব হৈল পাগল ॥ ৪৮ ॥

সাত সম্প্রদায়ে বাজে চৌদ্দ মাদল ।
যার ধ্বনি শুনি' বৈষ্ণব হৈল পাগল ॥ ৪৮ ॥

সাত সম্প্রদায়ে—সাত দলों में; **বাজে**—बजा रहे थे; **চৌদ্দ**—चौदह; **মাদল**—नगाड़े; **যার**—जिनकी; **ধ্বনি**—ध्वनि; **শুনি'**—सुनकर; **বৈষ্ণব**—सारे भक्त; **হৈল**—हो गये; **পাগল**—पागल।

अनुवाद

कुल मिलाकर सात संकीर्तन टोलियाँ थीं और प्रत्येक टोली में दो व्यक्ति ढोल नगाड़े बजा रहे थे। इस प्रकार एकसाथ चौदह ढोल बज रहे थे। इनकी ध्वनि इतनी कोलाहलपूर्ण थी कि सारे भक्त पागल हो गये।

বৈষ্ণবের মেঘ-ঘটায় হইল বাদল ।
কীর্তনানন্দে সব বর্ষে নেত্র-জল ॥ ৪৯ ॥

বৈষ্ণবের মেঘ-ঘটায় হইল বাদল ।
কীর্তনানন্দে সব বর্ষে নেত্র-জল ॥ ৪৯ ॥

বৈষ্ণবের—भक्तों का; **মেঘ-ঘটায়**—मेघों के संगठन से; **হইল**—हो गई; **বাদল**—वर्षा; **কীর্তন-আনন্দে**—कीर्तन की दिव्य स्थिति में; **সব**—वे सब; **বর্ষে**—वर्षा; **নেত্র-জল**—नेत्रों से जल की।

अनुवाद

सारे वैष्णव बादलों के समूह की तरह एकसाथ आये। जब भक्तों ने अत्यन्त भावपूर्वक नाम-कीर्तन किया, तो उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे मानों आँखों से वर्षा हो रही हो।

ত্রি-ভুবন ভরি' উঠে কীর্তনের ধ্বনি ।
অন্য বাদ্যাদির ধ্বনি কিছুই না শুনি ॥৫০॥

त्रि-भुवन भरि' उठे कीर्तनेर ध्वनि ।
अन्य वाद्यादिर ध्वनि किछुइ ना शुनि ॥५०॥

त्रि-भुवन भरि'—तीनों लोकों को भरकर; **उठे**—उठी; **कीर्तनेर ध्वनि**—संकीर्तन की ध्वनि; **अन्य**—अन्य; **वाद्य-आदिर**—वाद्य-यंत्रो की; **ध्वनि**—ध्वनि; **किछुइ**—कुछ और; **ना**—नहीं; **शुनि**—सुन सके।

अनुवाद

जब संकीर्तन की प्रतिध्वनि हुई, तो उससे तीनों लोक भर गये। तब किसी को संकीर्तन के अतिरिक्त किसी बाजे की ध्वनि या अन्य ध्वनि नहीं सुनाई देती थी।

সাত ঠাঞি বুলে প্রভু 'হরি' 'হরি' বলি' ।
'জয় জগন্নাথ', বলেন হস্ত-যুগ তুলি' ॥৫১॥

सात ठाञि बुले प्रभु 'हरि' 'हरि' बलि' ।
'जय जगन्नाथ', बलेन हस्त-युग तुलि' ॥५१॥

सात ठाञि—सात दलों में; **बुले**—घूमते थे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हरि हरि बलि'**—"हरि हरि" के पावन नाम का उच्चारण करते हुए; **जय जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ की जय हो; **बलेन**—बोलने लगे; **हस्त-युग**—अपने दोनों हाथ; **तुलि'**—उठाकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु "हरि!, हरि!" उच्चारण करते हुए सातों दलों में विचरण कर रहे थे। वे अपने दोनों हाथ उठाकर जोर से बोले "जय जगन्नाथ!"

আর এক শক্তি প্রভু করিল প্রকাশ ।
এক-কালে সাত ঠাঞি করিল বিলাস ॥৫২॥

आर एक शक्ति प्रभु करिल प्रकाश ।
एक-काले सात ठाञि करिल विलास ॥५२॥

आर—अन्य; **एक**—एक; **शक्ति**—शक्ति; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करिल**—की; **प्रकाश**—प्रकट; **एक-काले**—एक साथ; **सात ठाञि**—सात स्थानों में; **करिल**—की; **विलास**—लीलाएँ।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने एक ही साथ सभी सातों टोलियों में लीलाएँ सम्पन्न करके अपनी अन्य योगशक्ति का परिचय दिया।

सबे कहे,—प्रभु आछेन मोर सम्प्रदाय ।
अन्य ठाञि नाहि या'न आमारे दयाय ॥५३॥

सबे कहे,—प्रभु आछेन मोर सम्प्रदाय ।
अन्य ठाञि नाहि या'न आमारे दयाय ॥५३॥

सबे कहे—सबने कहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आछेन**—विद्यमान हैं; **मोर सम्प्रदाय**—मेरे दल में; **अन्य ठाञि**—दूसरे स्थानों में; **नाहि**—नहीं; **या'न**—जाते; **आमारे**—मुझ पर; **दयाय**—कृपा करते हैं।

अनुवाद

हर एक ने कहा, "श्री चैतन्य महाप्रभु मेरी टोली में उपस्थित हैं। वे अन्यत्र कहीं नहीं जाते। वे हम सब पर कृपा की वृष्टि कर रहे हैं।"

केह लखिते नारे प्रभुर अचिन्त्य-शक्ति ।
अन्तरङ्ग-भक्त जाने, याँर शुद्ध-भक्ति ॥५४॥

केह लखिते नारे प्रभुर अचिन्त्य-शक्ति ।
अन्तरङ्ग-भक्त जाने, याँर शुद्ध-भक्ति ॥५४॥

केह—कोई भी; **लखिते**—देख; **नारे**—नहीं सका; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **अचिन्त्य**—अकल्पनीय; **शक्ति**—शक्ति; **अन्तरङ्ग**—आन्तरिक; **भक्त**—भक्त; **जाने**—जानता है; **याँर**—जिसकी; **शुद्ध-भक्ति**—शुद्ध भक्ति।

अनुवाद

वास्तव में कोई भी महाप्रभु की अचिन्त्य शक्ति को देख नहीं सका। केवल सर्वाधिक अन्तरंग भक्त ही, जो शुद्ध अनन्य भक्ति में स्थित थे, समझ सके।

কীর্তন দেখিয়া জগন্নাথ হরষিত ।
সঙ্কীর্তন দেখে রথ করিয়া স্থগিত ॥৫৫॥

कीर्तन देखिया जगन्नाथ हरषित ।
सङ्कीर्तन देखे रथ करिया स्थगित ॥५५॥

कीर्तन देखिया—संकीर्तन देखकर; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **हरषित**—अत्यन्त प्रसन्न हुए; **सङ्कीर्तन**—संकीर्तन; **देखे**—देखा; **रथ**—रथ; **करिया स्थगित**—किया खड़ा।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ संकीर्तन से अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने कीर्तन देखने के लिए ही अपने रथ को खड़ा कर दिया।

প্রতাপরুদ্রের হৈল পরম বিস্ময় ।
দেখিতে বিবশ রাজা হৈল প্রেমময় ॥৫৬॥

प्रतापरुद्रेर हैल परम विस्मय ।
देखिते विवश राजा हैल प्रेममय ॥५६॥

प्रतापरुद्रेर—राजा प्रतापरुद्र को; **हैल**—हुआ; **परम**—अत्यन्त; **विस्मय**—विस्मय; **देखिते**—देखकर; **विवश**—निष्क्रिय; **राजा**—राजा; **हैल**—हो गये; **प्रेम-मय**—प्रेमाविष्ट।

अनुवाद

राजा प्रतापरुद्र भी संकीर्तन देखकर विस्मित हो गये। वे निष्क्रिय हो गये और कृष्ण के भावप्रेम में रूपान्तरित हो गये।

কাশী-মিশ্রে কহে রাজা প্রভুর মহিমা ।
কাশী-মিশ্র কহে,—তোমার ভাগ্যের নাহি সীমা ॥৫৭॥

काशी-मिश्रे कहे राजा प्रभुर महिमा ।
काशी-मिश्र कहे,—तोमार भाग्येर नाहि सीमा ॥५७॥

काशी-मिश्रे—काशी मिश्र को; **कहे**—कहा; **राजा**—राजा ने; **प्रभुर महिमा**—श्री चैतन्य महाप्रभु की महिमाएँ; **काशी-मिश्र कहे**—काशी मिश्र ने कहा; **तोमार**—आपके; **भाग्येर**—भाग्य की; **नाहि**—नहीं है; **सीमा**—कोई सीमा।

अनुवाद

जब राजा ने काशी मिश्र से महाप्रभु की महिमा के विषय में

बतलाया, तो काशीमिश्र ने उत्तर दिया, "हे राजा, आपके भाग्य की सीमा नहीं है!"

সার্বভৌম-সঙ্গে রাজা করে ঠারাঠারি ।
আর কেহ নাহি জানে চৈতন্যের চুরি ॥৫৮॥

সার্বভৌম-সঙ্গে রাজা করে ঠারাঠারি ।
আর কেহ নাহি জানে চৈতন্যের চুরি ॥৫৮॥

सार्वभौम-सङ्गे—सार्वभौम भट्टाचार्य के साथ; **राजा**—राजा ने; **करे**—किया; **ठाराठारि**—संकेत; **आर**—और; **केह**—कोई; **नाहि**—नहीं; **जाने**—जान सका; **चैतन्येर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **चुरि**—चाल।

अनुवाद

राजा तथा सार्वभौम भट्टाचार्य दोनों ही महाप्रभु की लीला से अवगत थे, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु की युक्तियों को अन्य कोई नहीं देख सकता था।

যারে তাঁর কৃপা, সেই জানিবারে পারে ।
কৃপা বিনা ব্রহ্মাদিক জানিবারে নারে ॥৫৯॥

যারে তাঁর কৃপা, সেই জানিবারে পারে ।
কৃপা বিনা ব্রহ্মাদিক জানিবারে নারে ॥৫৯॥

য়ারে—जिस पर; **ताँर**—उनकी; **कृपा**—कृपा; **सेइ**—वही व्यक्ति; **जानिबारे**—जान; **पारे**—सकता है; **कृपा**—कृपा; **विना**—के बिना; **ब्रह्म-आदिक**—ब्रह्मा आदि देवताओं के लिए; **जानिबारे**—जानना; **नारे**—सम्भव नहीं।

अनुवाद

उन्हें केवल वही समझ सकता है, जिसे महाप्रभु की कृपा प्राप्त हो चुकी हो। महाप्रभु की कृपा के बिना ब्रह्मादिक देवतागण तक नहीं समझ सकते।

রাজার তুচ্ছ সেবা দেখি' প্রভুর তুষ্ট মন ।
সেই ত' প্রসাদে পাইল 'রহস্য-দর্শন' ॥৬০॥

राजार तुच्छ सेवा देखि' प्रभुर तुष्ट मन ।
सेइ त' प्रसादे पाइल 'रहस्य-दर्शन' ॥ ६० ॥

राजार—राजा की; **तुच्छ**—तुच्छ; **सेवा**—सेवा; **देखि'**—देखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **तुष्ट**—सन्तुष्ट; **मन**—मन; **सेइ**—उसने; **त'**—निस्सन्देह; **प्रसादे**—कृपा से; **पाइल**—पाया; **रहस्य-दर्शन**—लीलाओं के रहस्य को देखा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु राजा को मार्ग की सफाई जैसा तुच्छ कार्य करते देखकर अत्यन्त प्रसन्न थे। राजा ने इसी दीनता के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा प्राप्त की। अतएव वे श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यों के रहस्य को देख सकते थे।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने महाप्रभु के कार्यों के रहस्य का वर्णन किया है। भगवान् जगन्नाथ श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य नृत्य तथा कीर्तन को देखकर चकित थे और उन्होंने नृत्य देखने के लिए ही अपना रथ रोक दिया। श्री चैतन्य महाप्रभु तब ऐसे रहस्यमय ढंग से नाचे कि उन्होंने भगवान् जगन्नाथ को प्रसन्न कर दिया। देखने वाला तथा नाचने वाला व्यक्ति एक ही परम पुरुष थे, किन्तु भगवान् एक ही समय एक और अनेक होकर अपनी लीलाओं की विविधता दिखला रहे थे। उनके रहस्यमय प्रदर्शन के पीछे यही अर्थ है। श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से राजा यह समझ सके कि वे दोनों किस तरह एक-दूसरे की लीलाओं का आनन्द ले रहे थे। दूसरा रहस्यमय प्रदर्शन यह था कि महाप्रभु एक ही साथ सातों दलों में उपस्थित थे। श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से राजा इसे भी समझ सके।

সাক্ষাতে না দেয় দেখা, পরোক্ষে ত' দয়া ।
কে বুঝিতে পারে চৈতন্য-চন্দ্রের মায়া ॥ ৬১ ॥

সাক্ষাতে না দেয় দেখা, পরোক্ষে ত' দয়া ।
কে বুঝিতে পারে চৈতন্য-চন্দ্রের মায়া ॥ ৬১ ॥

সাক্ষাতে—साक्षात्; **না**—नहीं; **দেয়**—दिया; **দেখা**—भेंट; **পরোক্ষে**—अप्रत्यक्ष रूप से;

त'—निस्सन्देह; **दया**—कृपा की; **के**—कौन; **बुझिते**—समझ; **पारे**—सकता है; **चैतन्य-चन्द्रेर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **माया**—अन्तरंगा शक्ति।

अनुवाद

यद्यपि राजा को मिलने से मना कर दिया गया था, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उन पर अहैतुकी कृपा प्रदान की गई थी। भला श्री चैतन्य महाप्रभु की अन्तरंगा शक्ति को कौन समझ सकता है?

तात्पर्य

चूँकि महाप्रभु जगद्-गुरु की भूमिका अदा कर रहे थे, अतएव उन्होंने राजा से भेंट करना स्वीकार नहीं किया, क्योंकि राजा संसारी व्यक्ति होता है, जो कामिनी तथा कंचन में रुचि रखता है। निस्सन्देह, राजा शब्द मात्र उस व्यक्ति का निर्देश करता है, जो सदा कंचन तथा कामिनी से घिरा रहता है। संन्यासी के रूप में श्री चैतन्य महाप्रभु कामिनी तथा कंचन दोनों से डरते थे। राजा शब्द ही संन्यासी के लिए घृणित है। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने राजा से मिलने से इनकार कर दिया था, किन्तु महाप्रभु की अहैतुकी कृपा से राजा को अप्रत्यक्ष रीति से महाप्रभु के रहस्यमय कार्यों का पता चल चुका था। श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यों से कभी-कभी ऐसा प्रदर्शित होता था कि वे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं और कभी-कभी लगता था कि वे भक्त हैं। केवल शुद्ध भक्त ही ऐसे दोनो प्रकार के रहस्यमय कार्यों की प्रशंसा कर सकते हैं।

सार्वभौम, काशी-मिश्र,—दुइ महाशय ।
राजारे प्रसाद देखि' हइला विस्मय ॥ ६२॥

सार्वभौम, काशी-मिश्र,—दुइ महाशय ।
राजारे प्रसाद देखि' हइला विस्मय ॥ ६२॥

सार्वभौम—सार्वभौम भट्टाचार्य; **काशी-मिश्र**—काशी मिश्र; **दुइ महाशय**—दोनों महाशय; **राजारे**—राजा पर; **प्रसाद**—कृपा; **देखि'**—देखकर; **हइला**—हो गये; **विस्मय**—विस्मित।

अनुवाद

जब सार्वभौम भट्टाचार्य तथा काशी मिश्र महोदयों ने राजा के ऊपर महाप्रभु की अहैतुकी कृपा देखी, तो वे चकित रह गये।

এই-মত লীলা প্রভু কৈল কত-ক্ষণ ।
আপনে গায়েন, নাচা'ন নিজ-ভক্ত-গণ ॥ ৬৩ ॥

এइ-মত লীলা প্রভু কৈল কত-ক্ষণ ।
আপনে গায়েন, নাচা'ন নিজ-ভক্ত-গণ ॥ ৬३ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **লীলা**—लीलाएँ; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **কৈল**—कीं; **কত-ক্ষণ**—कुछ समय के लिए; **আপনে গায়েন**—स्वयं गाकर; **নাচা'ন**—नचवाया; **নিজ-ভক্ত-গণ**—अपने निजी भक्तों को।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कुछ समय तक अपनी लीलाएँ इसी प्रकार से कीं। वे स्वयं गा रहे थे और उन्होंने अपने संगियों को नाचने के लिए प्रेरित किया।

কভু এক মূর্তি, কভু হন বহু-মূর্তি ।
কার্য-অনুরূপ প্রভু প্রকাশয়ে শক্তি ॥ ৬৪ ॥

কভু এক মূর্তি, কভু হন বহু-মূর্তি ।
কার্য্য-অনুরূপ প্রভু প্রকাশয়ে শক্তি ॥ ६४ ॥

কভু—कभी; **এক মূর্তি**—एक रूप; **কভু**—कभी; **হন**—हो जाते हैं; **বহু-মূর্তি**—बहु-मूर्ति; **কার্য্য-অনুরূপ**—कार्य के अनुसार; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **প্রকাশয়ে**—दिखाते हैं; **শক্তি**—अपनी अन्तरंगा शक्ति।

अनुवाद

महाप्रभु अपनी आवश्यकता के अनुसार कभी एक रूप प्रदर्शित करते, तो कभी अनेक। ऐसा उनकी अन्तरंगा शक्ति द्वारा सम्पन्न हो रहा था।

লীলাবেশে প্রভুর নাহি নিজানুসন্ধান ।
ইচ্ছা জানি 'লীলা শক্তি' করে সমাধান ॥ ৬৫ ॥

লীলাবেশে প্রভুর নাহি নিজানুসন্ধান ।
ইচ্ছা জানি 'লীলা শক্তি' করে সমাধান ॥ ६५ ॥

लीला-आवेशे—दिव्य लीलाओं के आवेश में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **नाहि**—नहीं था; **निज-अनुसन्धान**—अपने बारे में स्मृति; **इच्छा जानि**—उनकी इच्छा जानकर; **लीला शक्ति**—लीला शक्ति; **करे**—की; **समाधान**—सभी व्यवस्था।

अनुवाद

महाप्रभु अपनी दिव्य लीलाओं के दौरान अपने आपको भूल गये, किन्तु उनकी अन्तरंगा शक्ति (लीला शक्ति) ने उनके मनोभावों को जानते हुए सारी व्यवस्था कर दी।

तात्पर्य

श्वेताश्वतर उपनिषद (६.८) में कहा गया है :

परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च।

"भगवान् की अनेक शक्तियाँ हैं, जो इतनी सुन्दरता से कार्य करती हैं कि सारी चेतना, बल तथा कार्य भगवान् की इच्छा से ही निर्देशित होते हैं।"

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी योगशक्ति का प्रदर्शन एक ही समय प्रत्येक संकीर्तन टोली में उपस्थित रहकर किया। अधिकांश लोगों ने सोचा कि वे एक जगह पर ही थे, किन्तु कुछ लोगों ने देखा कि वे अनेक थे। अन्तरंग भक्त जान गये कि महाप्रभु एक होकर भी अपने आपको संकीर्तन टोलियों में अनेक रूपों में प्रदर्शित कर रहे हैं। जब श्री चैतन्य महाप्रभु नाचने लगे, तो वे अपने आपको भूल गये और भाव-आनन्द में निमग्न हो गये। किन्तु उनकी अन्तरंगा शक्ति ने सारी व्यवस्था ठीक-ठीक कर दी। अन्तरंगा शक्ति और बहिरंगा शक्ति में यही भेद है। भौतिक जगत् में काफी प्रयत्न करने के बाद ही बहिरंगा (भौतिक) शक्ति कार्य करती है, किन्तु भगवान् जब भी चाहते हैं, तो अन्तरंगा शक्ति द्वारा हर कार्य स्वत: सम्पन्न हो जाता है। उनकी इच्छा से सारे कार्य इतने सुचारु रूप से सम्पन्न हो जाते हैं कि ऐसा लगता है मानो स्वत: सम्पन्न हुए हों। कभी-कभी अन्तरंगा शक्तियों के कार्यकलाप भौतिक जगत् में भी प्रकट होते हैं। वास्तव में, भौतिक प्रकृति के छात्र एवं प्राय: समस्त कार्य भगवान् की अचिन्त्य शक्ति द्वारा ही सम्पन्न होते हैं, किन्तु भौतिक प्रकृति के तथाकथित विज्ञानी तथा छात्र अन्तत: यह समझ नहीं पाते कि सारी बातें किस तरह घटित

हो रही हैं। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह सब कुछ प्रकृति द्वारा हो रहा है, किन्तु वे यह नहीं जानते कि प्रकृति के पीछे शक्तिशाली पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का हाथ है। इसकी व्याख्या *भगवद्गीता* (९.१०) में भगवान् कृष्ण द्वारा प्राप्त होती है :

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते॥

"हे कुन्ती-पुत्र, यह भौतिक प्रकृति जो मेरी शक्तियों में से एक है, मेरी अध्यक्षता में कार्य करती है और यह समस्त चर तथा अचर प्राणियों को उत्पन्न करती है। इसके शासन में इस जगत् की बारम्बार सृष्टि और संहार होता रहता है।"

পূর্বে যৈছে রাসাদি লীলা কৈল বৃন্দাবনে ।
অলৌকিক লীলা গৌর কৈল ক্ষণে ক্ষণে ॥ ৬৬॥

পূর্বে যৈছে রাসাদি লীলা কৈল বৃন্দাবনে ।
অলৌকিক লীলা গৌর কৈল ক্ষণে ক্ষণে ॥ ৬৬॥

पूर्वे—पहले; **यैछे**—जैसे; **रास-आदि लीला**—रास आदि लीलाएँ; **कैल**—की; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **अलौकिक**—दिव्य ; **लीला**—लीलाएँ; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **कैल**—की; **क्षणे क्षणे**—प्रतिक्षण।

अनुवाद

जिस तरह पूर्वकाल में श्रीकृष्ण ने वृन्दावन में रासलीला तथा अन्य लीलाएँ की थीं, उसी तरह श्री चैतन्य महाप्रभु प्रतिक्षण अलौकिक लीलाएँ कर रहे थे।

ভক্ত-গণ অনুভবে, নাহি জানে আন ।
শ্রী-ভাগবত-শাস্ত্র তাহাতে প্রমাণ ॥ ৬৭॥

ভক্ত-গণ অনুভবে, নাহি জানে আন ।
শ্রী-ভাগবত-শাস্ত্র তাহাতে প্রমাণ ॥ ৬৭॥

भक्त-गण—सभी भक्त; **अनुभवे**—अनुभव कर सके; **नाहि जाने**—नहीं जानते;

आन—अन्य लोग; **श्री-भागवत-शास्त्र**—*श्रीमद्भागवत* शास्त्र; **ताहाते**—उस सम्बन्ध में; **प्रमाण**—प्रमाण।

अनुवाद

केवल शुद्ध भक्तगण ही महाप्रभु को रथयात्रा के रथ के समक्ष नृत्य करने की अनुभूति कर सकते थे। अन्य लोग इसे नहीं समझ सके। भगवान् श्रीकृष्ण के विलक्षण नृत्य का वर्णन श्रीमद्भागवत में मिलता है।

तात्पर्य

भगवान् कृष्ण ने रासलीला के समय अनेक रूपों में विस्तार कर लिया था और द्वारका में सोलह हजार पत्नियों से शादी करते समय भी उन्होंने अपना विस्तार कर लिया था। श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी सात संकीर्तन दलों में एक ही साथ नृत्य करते समय वही विधि अपनाई। राजा प्रतापरुद्र समेत शुद्ध भक्तों ने इन विस्तारों की अनुभूति की। यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु ने बाह्य औपचारिकतावश राजा प्रतापरुद्र से मिलने से इनकार कर दिया था, क्योंकि वे राजा थे, किन्तु महाप्रभु की विशेष कृपा से राजा प्रतापरुद्र महाप्रभु के सर्वाधिक अन्तरंग भक्तों में से एक बन गये। राजा प्रतापरुद्र श्री चैतन्य महाप्रभु को एक साथ सातों दलों में उपस्थित देख सके। *श्रीमद्भागवत* में पुष्टि की गई है कि जब तक कोई व्यक्ति भगवान् का शुद्ध भक्त नहीं होता, तब तक वह भगवान् के दिव्य रूपों के विस्तारों को नहीं देख सकता।

एइ-मत महाप्रभु करे नृत्य-रङ्गे ।
भासाइल सब लोक प्रेमेर तरङ्गे ॥ ६८॥

एइ-मत महाप्रभु करे नृत्य-रङ्गे ।
भासाइल सब लोक प्रेमेर तरङ्गे ॥ ६८ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करे**—किया; **नृत्य-रङ्गे**—आनन्दपूर्वक नृत्य; **भासाइल**—डूब गये; **सब**—सब; **लोक**—लोग; **प्रेमेर तरङ्गे**—प्रेम की तरंगों में।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने परम प्रसन्न होकर नृत्य किया और प्रेम की तरंगों से सारे लोगों को आप्लावित कर दिया।

एइ-मत हैल कृष्णेर रथे आरोहण ।
तार आगे प्रभु नाचाइल भक्त-गण ॥ ६९॥

एइ-मत हैल कृष्णेर रथे आरोहण ।
तार आगे प्रभु नाचाइल भक्त-गण ॥ ६९ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **हैल**—हुआ; **कृष्णेर**—भगवान् श्रीकृष्ण का; **रथे**—रथ पर; **आरोहण**—आरूढ़; **तार आगे**—उनके समक्ष; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **नाचाइल**—नचाया; **भक्त-गण**—सभी भक्तों को।

अनुवाद

इस तरह भगवान् अपने जगन्नाथ रथ पर आरूढ़ हुए और श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने सारे भक्तों को रथ के समक्ष नाचने के लिए प्रोत्साहित किया।

आगे शुन जगन्नाथेर गुण्डिचा-गमन ।
तार आगे प्रभु यैछे करिला नर्तन ॥ ७०॥

आगे शुन जगन्नाथेर गुण्डिचा-गमन ।
तार आगे प्रभु ग्रैछे करिला नर्तन ॥ ७० ॥

आगे—आगे; **शुन**—सुनो; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ का; **गुण्डिचा-गमन**—गुण्डीचा मन्दिर को जाना; **तार आगे**—उनके समक्ष; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ग्रैछे**—जैसे ; **करिला**—किया; **नर्तन**—नृत्य।

अनुवाद

आप कृपा करके वह वृतान्त सुनिये, जिस समय भगवान् जगन्नाथ गुण्डिचा मन्दिर जा रहे थे और महाप्रभु रथ के समक्ष नृत्य कर रहे थे।

एइ-मत कीर्तन प्रभु करिल कत-क्षण ।
आपन-उद्योगे नाचाइल भक्त-गण ॥ ७१॥

एइ-मत कीर्तन प्रभु करिल कत-क्षण ।
आपन-उद्योगे नाचाइल भक्त-गण ॥ ७१ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **कीर्तन**—कीर्तन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करिल**—किया;

कत-क्षण—कुछ समय के लिए; **आपन**—अपने; **उद्योगे**—प्रयास से; **नाचाइल**—नचवाया; **भक्त-गण**—सभी भक्तों को।

अनुवाद

महाप्रभु ने कुछ समय तक कीर्तन किया और अपने प्रयास से सारे भक्तों को नाचने के लिए प्रेरित किया।

आपनि नाचिते यबे प्रभुर मन हैल ।
सात सम्प्रदाय तबे एकत्र करिल ॥७२॥

आपनि नाचिते यबे प्रभुर मन हैल ।
सात सम्प्रदाय तबे एकत्र करिल ॥७२॥

आपनि—स्वयं; **नाचिते**—नृत्य करने के लिए; **यबे**—जब; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—अब; **हैल**—हो गया; **सात सम्प्रदाय**—सभी सात दलों को; **तबे**—उस समय; **एकत्र करिल**—एकत्र किया।

अनुवाद

जब महाप्रभु का मन नाचने को हुआ, तो सातों टोलियाँ आकर मिल गईं।

श्रीवास, रामाई, रघु, गोविन्द, मुकुन्द ।
हरिदास, गोविन्दानन्द, माधव, गोविन्द ॥७३॥

श्रीवास, रामाइ, रघु, गोविन्द, मुकुन्द ।
हरिदास, गोविन्दानन्द, माधव, गोविन्द ॥७३॥

श्रीवास—श्रीवास; **रामाइ**—रामाइ; **रघु**—रघु; **गोविन्द**—गोविन्द; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **हरिदास**—हरिदास; **गोविन्दानन्द**—गोविन्दानन्द; **माधव**—माधव; **गोविन्द**—गोविन्द।

अनुवाद

श्रीवास, रामाइ, रघु, गोविन्द, मुकुन्द, हरिदास, गोविन्दानन्द, माधव तथा गोविन्द इत्यादि महाप्रभु के सभी भक्त इकट्ठे हो गये।

उद्दण्ड-नृत्ये प्रभुर यबे हैल मन ।
स्वरूपेर सङ्गे दिल एइ नव जन ॥७४॥

उद्दण्ड-नृत्ये प्रभुर ग्रबे हैल मन ।
स्वरूपेर सङ्गे दिल एइ नव जन ॥ ७४ ॥

उद्दण्ड-नृत्ये—ऊँचा कूदकर नृत्य करने का; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **ग्रबे**—जब; **हैल मन**—मन हुआ; **स्वरूपेर**—स्वरूप दामोदर; **सङ्गे**—के साथ; **दिल**—दिये; **एइ**—ये; **नव जन**—नौ भक्त।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु का ऊँचे कूदते हुए नृत्य करने का मन हुआ, तो उन्होंने इन नौ लोगों को स्वरूप दामोदर के अधीन कर दिया।

एइ दश जन प्रभुर सङ्गे गाय, धाय ।
आर सब सम्प्रदाय चारि दिके गाय ॥ ७५ ॥

एइ दश जन—ये दस भक्त; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सङ्गे**—के साथ; **गाय**—कीर्तन कर रहे थे; **धाय**—दौड़े; **आर**—अन्य; **सब**—सब; **सम्प्रदाय**—भक्तों के दल; **चारि दिके**—चारों ओर; **गाय**—कीर्तन किया।

अनुवाद

ये भक्त (स्वरूप दामोदर तथा उनके अधीनस्थ भक्त) महाप्रभु के साथ-साथ गाते थे और उन्हीं के साथ दौड़ते भी थे। भक्तों के अन्य समूह भी गाते थे।

दण्डवत्करि, प्रभु यूड़ि' दुइ हात ।
ऊर्ध्व-मुखे स्तुति करे देखि' जगन्नाथ ॥ ७६ ॥

दण्डवत् करि—दण्डवत् करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यूड़ि'**—जोड़कर; **दुइ हात**—दोनों हाथ; **ऊर्ध्व-मुखे**—मुख ऊपर उठाकर; **स्तुति करे**—प्रार्थना करते; **देखि'**—दर्शन करते हुए; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ के विग्रह का।

अनुवाद

महाप्रभु ने हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए अपना मुख जगन्नाथजी की ओर उठाया और इस प्रकार प्रार्थना की।

नमो ब्रह्मण्य-देवाय गो-ब्राह्मण-हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥७७॥

नमो ब्रह्मण्य-देवाय गो-ब्राह्मण-हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥७७॥

नमः—नमस्कार हो; **ब्रह्मण्य-देवाय**—ब्राह्मणों द्वारा पूजनीय भगवान् को; **गो-ब्राह्मण**—गौओं और ब्राह्मणों के; **हिताय**—हित के लिए; **च**—भी; **जगत्-हिताय**—जो सारे जगत् का हित करते हैं; **कृष्णाय**—कृष्ण को; **गोविन्दाय**—गोविन्द को; **नमः नमः**—बारम्बार नमस्कार।

अनुवाद

'"मैं उन भगवान् कृष्ण को सादर नमस्कार करता हूँ, जो समस्त ब्राह्मणों के आराध्य देव हैं, जो गायों तथा ब्राह्मणों के शुभचिन्तक हैं तथा जो सदैव सारे जगत् को लाभ पहुँचाते हैं। मैं कृष्ण तथा गोविन्द के नाम से विख्यात भगवान् को बारम्बार नमस्कार करता हूँ।'

तात्पर्य

यह श्लोक *विष्णु पुराण* (१.१९.६५) से लिया गया है।

जयति जयति देवो देवकी-नन्दनोऽसौ
जयति जयति कृष्णो वृष्णि-वंश-प्रदीपः ।
जयति जयति मेघ-श्यामलः कोमलाङ्गो
जयति जयति पृथ्वी-भार-नाशो मुकुन्दः ॥७८॥

जयति जयति देवो देवकी-नन्दनोऽसौ
जयति जयति कृष्णो वृष्णि-वंश-प्रदीपः ।
जयति जयति मेघ-श्यामलः कोमलाङ्गो
जयति जयति पृथ्वी-भार-नाशो मुकुन्दः ॥७८॥

जयति—जय हो; **जयति**—जय हो; **देवः**—पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् की; **देवकी-नन्दनः**—देवकी के पुत्र की; **असौ**—वे; **जयति जयति**—जय हो; **कृष्णः**—भगवान् कृष्ण की; **वृष्णि-वंश-प्रदीपः**—वृष्णि वंश की ज्योति; **जयति जयति**—जय हो; **मेघ-श्यामलः**—पूर्ण पुरुष भगवान् को जो श्याम मेघ की तरह दिखते हैं; **कोमल-अङ्गः**—जिनका तन कमल की भाँति कोमल है; **जयति जयति**—जय हो; **पृथ्वी-भार-नाशः**—जो सारे संसार को इसके भार से उबारने वाले हैं; **मुकुन्दः**—सबको मुक्ति प्रदान करने वाले।

अनुवाद

"'उन पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की जय हो, जो देवकी-पुत्र कहलाते हैं! उन पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की जय हो, जो वृष्णि-वंश के दीपक हैं! उन पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की जय हो, जिनके शरीर की कान्ति नये बादल की तरह है और जिनका शरीर कमल के फूल के समान कोमल है! उन पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की जय हो, जो संसार का असुरों के भार से उद्धार करने के लिए इस पृथ्वी पर प्रकट हुए हैं और जो हर एक को मुक्ति दे सकते हैं!'

तात्पर्य : यह श्लोक *मुकुन्द माला* (३) से लिया गया है।

जयति जन-निवासो देवकी-जन्म-वादो
यदु-वर-परिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्मम् ।
स्थिर-चर-वृजिन-घ्नः सुस्मित-श्री-मुखेन
व्रज-पुर-वनितानां वर्धयन्काम-देवम् ॥७९॥

जयति जन-निवासो देवकी-जन्म-वादो
यदु-वर-परिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्मम् ।
स्थिर-चर-वृजिन-घ्नः सुस्मित-श्री-मुखेन
व्रज-पुर-वनितानां वर्धयन्काम-देवम् ॥७९॥

जयति—नित्य महिमायुक्त रहने वाले; **जन-निवासः**—जो मनुष्यों में यदुवंश के सदस्यों की तरह रहते हैं और सभी जीवों के परम आश्रय हैं; **देवकी-जन्म-वादः**—जो देवकी के पुत्र के रूप में प्रसिद्ध हैं (कोई भी वास्तव में पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् का माता-पिता नहीं बन सकता। इसलिए *देवकी-जन्म-वादः* का अर्थ यह है कि वे देवकी के पुत्र के रूप में जाने जाते हैं। इसी प्रकार वे माता यशोदा, वसुदेव तथा नन्द महाराज के पुत्र के रूप में भी जाने जाते हैं); **यदु-वर-परिषत्**—यदुकुल के सदस्यों या वृन्दावन के ग्वालों द्वारा सेवित (ये

सभी परम भगवान् के नित्य पार्षद व नित्य सेवक हैं); **स्वैः दोर्भिः**—अपनी भुजाओं द्वारा अथवा अर्जुन जैसे भक्तों द्वारा जो उनकी भुजाओं के समान हैं; **अस्यन्**—मारने वाले; **अधर्मम्**—दैत्यों अथवा अशुभ तत्त्वों को; **स्थिर-चर-वृजिन-घ्नः**—सभी चर-अचर जीवों के दुर्भाग्य का नाश करने वाले; **सु-स्मित**—सदा मुसकाने वाले; **श्री-मुखेन**—अपने सुन्दर मुख से; **व्रज-पुर-वनितानाम्**—वृन्दावन की गोपियों की; **वर्धयन्**—बढ़ाने वाले; **काम-देवम्**—काम-इच्छाओं को।

अनुवाद

"'भगवान् श्रीकृष्ण जननिवास हैं अर्थात् समस्त जीवों के परम आश्रय हैं और वे देवकीनन्दन या यशोदानन्दन भी कहलाते हैं। वे यदुवंश के मार्गदर्शक हैं और वे अपनी बलशाली भुजाओं से समस्त अशुभ वस्तुओं का तथा अपवित्र मनुष्यों का वध करते हैं। अपनी उपस्थिति से वे उन समस्त वस्तुओं का विनाश करते हैं, जो चर तथा अचर जीवों के लिए अशुभ वस्तुओं का विनाश करते हैं। उनका हँसमुख आनन्ददायक मुख वृन्दावन की गोपियों की कामेच्छाओं को बढ़ाने वाला है। वे विजयी और सुखी हों।"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* से (१०.९०.४८) से लिया गया है।

नाहं विप्रो न च नर-पतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो
नाहं वर्णी न च गृह-पतिर्नो वनस्थो यतिर्वा ।
किन्तु प्रोद्यन्निखिल-परमानन्द-पूर्णामृताब्धेर्
गोपी-भर्तुः पद-कमलयोर्दास-दासानुदासः ॥ ८० ॥

नाहं विप्रो न च नर-पतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो
नाहं वर्णी न च गृह-पतिर्नो वनस्थो यतिर्वा ।
किन्तु प्रोद्यन्निखिल-परमानन्द-पूर्णामृताब्धेर्
गोपी-भर्तुः पद-कमलयोर्दास-दासानुदासः ॥ ८० ॥

न—नहीं; **अहम्**—मैं; **विप्रः**—ब्राह्मण; **न**—नहीं; **च**—भी; **नर-पतिः**—राजा अथवा क्षत्रिय; **न**—नहीं; **अपि**—भी; **वैश्यः**—वैश्य; **न**—नहीं; **शूद्रः**—शूद्र; **न**—नहीं; **अहम्**—मैं; **वर्णी**—किसी भी वर्ण का अथवा ब्रह्मचारी (ब्रह्मचारी किसी भी वर्ण का हो सकता है। कोई भी ब्रह्मचारी बन सकता है।); **न**—नहीं; **च**—भी; **गृह-पतिः**—गृहस्थ; **नो**—नही; **वन-**

स्थः—वानप्रस्थ, वह जो पारिवारिक जीवन से निवृत्ति के बाद वन में जाता है और पारिवारिक जीवन से अनासक्त होना सीखता है; **यतिः**—साधु, संन्यासी; **वा**—अथवा; **किन्तु**—किन्तु; **प्रोद्यन्**—बुद्धिमान; **निखिल**—सर्वत्र ; **परम-आनन्द**—दिव्य आनन्द सहित; **पूर्ण**—पूर्ण; **अमृत-अब्धेः**—अमृत के सागर; **गोपी-भर्तुः**—गोपियों के रखवाले परम पुरुष के; **पद-कमलयोः**—दोनों चरणकमलों के; **दास**—दास का; **दास-अनुदासः**—दासों का दास।

अनुवाद

"'मैं न तो ब्राह्मण हूँ, न क्षत्रिय, न वैश्य, न ही शूद्र हूँ। न ही मैं ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ या संन्यासी हूँ। मैं तो गोपियों के भर्ता भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों के दास के दास का भी दास हूँ। वे अमृत के सागर के तुल्य हैं और विश्व के दिव्य आनन्द के कारणस्वरूप हैं। वे सदैव तेजोमय रहते हैं।'"

तात्पर्य

यह श्लोक श्रील रूप गोस्वामी कृत काव्यसंग्रह *पद्यावली* (७४) से है।

এত পড়ি' পুনরপি করিল প্রণাম
যোড়-হাতে ভক্ত-গণ বন্দে ভগবান্ ॥ ৮১ ॥

এত পড়ি' পুনরপি করিল প্রণাম
যোড়-হাতে ভক্ত-গণ বন্দে ভগবান্ ॥ ৮১ ॥

एत पड़ि'—ये पढ़कर; **पुनरपि**—दोबारा; **करिल**—भगवान् ने किया; **प्रणाम**—प्रणाम; **योड़-हाते**—हाथ जोड़कर; **भक्त-गण**—सभी भक्तों ने; **वन्दे**—स्तुति की; **भगवान्**—भगवान् की।

अनुवाद

शास्त्र के इन श्लोकों को सुनाने के बाद महाप्रभु ने पुनः नमस्कार किया और सारे भक्तों ने भी हाथ जोड़कर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की वन्दना की।

উদ্দণ্ড নৃত্য প্রভু করিয়া হুঙ্কার ।
চক্র-ভ্রমি ভ্রমে যৈছে অলাত-আকার ॥ ৮২ ॥

उद्दण्ड नृत्य प्रभु करिया हुङ्कार ।
चक्र-भ्रमि भ्रमे यैछे अलात-आकार ॥ ८२ ॥

उद्दण्ड—कूदते हुए; **नृत्य**—नाचते हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करिया**—करते हुए; **हुङ्कार**—ऊँची ध्वनि; **चक्र-भ्रमि**—चकरी की भाँति घूमते हुए; **भ्रमे**—घूमने लगे; **यैछे**—जैसे; **अलात-आकार**—अग्निपुंज।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु बादलों जैसी गर्जना करते हुए और चक्र की तरह चक्कर लगाते हुए ऊँचा उछल-उछलकर नाच रहे थे, तब वे घूमते अग्निपुंज की तरह लग रहे थे।

तात्पर्य

यदि जलती लकड़ी को तेजी से घुमायी जाए, तो वह अग्नि के चक्र जैसी प्रतीत होती है। यह *अलात-आकार* या *आलात चक्र* अर्थात् आग का गोला कहलाता है। यह पूरा गोला अग्नि का नहीं होता, अपितु एक ही जलती लकड़ी हिल रही होती है। इसी प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु एक व्यक्ति हैं, किन्तु जब वे नाच रहे थे और गोलाकार ऊँचा कूद रहे थे तो वे *अलात-चक्र* जैसे लग रहे थे।

नृत्যে প্রভুর যাহাঁ যাঁহা পড়ে পদ-তল ।
সসাগর-শৈল মহী করে টলমল ॥ ৮৩॥

नृत्ये प्रभुर ग्राहाँ ग्राँहा पड़े पद-तल ।
ससागर-शैल मही करे टलमल ॥ ८३॥

नृत्ये—नाचते समय; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **ग्राहाँ ग्राँहा**—जहाँ जहाँ; **पड़े**—छुए; **पद-तल**—उनके चरण; **स-सागर**—समुद्रों के साथ; **शैल**—पहाड़ और पर्वत; **मही**—धरती; **करे**—करने लगी; **टलमल**—हिलने लगे।

अनुवाद

नाचते समय महाप्रभु जहाँ कहीं भी चरण रखते थे, पूरी धरती पर्वतों तथा समुद्रों समेत हिलती-डुलती प्रतीत हो रही थी।

স্তম্ভ, স্বেদ, পুলক, অশ্রু, কম্প, বৈবর্ণ্য ।
নানা-ভাবে বিবশতা, গর্ব, হর্ষ, দৈন্য ॥ ৮৪॥

स्तम्भ, स्वेद, पुलक, अश्रु, कम्प, वैवर्ण्य ।
नाना-भावे विवशता, गर्व, हर्ष, दैन्य ॥ ८४॥

स्तम्भ—स्तम्भित होकर; **स्वेद**—पसीना; **पुलक**—रोमांच ; **अश्रु**—अश्रु; **कम्प**—कम्पन; **वैवर्ण्य**—रंग-परिवर्तन; **नाना-भावे**—अनेक प्रकार से; **विवशता**—असहायता; **गर्व**—गर्व; **हर्ष**—हर्ष; **दैन्य**—विनम्रता।

अनुवाद

जब चैतन्य महाप्रभु नाच रहे थे, तब उनके शरीर में आनन्द के विविध दिव्य विकार उत्पन्न हो उठे। कभी ऐसा लगता मानों वे जड़ हो गये हों। कभी उनके शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते। कभी उन्हें पसीना आ जाता, कभी वे रोते, कभी वे काँपने लगते, कभी उनके शरीर का रंग बदल जाता और कभी उनके शरीर में विवशता, गर्व, हर्ष और दैन्य के लक्षण प्रकट हो आते।

আছাড় খাঞা পড়ে ভূমে গড়ি' যায় ।
সুবর্ণ-পর্বত যৈছে ভূমেতে লোটায় ॥ ৮৫॥
আছাড় খাঞা পড়ে ভূমে গড়ি' যায় ।
সুবর্ণ-পর্বত য়ৈছে ভূমেতে লোটায় ॥ ৮৫॥

আছাড় খাঞা—পछाड़ खाकर; **पड़े**—गिर पड़े; **भूमे**—भूमि पर; **गड़ि'**—लोटते हुए; **य़ाय**—गये; **सुवर्ण-पर्वत**—एक स्वर्ण पर्वत; **य़ैछे**—जैसे; **भूमेते**—भूमि पर; **लोटाय**—लोट रहा है।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु नाचते हुए पछाड़ खाकर गिरते तो वे भूमि पर लोटने लगते। उस समय ऐसा प्रतीत होता मानो सुवर्ण पर्वत भूमि पर लोट रहा हो।

নিত্যানন্দ-প্রভু দুই হাত প্রসারিয়া ।
প্রভুরে ধরিতে চাহে আশ-পাশ ধাঞা ॥ ৮৬॥
নিত্যানন্দ-প্রভু দুই হাত প্রসারিয়া ।
প্রভুরে ধরিতে চাহে আশ-পাশ ধাঞা ॥ ৮৬॥

नित्यानन्द-प्रभु—नित्यानन्द प्रभु; **दुइ**—दोनों; **हात**—हाथ; **प्रसारिया**—फैलाकर; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **धरिते**—पकड़ने के लिए; **चाहे**—चाहते; **आश-पाश**—यहाँ वहाँ; **धाञा**—दौड़कर।

अनुवाद

यह देखकर नित्यानन्द प्रभु अपने दोनों हाथ फैलाकर इधर-उधर दौड़ रहे महाप्रभु को पकड़ने का प्रयास करते।

প্রভু-পাছে বুলে আচার্য করিয়া হুঙ্কার ।
'হরি-বোল' 'হরি-বোল' বলে বার বার ॥ ৮৭॥

प्रभु-पाछे बुले आचार्य्य करिया हुङ्कार ।
'हरि-बोल' 'हरि-बोल' बले बार बार ॥ ८७॥

प्रभु-पाछे—महाप्रभु के पीछे; **बुले**—चल रहे थे; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **करिया**—करके; **हुङ्कार**—ऊँची ध्वनि; **हरि-बोल हरि-बोल**—"हरि बोल" कहते हुए; **बले**—कहते थे; **बार बार**—बारम्बार।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य महाप्रभु के पीछे-पीछे चलते और बारम्बार जोर-जोर से "हरिबोल! हरिबोल!" का उच्चारण करते।

লোক নিবারিতে হৈল তিন মণ্ডল ।
প্রথম-মণ্ডলে নিত্যানন্দ মহা-বল ॥ ৮৮॥

लोक निवारिते हैल तिन मण्डल ।
प्रथम-मण्डले नित्यानन्द महा-बल ॥ ८८॥

लोक—लोगों को; **निवारिते**—रोकने के लिए; **हैल**—थे; **तिन**—तीन; **मण्डल**—चक्र; **प्रथम-मण्डले**—पहले चक्र में; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **महा-बल**—महा बलवान।

अनुवाद

भीड़ को महाप्रभु के पास न आने से रोकने के लिए भक्तों ने तीन वर्तुल बना लिए थे। पहले वर्तुल का निर्देशन नित्यानन्द प्रभु कर रहे थे, जो साक्षात् बलराम अर्थात् महान् शक्ति के स्वामी हैं।

কাশীশ্বর গোবিন্দাদি যত ভক্ত-গণ ।
হাতাহাতি করি' হৈল দ্বিতীয় আবরণ ॥৮৯॥

काशीश्वर गोविन्दादि यत भक्त-गण ।
हाताहाति करि' हैल द्वितीय आवरण ॥८९॥

काशीश्वर—काशीश्वर; **गोविन्द-आदि**—गोविन्द आदि; **यत**—सभी; **भक्त-गण**—भक्तगण; **हाताहाति**—हाथ से हाथ जोड़कर; **करि'**—करके; **हैल**—हो गये; **द्वितीय**—दूसरा; **आवरण**—दायरा (चक्कर)।

अनुवाद

काशीश्वर तथा गोविन्द आदि सारे भक्तों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़कर महाप्रभु के चारों ओर दूसरा वृत्त बना लिया।

বাহিরে প্রতাপরুদ্র লঞা পাত্র-গণ ।
মণ্ডল হঞা করে লোক নিবারণ ॥৯০॥

बाहिरे प्रतापरुद्र लञा पात्र-गण ।
मण्डल हञा करे लोक निवारण ॥९०॥

बाहिरे—बाहर; **प्रतापरुद्र**—राजा प्रतापरुद्र; **लञा**—लेकर; **पात्र-गण**—अपने निजी साथियों को; **मण्डल**—दायरा; **हञा**—बनाकर; **करे**—करते थे; **लोक**—भीड़ को; **निवारण**—रोकते थे।

अनुवाद

महाराज प्रतापरुद्र तथा उनके निजी सहायकों ने दोनों भीतरी वर्तुलों के चारों ओर एक तीसरा वर्तुल बना लिया, जिससे भीड़ अधिक निकट न आ सके।

হরিচন্দনের স্কন্ধে হস্ত আলম্বিয়া ।
প্রভুর নৃত্য দেখে রাজা আবিষ্ট হঞা ॥৯১॥

हरिचन्दनेर स्कन्धे हस्त आलम्बिया ।
प्रभुर नृत्य देखे राजा आविष्ट हञा ॥९१॥

हरिचन्दनेर—हरिचन्दन के; **स्कन्धे**—कंधे पर; **हस्त**—हाथ; **आलम्बिया**—रखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **नृत्य देखे**—नृत्य देखते थे; **राजा**—महाराज प्रतापरुद्र; **आविष्ट हञा**—अत्यन्त आवेश में।

अनुवाद

हरिचन्दन के कन्धों पर अपने हाथ रखकर राजा प्रतापरुद्र नृत्य करते हुए महाप्रभु का दर्शन कर सके और इससे वे अत्यधिक भावाविष्ट हो गये।

হেন-কালে শ্রীনিবাস প্রেমাবিষ্ট-মন ।
রাজার আগে রহি' দেখে প্রভুর নর্তন ॥৯২॥

হেন-কালে শ্রীনিবাস প্রেমাবিষ্ট-মন ।
রাজার আগে রহি' দেখে প্রভুর নর্তন ॥ ৯২ ॥

হেন-কালে—इस समय; **শ্রীনিবাস**—श्रीदास ठाकुर ने; **প্রেম-আবিষ্ট-মন**—अत्यन्त प्रेमाविष्ट मन से; **রাজার আগে**—राजा के समक्ष; **রহি'**—रहकर; **দেখে**—देखा; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **নর্তন**—नृत्य को।

अनुवाद

जब राजा नाच देख रहे थे, तब उनके आगे खड़े श्रीवास ठाकुर ने ज्योंही महाप्रभु को नाचते देखा, वे भावाविष्ट हो गये।

রাজার আগে হরিচন্দন দেখে শ্রীনিবাস ।
হস্তে তাঁরে স্পর্শি' কহে,—হও এক-পাশ ॥৯৩॥

রাজার আগে হরিচন্দন দেখে শ্রীনিবাস ।
হস্তে তাঁরে স্পর্শি' কহে,—হও এক-পাশ ॥ ৯৩ ॥

রাজার আগে—राजा के समक्ष; **হরিচন্দন**—हरिचन्दन ने; **দেখে**—देखा; **শ্রীনিবাস**—श्रीवास ठाकुर को; **হস্তে**—अपने हाथ से; **তাঁরে**—उनको; **স্পর্শি'**—स्पर्श करते हुए; **কহে**—कहा; **হও**—कृपया हो जाओ; **এক-পাশ**—एक ओर।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर को राजा के सामने खड़े देखकर हरिचन्दन ने अपने हाथ से श्रीवास को छूकर एक ओर हटने के लिए अनुरोध किया।

নৃত্যাবেশে শ্রীনিবাস কিছুই না জানে ।
বার বার ঠেলে, তেঁহো ক্রোধ হৈল মনে ॥৯৪॥

नृत्यावेशे श्रीनिवास किछुइ ना जाने ।
बार बार ठेले, तेंहो क्रोध हैल मने ॥ ९४॥

नृत्य-आवेशे—श्री चैतन्य महाप्रभु को नाचते हुए देखने में पूर्णरूपेण व्यस्त; **श्रीनिवास**—श्रीवास ठाकुर; **किछुइ**—कुछ भी; **ना**—नहीं; **जाने**—जान सके; **बार बार**—बारम्बार; **ठेले**—जब वह धकेलता था; **तेंहो**—श्रीवास; **क्रोध**—क्रुद्ध; **हैल**—हो गये; **मने**—मन में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को नृत्य करते हुए देखने में मग्न होने के कारण श्रीवास ठाकुर यह नहीं समझ पाये कि उन्हें क्यों छुआ और धकेला जा रहा था। जब उन्हें बारम्बार धकेला गया, तो वे नाराज हो उठे।

চাপড় মারিয়া তারে কৈল নিবারণ ।
চাপড় খাঞা ক্রুদ্ধ হৈলা হরিচন্দন ॥৯৫॥
चापड़ मारिया तारे कैल निवारण ।
चापड़ खाञा क्रुद्ध हैला हरिचन्दन ॥ ९५॥

चापड़ मारिया—थप्पड़ मारा; **तारे**—उसको; **कैल निवारण**—रोका; **चापद खाञा**—थप्पड़ खाने से; **क्रुद्ध**—क्रुद्ध; **हैला**—हो गया; **हरिचन्दन**—हरिचन्दन।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर ने हरिचन्दन को झापड़ मारा, ताकि वह उन्हें धकेलना बन्द करे। इससे हरिचन्दन नाराज हो गया।

ক্রুদ্ধ হঞা তাঁরে কিছু চাহে বলিবারে ।
আপনি প্রতাপরুদ্র নিবারিল তারে ॥৯৬॥
क्रुद्ध हञा ताँरे किछु चाहे बलिबारे ।
आपनि प्रतापरुद्र निवारिल तारे ॥ ९६॥

क्रुद्ध हञा—क्रुद्ध होकर; **ताँरे**—श्रीवास ठाकुर को; **किछु**—कुछ; **चाहे**—चाहता था; **बलिबारे**—कहना; **आपनि**—स्वयं; **प्रतापरुद्र**—राजा प्रतापरुद्र ने; **निवारिल**—रोका; **तारे**—उसको।

अनुवाद

जब क्रुद्ध हरिचन्दन श्रीवास ठाकुर से कुछ बोलने वाला था, तब प्रतापरुद्र महाराज ने खुद उसे रोका।

ভাগ্যবান্তুমি—ইঁহার হস্ত-স্পর্শ পাইলা ।
আমার ভাগ্যে নাহি, তুমি কৃতার্থ হৈলা ॥৯৭॥

भाग्यवान्तुमि—इँहार हस्त-स्पर्श पाइला ।
आमार भाग्ये नाहि, तुमि कृतार्थ हैला ॥ ९७॥

भाग्यवान् तुमि—तुम अति भाग्यशाली हो; **इँहार**—श्रीवास ठाकुर के; **हस्त**—हाथ का; **स्पर्श**—स्पर्श; **पाइला**—पाया है; **आमार भाग्ये**—मेरे भाग्य में; **नाहि**—ऐसा नहीं है; **तुमि**—तुम; **कृत-अर्थ हैला**—कृतार्थ हो गये हो।

अनुवाद

राजा प्रतापरुद्र ने कहा, "तुम अत्यन्त भाग्यशाली हो, क्योंकि श्रीवास ठाकुर ने तुम्हें अपने स्पर्श से कृतार्थ किया है। मैं इतना भाग्यशाली नहीं हूँ। तुम्हें उनके प्रति कृतज्ञता का अनुभव करना चाहिए।

প্রভুর নৃত্য দেখি' লোকে হৈল চমত্কার ।
অন্য আছুক্, জগন্নাথের আনন্দ অপার ॥৯৮॥

प्रभुर नृत्य देखि' लोके हैल चमत्कार ।
अन्य आछुक्, जगन्नाथेर आनन्द अपार ॥ ९८॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **नृत्य**—नृत्य; **देखि'**—देखकर; **लोके**—प्रत्येक व्यक्ति; **हैल**—हो गया; **चमत्कार**—चकित; **अन्य आछुक्**—दूसरों की बात छोड़ो; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ का; **आनन्द अपार**—असीम आनन्द।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु के नृत्य को देखकर हर व्यक्ति चकित था। यहाँ तक कि भगवान् जगन्नाथ भी उन्हें देखकर अतीव प्रसन्न हुए।

রথ স্থির কৈল, আগে না করে গমন ।
অনিমিষ-নেত্রে করে নৃত্য দরশন ॥৯৯॥

रथ स्थिर कैल, आगे ना करे गमन ।
अनिमिष-नेत्रे करे नृत्य दरशन ॥ ९९ ॥

रथ—रथ; **स्थिर कैल**—रोककर; **आगे**—आगे; **ना**—नहीं; **करे**—करते थे; **गमन**—प्रस्थान; **अनिमिष**—बिना झपके; **नेत्रे**—नेत्रों को; **करे**—किए; **नृत्य**—नृत्य; **दरशन**—देखा।

अनुवाद

उनका रथ पूर्णतया स्थिर हो गया और जब तक जगन्नाथ अपलक नेत्रों से श्री चैतन्य महाप्रभु का नाच देखते रहे, तब तक रथ स्थिर खड़ा रहा।

সুভদ্রা-বলরামের হৃদয়ে উল্লাস ।
নৃত্য দেখি' দুই জনার শ্রী-মুখেতে হাস ॥ ১০০ ॥

सुभद्रा-बलरामेर हृदये उल्लास ।
नृत्य देखि' दुइ जनार श्री-मुखेते हास ॥ १०० ॥

सुभद्रा—सुभद्रा देवी; **बलरामेर**—और बलराम के; **हृदये**—हृदयों में; **उल्लास**—हर्ष; **नृत्य**—नृत्य; **देखि'**—देखकर; **दुइ जनार**—उन दोनों के; **श्री-मुखेते**—सुन्दर मुखों पर; **हास**—मुसकान।

अनुवाद

देवी सुभद्रा तथा भगवान् बलराम दोनों को अपने हृदयों में परम सुख तथा भाव का अनुभव हुआ। निस्सन्देह, वे नृत्य देखकर मुस्कुरा रहे थे।

উদ্দণ্ড নৃত্যে প্রভুর অদ্ভুত বিকার ।
অষ্ট সাত্ত্বিক ভাব উদয় হয় সম-কাল ॥ ১০১ ॥

उद्दण्ड नृत्ये प्रभुर अद्भुत विकार ।
अष्ट सात्त्विक भाव उदय हय सम-काल ॥ १०१ ॥

उद्दण्ड—कूदकर; **नृत्ये**—नृत्य करने से; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अद्भुत**—अद्भुत; **विकार**—परिवर्तन; **अष्ट सात्त्विक**—आठ प्रकार के दिव्य; **भाव**—भाव; **उदय हय**—उदय हो गये; **सम-काल**—एक साथ।

अनुवाद

जब चैतन्य महाप्रभु नाच रहे थे और ऊँचे उछल रहे थे, तब उनके

शरीर में आठ प्रकार के सात्त्विक भाव प्रकट हो आये। ये सारे लक्षण एकसाथ दृष्टिगोचर हो रहे थे।

মাংস-ব্রণ সম রোম-বৃন্দ পুলকিত ।
শিমুলীর বৃক্ষ যেন কণ্টক-বেষ্টিত ॥ ১০২ ॥

मांस-व्रण सम रोम-वृन्द पुलकित ।
शिमुलीर वृक्ष येन कण्टक-वेष्टित ॥ १०२ ॥

मांस—चमड़ी; **व्रण**—फुँसी; **सम**—जैसे; **रोम-वृन्द**—शरीर के बाल; **पुलकित**—रोमांचित; **शिमुलीर वृक्ष**—कपास-वृक्ष; **येन**—जैसे; **कण्टक**—काँटों से; **वेष्टित**—घिर गया।

अनुवाद

उनके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये। ऐसा लगा मानो उनकी चमड़ी में फोड़े फूट निकले हों। उनका शरीर काँटों से आवृत-सेमल वृक्ष के समान प्रतीत हो रहा था।

এক এক দন্তের কম্প দেখিতে লাগে ভয় ।
লোকে জানে, দন্ত সব খসিয়া পড়য় ॥ ১০৩ ॥

एक एक दन्तेर कम्प देखिते लागे भय ।
लोके जाने, दन्त सब खसिया पड़य ॥ १०३ ॥

एक एक—एक एक करके; **दन्तेर**—दाँतों का; **कम्प**—कम्पन; **देखिते**—देखकर; **लागे**—लगने लगा; **भय**—भय; **लोके जाने**—लोगों ने समझा; **दन्त**—दाँत; **सब**—सब; **खसिया**—ढीले होकर; **पड़य**—गिर जायेंगे।

अनुवाद

उनके दाँतों को कटकटाते देखकर लोग डर गये और उन्होंने यहाँ तक सोच लिया कि उनके दाँत गिर जायेंगे।

সর্বাঙ্গে প্রস্বেদ ছুটে তাতে রক্তোদগম ।
'জজ গগ' 'জজ গগ'—গদগদ-বচন ॥ ১০৪ ॥

सर्वाङ्गे प्रस्वेद छुटे ताते रक्तोद्गम ।
'जज गग' 'जज गग'—गद्गद-वचन ॥ १०४ ॥

सर्वाङ्गे—सारे शरीर पर; **प्रस्वेद**—पसीना; **छुटे**—बहने लगा; **ताते**—इसके साथ; **रक्त-उद्गम**—रक्त टपकने लगा; **जज गग जज गग**—"जज गग जज गग" जगन्नाथ नाम का संकेत करने की ध्वनि; **गद्गद**—प्रसन्नता से गद्गद् हो गये; **वचन**—शब्द।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे शरीर से पसीना बह रहा था और साथ ही रक्त फूट रहा था। वे भावावेश में "जज गग, जज गग" की रुँधी आवाज निकाल रहे थे।

जलयन्त्र-धारा यैछे वहे अश्रु-जल ।
आश-पाशे लोक यत भिजिल सकल ॥ १०५॥

जलयन्त्र-धारा य्रैछे वहे अश्रु-जल ।
आश-पाशे लोक य्रत भिजिल सकल ॥ १०५॥

जल-य्रन्त्र—पिचकारी से; **धारा**—जल की धारा; **य्रैछे**—जैसे; **वहे**—निकल रही हो; **अश्रु-जल**—नेत्रों से अश्रु-जल; **आश-पाशे**—सभी ओर से; **लोक**—लोग; **य्रत**—जितने भी वहाँ थे; **भिजिल**—भीग गये; **सकल**—सब।

अनुवाद

महाप्रभु की आँखों से तेजी से अश्रु निकल रहे थे, मानो पिचकारी से जल निकल रहा हो, जिससे उनके चारों ओर खड़े लोग भीग गये।

देह-कान्ति गौर-वर्ण देखिये अरुण ।
कभु कान्ति देखि यैन मल्लिका-पुष्प-सम ॥ १०६॥

देह-कान्ति गौर-वर्ण देखिये अरुण ।
कभु कान्ति देखि य्रैन मल्लिका-पुष्प-सम ॥ १०६॥

देह-कान्ति—शरीर की कान्ति; **गौर-वर्ण**—गौर वर्ण; **देखिये**—हर एक ने देखा; **अरुण**—गुलाबी; **कभु**—कभी; **कान्ति**—कान्ति; **देखि**—देखकर; **य्रैन**—जैसे; **मल्लिका-पुष्प-सम**—मल्लिका-पुष्प से मिलती हुई।

अनुवाद

सभी लोगों ने देखा कि उनके शरीर का रंग गोरे से गुलाबी हो गया है, जिससे उनकी देह की कान्ति मल्लिका फूल जैसी लग रही थी।

কভু স্তম্ভ, কভু প্রভু ভূমিতে লোটায় ।
শুষ্ক-কাষ্ঠ-সম পদ-হস্ত না চলয় ॥ ১০৭ ॥

কভু স্তম্ভ, কভু প্রভু ভূমিতে লোটায় ।
শুষ্ক-কাষ্ঠ-সম পদ-হস্ত না চলয় ॥ ১০৭ ॥

কভু—কভী; **স্তম্ভ**—স্তম্ভিত; **কভু**—কভী; **প্রভু**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু; **ভূমিতে**—ভূমি পর; **লোটায়**—লোটতে থে; **শুষ্ক**—সূখী; **কাষ্ঠ**—লকড়ী; **সম**—কে সমান; **পদ-হস্ত**—পাঁব তথা হাথ; **না**—নহীং; **চলয়**—হিলতে থে।

অনুবাদ

কভী বে স্তম্ভিত জান পড়তে ঔর কভী জমীন পর লোটনে লগতে। কভী-কভী উনকে হাথ তথা পাঁব লকড়ী জৈসে কড়े হো জাতে, জিসসে বে চল-ফির নহীং সকতে থে।

কভু ভূমে পড়ে, কভু শ্বাস হয় হীন ।
যাহা দেখি' ভক্ত-গণের প্রাণ হয় ক্ষীণ ॥ ১০৮ ॥

কভু ভূমে পড়ে, কভু শ্বাস হয় হীন ।
গ্রাহা দেখি' ভক্ত-গণের প্রাণ হয় ক্ষীণ ॥ ১০৮ ॥

কভু—কভী; **ভূমে**—ভূমি পর; **পড়ে**—গিরতে থে; **কভু**—কভী; **শ্বাস**—সাংস; **হয়**—হোতে থে; **হীন**—বিহীন; লুপ্ত; **গ্রাহা দেখি'**—জিসে দেখকর; **ভক্ত-গণের**—ভক্তোং কে; **প্রাণ**—প্রাণ; **হয়**—হোতে থে; **ক্ষীণ**—নির্বল।

অনুবাদ

জব মহাপ্রভু জমীন পর গির পড়তে, তো কভী-কভী উনকী সাঁস রুক-সী জাতী। জব ভক্তোং নে ঐসা দেখা, তো উনকে প্রাণ ভী ক্ষীণ হো গয়ে।

কভু নেত্রে নাসায় জল, মুখে পড়ে ফেন ।
অমৃতের ধারা চন্দ্র-বিম্বে বহে যেন ॥ ১০৯ ॥

কভু নেত্রে নাসায় জল, মুখে পড়ে ফেন ।
অমৃতের ধারা চন্দ্র-বিম্বে বহে যেন ॥ ১০৯ ॥

কভু—কভী; **নেত্রে**—নেত্রোং সে; **নাসায়**—নাসিকাওং সে; **জল**—পানী; **মুখে**—মুখ সে; **পড়ে**—গিরতা থা; **ফেন**—ঝাগ; **অমৃতের**—অমৃত কী; **ধারা**—ধারাএঁ; **চন্দ্র-বিম্বে**—চাঁদ সে; **বহে**—বহতী হোং; **যেন**—জৈসে।

अनुवाद

कभी उनकी आँखों से पानी बहता, तो कभी नासिकाओं से। उनके मुख से फेन गिरता। ऐसा प्रतीत होता मानो चन्द्रमा से अमृत की धाराएँ बह चली हों।

सेई फेन लञा शुभानन्द कैल पान ।
कृष्ण-प्रेम-रसिक तेँहो महा-भाग्यवान् ॥ ११० ॥

सेइ फेन लञा शुभानन्द कैल पान ।
कृष्ण-प्रेम-रसिक तेंहो महा-भाग्यवान् ॥ ११० ॥

सेइ फेन—वही झाग; **लञा**—लेकर; **शुभानन्द**—शुभानन्द नाम के एक भक्त ने; **कैल**—किया; **पान**—पान; **कृष्ण-प्रेम-रसिक**—कृष्ण-प्रेम के रसिक; **तेंहो**—वह; **महा-भाग्यवान्**—अति भाग्यवान्।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के मुख से जो फेन गिरा, उसे शुभानन्द ने पी लिया, क्योंकि वह महाभाग्यशाली था और कृष्ण-प्रेम रस का आस्वादन करने में पटु था।

एइ-मत ताण्डव-नृत्य कैल कत-क्षण ।
भाव-विशेषे प्रभुर प्रवेशिल मन ॥ १११ ॥

एइ-मत ताण्डव-नृत्य कैल कत-क्षण ।
भाव-विशेषे प्रभुर प्रवेशिल मन ॥ १११ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **ताण्डव-नृत्य**—ताण्डव नृत्य; **कैल**—किया; **कत-क्षण**—कुछ काल के लिए; **भाव-विशेषे**—विशेष भाव में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **प्रवेशिल मन**—मन प्रवेश कर गया।

अनुवाद

कुछ काल तक ऐसा प्रलयंकारी नृत्य करने के बाद महाप्रभु का मन प्रेमभाव में प्रविष्ट हुआ।

তাণ্ডব-নৃত্য ছাড়ি' স্বরূপেরে আজ্ঞা দিল ।
হৃদয় জানিয়া স্বরূপ গাইতে লাগিল ॥ ১১২॥

তাণ্ডব-নৃত্য ছাড়ি' স্বরূপেরে আজ্ঞা দিল ।
হৃদয় জানিয়া স্বরূপ গাইতে লাগিল ॥ ১১২॥

তাণ্ডব-নৃত্য ছাড়ি'—ऐसा ताण्डव नृत्य त्यागकर; **স্বরূপেরে**—स्वरूप दामोदर को; **আজ্ঞা দিল**—आज्ञा दी; **হৃদয়**—मन; **জানিয়া**—जानकर; **স্বরূপ**—स्वरूप दामोदर; **গাইতে লাগিল**—गाने लगे।

अनुवाद

नाचना छोड़कर महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर को गाने के लिए आज्ञा दी। उनके मन की बात समझकर स्वरूप दामोदर इस प्रकार गाने लगे।

'''সেই ত পরাণ-নাথ পাইনু ।
যাহা লাগি' মদন-দহনে ঝুরি' গেনু''' ॥ ১১৩॥

'''সেই ত পরাণ-নাথ পাইনু ।
যাহা লাগি' মদন-দহনে ঝুরি' গেনু''' ॥ ১১৩॥

সেই ত—वही निस्सन्देह; **পরাণ-নাথ**—मेरे प्राणनाथ; **পাইনু**—मैंने पा लिये हैं; **যাহা লাগি'**—जिनके लिए; **মদন-দহনে**—मदन (कामदेव) द्वारा जलना; **ঝুরি' গেনু**—मैं सूख गया।

अनुवाद

'''अब मुझे अपने जीवन के स्वामी प्राप्त हो गये हैं, जिनके बिना मैं कामदेव द्वारा दग्ध हो रही थी और सूखी जा रही थी।'''

तात्पर्य

यह गीत कुरुक्षेत्र नामक पुण्य स्थान पर कृष्ण से श्रीमती राधारानी के मिलन का सूचक है, जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण अपने भाई तथा बहन के साथ सूर्यग्रहण के अवसर पर गये थे। यह कृष्ण से विरह का गीत है। जब श्रीमती राधारानी कृष्ण से कुरुक्षेत्र में मिलीं, तो उन्हें वृन्दावन में श्रीकृष्ण के घनिष्ठ सान्निध्य का स्मरण हो आया और उन्होंने सोचा, "अब मुझे अपने जीवन के स्वामी मिल गये हैं। उसकी अनुपस्थिति में मैं कामदेव के बाण से जल रही थी और सूखी जा रही थी। अब मुझे पुनः अपना जीवन मिल गया।"

এই ধুয়া উচ্চৈঃ-স্বরে গায় দামোদর ।
আনন্দে মধুর নৃত্য করেন ঈশ্বর ॥ ১১৪॥

এइ धुया उच्चैः-स्वरे गाय दामोदर ।
आनन्दे मधुर नृत्य करेन ईश्वर ॥ ११४॥

एइ धुया—यह टेक; **उच्चैः-स्वरे**—ऊँची आवाज में; **गाय**—गाया; **दामोदर**—दामोदर स्वरूप; **आनन्दे**—अत्यन्त आनन्द में; **मधुर**—मधुर; **नृत्य**—नृत्य; **करेन**—किया; **ईश्वर**—महाप्रभु ने।

अनुवाद

जब स्वरूप दामोदर इस टेक को जोर-जोर से गा रहे थे, तब श्री चैतन्य महाप्रभु दिव्य आनन्द में मग्न होकर ताल पर फिर नृत्य करने लगे।

ধীরে ধীরে জগন্নাথ করেন গমন ।
আগে নৃত্য করি' চলেন শচীর নন্দন ॥ ১১৫॥

धीरे धीरे जगन्नाथ करेन गमन ।
आगे नृत्य करि' चलेन शचीर नन्दन ॥ ११५॥

धीरे धीरे—धीरे धीरे; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ ने; **करेन**—किया; **गमन**—प्रस्थान; **आगे**—आगे; **नृत्य**—नृत्य; **करि'**—करते हुए; **चलेन**—चले; **शचीर नन्दन**—माता शची के पुत्र।

अनुवाद

तब जगन्नाथजी का रथ धीरे-धीरे चलने लगा और शचीमाता के पुत्र आगे बढ़कर रथ के समक्ष नाचने लगे।

জগন্নাথে নেত্র দিয়া সবে নাচে, গায় ।
কীর্তনীয়া সহ প্রভু পাছে পাছে যায় ॥ ১১৬॥

जगन्नाथे नेत्र दिया सबे नाचे, गाय ।
कीर्तनीया सह प्रभु पाछे पाछे याय ॥ ११६॥

जगन्नाथे—भगवान् जगन्नाथ पर; **नेत्र**—आँखें; **दिया**—टिकाकर; **सबे**—सभी भक्तों ने; **नाचे गाय**—नाचा और गाया; **कीर्तनीया**—संकीर्तन करने वालों के; **सह**—साथ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पाछे पाछे**—पीछे पीछे; **याय**—आगे बढ़ने लगे।

अनुवाद

नाचते तथा गाते हुए, भगवान् जगन्नाथ के सामने जितने भक्त थे, वे उन्हीं पर आँखें टिकाये थे। तब चैतन्य महाप्रभु कीर्तनियों के साथ जुलूस के पिछले सिरे तक गये।

জগন্নাথে মগ্ন প্রভুর নয়ন-হৃদয় ।
শ্রী-হস্ত-যুগে করে গীতের অভিনয় ॥ ১১৭ ॥

जगन्नाथे मग्न प्रभुर नयन-हृदय ।
श्री-हस्त-युगे करे गीतेर अभिनय ॥ ११७ ॥

जगन्नाथे—भगवान् जगन्नाथ में; **मग्न**—मग्न; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **नयन-हृदय**—नयन और मन; **श्री-हस्त-युगे**—अपनी दोनों भुजाओं के साथ; **करे**—किया; **गीतेर**—गीत का; **अभिनय**—अभिनय।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु अपने नेत्रों तथा मन को भगवान् जगन्नाथ पर टिकाए हुए अपने दोनों हाथों से गीत का अभिनय करने लगे।

গৌর যদি পাছে চলে, শ্যাম হয় স্থিরে ।
গৌর আগে চলে, শ্যাম চলে ধীরে-ধীরে ॥ ১১৮ ॥

गौर यदि पाछे चले, श्याम हय स्थिरे ।
गौर आगे चले, श्याम चले धीरे-धीरे ॥ ११८ ॥

गौर—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यदि**—यदि; **पाछे चले**—पीछे चले जाते; **श्याम**—भगवान् जगन्नाथ; **हय**—हो जाते; **स्थिरे**—स्थिर; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आगे चले**—आगे चलते; **श्याम**—भगवान् जगन्नाथ; **चले**—चलने लगते; **धीरे-धीरे**—धीरे धीरे।

अनुवाद

गीत का अभिनय करते हुए महाप्रभु कभी-कभी जुलूस में पिछड़ जाते। ऐसे अवसरों पर भगवान् जगन्नाथ स्थिर हो जाते। जब चैतन्य महाप्रभु पुनः आगे आ जाते, तो भगवान् जगन्नाथ का रथ पुनः धीरे-धीरे चल देता।

এই-মত গৌর-শ্যামে, দোঁহে ঠেলাঠেলি ।
স্বরথে শ্যামেরে রাখে গৌর মহা-বলী ॥ ১১৯॥

एइ-मत गौर-श्यामे, दोंहे ठेलाठेलि ।
स्वरथे श्यामेरे राखे गौर महा-बली ॥ ११९ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **गौर-श्यामे**—भगवान् जगन्नाथ तथा श्री चैतन्य महाप्रभु; **दोंहे**—उन दोनों के मध्य; **ठेलाठेलि**—आगे धकेलने की स्पर्धा; **स्व-रथे**—अपने ही रथ में; **श्यामेरे**—भगवान् जगन्नाथ; **राखे**—रखते हैं; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **महा-बली**—अत्यन्त शक्तिशाली।

अनुवाद

इस तरह चैतन्य महाप्रभु तथा भगवान् जगन्नाथ में यह देखने की होड़ लगी थी कि कौन आगे निकल जाए। किन्तु चैतन्य महाप्रभु इतने बलशाली थे कि जगन्नाथजी को अपने रथ में प्रतीक्षा करनी पड़ती।

तात्पर्य

अपने अनुभाष्य में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर चैतन्य महाप्रभु के भावावेश का वर्णन इस प्रकार करते हैं। वृन्दावन में गोपियों का साथ छोड़कर महाराज नन्द के पुत्र श्रीकृष्ण द्वारका में अपनी लीलाओं में संलग्न हो गये। जब कृष्ण अपने भाई, बहन तथा अन्य लोगों के साथ द्वारका से कुरुक्षेत्र गये, तब वे वृन्दावन के निवासियों से पुनः मिले। श्री चैतन्य महाप्रभु कृष्ण को समझने के लिए श्रीमती राधारानी की भूमिका अदा कर रहे थे (*राधाभावद्युतिसुवलित*)। भगवान् जगन्नाथ कृष्ण हैं और श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु श्रीमती राधारानी हैं। चैतन्य महाप्रभु द्वारा जगन्नाथजी को गुण्डिचा मन्दिर की ओर ले जाना श्रीमती राधारानी द्वारा कृष्ण को वृन्दावन ले जाने जैसा था। श्री क्षेत्र, जगन्नाथ पुरी को कृष्ण की परम ऐश्वर्य लीलास्थली द्वारका क्षेत्र माना जाता है। किन्तु वे श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा छोटे से गाँव वृन्दावन ले जाये जा रहे थे, जहाँ के सारे निवासी कृष्ण के प्रेम से ओतप्रोत हैं। श्री क्षेत्र *ऐश्वर्य लीला* का स्थल है, जिस तरह वृन्दावन *माधुर्य लीला* का स्थल है। रथ के पीछे-पीछे श्री चैतन्य महाप्रभु के चलने का अर्थ यह था कि भगवान् जगन्नाथ अर्थात् कृष्ण वृन्दावन के निवासियों को भूल रहे हैं। यद्यपि कृष्ण ने वृन्दावन

के निवासियों की उपेक्षा की थी, किन्तु वे उन्हें भुला नहीं पाये थे। इस तरह वे अपनी ऐश्वर्यपूर्ण रथयात्रा में वृन्दावन लौट रहे थे। श्री चैतन्य महाप्रभु श्रीमती राधारानी की भूमिका में परीक्षा ले रहे थे कि क्या भगवान् को वृन्दावन के निवासियों की अब भी याद आती है या नहीं। जब चैतन्य महाप्रभु रथ से पिछड़ जाते, तो जगन्नाथ देव अर्थात् स्वयं कृष्ण श्रीमती राधारानी के मन को जान लेते। इसीलिए कभी-कभी जगन्नाथजी यह दिखाने के लिए नाचते हुए महाप्रभु से पिछड़ जाते कि वे श्रीमती राधारानी को भूले नहीं हैं। इस जगह भगवान् जगन्नाथ रथ का आगे बढ़ना रोक लेते और पूरी तरह रथ रोककर प्रतीक्षा करते। इस तरह जगन्नाथजी ने स्वीकार किया कि श्रीमती राधारानी के भाव के बिना वे सन्तुष्ट नहीं होंगे। जब जगन्नाथजी इस तरह प्रतीक्षा करते, तो गौरसुन्दर, चैतन्य महाप्रभु अपने श्रीमती राधारानी के भाव में कृष्ण के आगे आ जाते। ऐसे अवसरों पर भगवान् जगन्नाथ बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ते। इस तरह की पारस्परिक होड़ कृष्ण तथा राधारानी के प्रेम-व्यापार की अंग थी। महाप्रभु द्वारा जगन्नाथ के लिए और जगन्नाथ द्वारा श्रीमती राधारानी के लिए जो भाव की प्रतिस्पर्धा थी, उसमें चैतन्य महाप्रभु विजयी हुए।

নাচিতে নাচিতে প্রভুর হৈলা ভাবান্তর ।
হস্ত তুলি' শ্লোক পড়ে করি' উচ্চৈঃ-স্বর ॥ ১২০ ॥

नाचिते नाचिते प्रभुर हैला भावान्तर ।
हस्त तुलि' श्लोक पड़े करि' उच्चैः-स्वर ॥ १२० ॥

नाचिते नाचिते—नाचते नाचते; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **हैला**—हो गया; **भाव-अन्तर**—भाव-परिवर्तन; **हस्त तुलि'**—भुजाएँ उठाकर; **श्लोक पड़े**—एक श्लोक पढ़ने लगे; **करि'**—करके; **उच्चैः-स्वर**—ऊँची आवाज।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु नाच रहे थे, तो उनका भाव बदल गया। वे अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर ऊँचे स्वर से निम्नलिखित श्लोक सुनाने लगे।

यः कौमार-हरः स एव हि वरस्ता एव चैत्र-क्षपास्
ते चोन्मीलित-मालती-सुरभयः प्रौढ़ाः कदम्बानिलाः ।
सा चैवास्मि तथापि तत्र सूरत-व्यापार-लीला-विधौ
रेवा-रोधसि वेतसी-तरु-तले चेतः समुत्कण्ठते ॥ १२१॥

यः कौमार-हरः स एव हि वरस्ता एव चैत्र-क्षपास्
ते चोन्मीलित-मालती-सुरभयः प्रौढ़ाः कदम्बानिलाः ।
सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरत-व्यापार-लीला-विधौ
रेवा-रोधसि वेतसी-तरु-तले चेतः समुत्कण्ठते ॥ १२१॥

यः—वही व्यक्ति जो; **कौमार-हरः**—युवावस्था में मेरा चित्तचोर; **सः**—वह; **एव हि**—निस्सन्देह; **वरः**—प्रेमी; **ताः**—इन; **एव**—अवश्य; **चैत्र-क्षपाः**—चैत्र मास की चांदनी रातें; **ते**—वे; **च**—और; **उन्मीलित**—खिले हुए; **मालती**—मालती पुष्पों की; **सुरभयः**—सुगन्ध; **प्रौढ़ाः**—पूर्ण; **कदम्ब**—कदम्भ पुष्प की सुगन्ध से; **अनिलाः**—पवन; **सा**—वह; **च**—भी; **एव**—निस्सन्देह; **अस्मि**—मैं हूँ; **तथापि**—फिर भी; **तत्र**—वहाँ; **सुरत-व्यापार**—अन्तरंग व्यापार में; **लीला**—लीलाओं के; **विधौ**—रीति में; **रेवा**—रेवा नदी के; **रोधसि**—तट पर; **वेतसी**—वेतसी नामक; **तरु-तले**—वृक्ष के तले; **चेतः**—मेरा मन; **समुत्कण्ठते**—जाने को उत्सुक है।

अनुवाद

"'जिस व्यक्ति ने युवावस्था में मेरा हृदय चुरा लिया था, वही अब फिर से मेरा स्वामी है। ये चैत्र-मास की वही चाँदनी रातें हैं। वही मालती पुष्पों की सुगन्ध है और कदम्ब वन की वही मधुर वायु बह रही है। अपने घनिष्ठ सम्बन्ध में मैं वही प्रेमिका हूँ, फिर भी मेरा मन यहाँ सुखी नहीं है। मैं रेवा नदी के तट पर स्थित वेतसी वृक्ष के नीचे वापस जाने के लिए उत्सुक हूँ। यही मेरी उत्कण्ठा है।'"

तात्पर्य

यह श्रील रूप गोस्वामी कृत *पद्यावली* का (३८६) श्लोक है।

এই শ্লোক মহাপ্রভু পড়ে বার বার ।
স্বরূপ বিনা অর্থ কেহ না জানে ইহার ॥ ১২২॥

এই শ্লোক মহাপ্রভু পড়ে বার বার ।
স্বরূপ বিনা অর্থ কেহ না জানে ইহার ॥ ১২২॥

एइ श्लोक—यह श्लोक; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **पड़े**—पढ़ा; **बार बार**—बारम्बार; **स्वरूप विना**—स्वरूप दामोदर के अतिरिक्त; **अर्थ**—तात्पर्य; **केह**—कोई भी; **ना जाने**—नहीं जानता था; **इहार**—इसका।

अनुवाद

श्री चैतन्य महप्रभु इस श्लोक को बारम्बार पढ़ रहे थे, किन्तु स्वरूप दामोदर के अलावा इसका अर्थ अन्य कोई नहीं समझ सका।

এই শ্লোকার্থ পূর্বে করিয়াছি ব্যাখ্যান ।
শ্লোকের ভাবার্থ করি সঙ্ক্ষেপে আখ্যান ॥১২৩॥

एइ श्लोकार्थ पूर्वे करियाछि व्याख्यान ।
श्लोकेर भावार्थ करि सङ्क्षेपे आख्यान ॥१२३॥

एइ श्लोक-अर्थ—इस श्लोक का अर्थ; **पूर्वे**—पहले; **करियाछि**—मैंने की है; **व्याख्यान**—व्याख्या; **श्लोकेर**—उसी श्लोक का; **भाव-अर्थ**—भावार्थ; **करि**—मैं करता हूँ; **सङ्क्षेपे**—संक्षेप में; **आख्यान**—वर्णन।

अनुवाद

मैं इस श्लोक की व्याख्या पहले ही कर चुका हूँ। अब मैं संक्षेप में इसका वर्णन करूँगा।

तात्पर्य

इस सम्बन्ध में देखें मध्यलीला, अध्याय १, श्लोक ५३, ७७-८० तथा ८२-८४।

পূর্বে যৈছে কুরুক্ষেত্রে সব গোপী-গণ ।
কৃষ্ণের দর্শন পাঞা আনন্দিত মন ॥১২৪॥

पूर्वे यैछे कुरुक्षेत्रे सब गोपी-गण ।
कृष्णेर दर्शन पाञा आनन्दित मन ॥१२४॥

पूर्वे यैछे—जैसे पहले; **कुरु-क्षेत्रे**—कुरुक्षेत्र में; **सब गोपी-गण**—वृन्दावन की सारी गोपियाँ; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **दर्शन**—दर्शन; **पाञा**—पाकर; **आनन्दित मन**—मन में अत्यन्त आनन्दित हुईं।

अनुवाद

पहले, जब वृन्दावन की सारी गोपियाँ कृष्ण से कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि में मिलीं, तो वे परम प्रसन्न हुईं।

जगन्नाथ देखि' प्रभुर से भाव उठिल ।
सेइ भावाविष्ट हञा धुया गाओयाइल ॥ १२५॥
जगन्नाथ देखि' प्रभुर से भाव उठिल ।
सेइ भावाविष्ट हञा धुया गाओयाइल ॥ १२५॥

जगन्नाथ देखि'—भगवान् जगन्नाथ को देखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **से भाव**—वह भाव; **उठिल**—उठा, जाग पड़ा; **सेइ**—जो; **भाव-आविष्ट**—भावाविष्ट होकर; **हञा**—होकर; **धुया**—स्थायी (टेक); **गाओयाइल**—गवाया।

अनुवाद

इसी तरह भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु में गोपी-भाव जाग्रत हुआ। इस भाव में मग्न होने के कारण उन्होंने स्वरूप दामोदर से कहा कि वे टेक गायें।

अवशेषे राधा कृष्णे करे निवेदन ।
सेइ तुमि, सेइ आमि, सेइ नव सङ्गम ॥ १२६॥
अवशेषे राधा कृष्णे करे निवेदन ।
सेइ तुमि, सेइ आमि, सेइ नव सङ्गम ॥ १२६॥

अवशेषे—अन्त में; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण को; **करे**—किया; **निवेदन**—निवेदन; **सेइ तुमि**—आप वही कृष्ण हैं; **सेइ आमि**—मैं वही राधारानी हूँ; **सेइ नव सङ्गम**—हम पहले जैसे ही नये उत्साह में मिल रहे हैं।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भगवान् जगन्नाथ से इस प्रकार कहा, "आप वही कृष्ण हैं और मैं वही राधारानी हूँ। हम पुनः उसी प्रकार मिल रहे हैं, जिस तरह हम अपने जीवन के प्रारम्भ में मिले थे।

তথাপি আমার মন হরে বৃন্দাবন ।
বৃন্দাবনে উদয় করাও আপন-চরণ ॥ ১২৭ ॥

তথাপি আমার মন হরে বৃন্দাবন ।
বৃন্দাবনে উদয় করাও আপন-চরণ ॥ ১২৭ ॥

তথাপি—फिर भी; **আমার**—मेरा; **মন**—मन; **হরে**—आकर्षित करता है; **বৃন্দাবন**—श्री वृन्दावन; **বৃন্দাবনে**—वृन्दावन में; **উদয় করাও**—कृपया पुनः प्रकट कराओ; **আপন-চরণ**—अपने चरणकमलों की ज्योति।

अनुवाद

"यद्यपि हम दोनों वही हैं, किन्तु आज भी मेरा मन वृन्दावन-धाम के प्रति आकृष्ट होता है। मेरी इच्छा है कि आप पुनः वृन्दावन में अपने चरणकमल रखें।

ইহাঁ লোকারণ্য, হাতী, ঘোড়া, রথ-ধ্বনি ।
তাহাঁ পুষ্পারণ্য, ভৃঙ্গ-পিক-নাদ শুনি ॥ ১২৮ ॥

ইহাঁ লোকারণ্য, হাতী, ঘোড়া, রথ-ধ্বনি ।
তাহাঁ পুষ্পারণ্য, ভৃঙ্গ-পিক-নাদ শুনি ॥ ১২৮ ॥

ইহাঁ—इस स्थान (कुरुक्षेत्र में); **লোক-অরণ্য**—लोगों की बड़ी भीड़; **হাতী**—हाथी; **ঘোড়া**—घोड़े; **রথ-ধ্বনি**—रथ-ध्वनि; **তাহাঁ**—वहाँ वृन्दावन में; **পুষ্প-অরণ্য**—पुष्पों के उद्यान; **ভৃঙ্গ**—भौंरे; **পিক**—पक्षियों की; **নাদ**—ध्वनि; **শুনি**—मैं सुनती हूँ।

अनुवाद

"कुरुक्षेत्र में लोगों की भीड़ है; उनके हाथी, घोड़े तथा घर्र घर्र करते रथ हैं। किन्तु वृन्दावन में फूलों के बाग हैं और उनमें मधुमक्खियों की गुंजार तथा पक्षियों की चहचहाहट सुनी जा सकती है।

ইহাঁ রাজ-বেশ, সঙ্গে সব ক্ষত্রিয়-গণ ।
তাহাঁ গোপ-বেশ, সঙ্গে মুরলী-বাদন ॥ ১২৯ ॥

ইহাঁ রাজ-বেশ, সঙ্গে সব ক্ষত্রিয়-গণ ।
তাহাঁ গোপ-বেশ, সঙ্গে মুরলী-বাদন ॥ ১২৯ ॥

इहाँ—यहाँ कुरुक्षेत्र में; **राज-वेश**—राज-वेश में; **सङ्गे**—आपके साथ; **सब**—सभी; **क्षत्रिय-गण**—महान् योद्धा; **ताहाँ**—वहाँ वृन्दावन में; **गोप-वेश**—गोप-वेश में; **सङ्गे**—आपके संग; **मुरली-वादन**—आप की दिव्य बाँसुरी का वादन।

अनुवाद

"यहाँ कुरुक्षेत्र में आप राजसी वेश में हैं और आपके साथ बड़े-बड़े योद्धा हैं, किन्तु वृन्दावन में आप सामान्य ग्वालबाल की तरह अपनी सुन्दर मुरली लिए प्रकट हुए थे।

ব্রজে তোমার সঙ্গে যেই সুখ-আস্বাদন ।
সেই সুখ-সমুদ্রের ইহাঁ নাহি এক কণ ॥১৩০॥

व्रजे तोमार सङ्गे येइ सुख-आस्वादन ।
सेइ सुख-समुद्रेर इहाँ नाहि एक कण ॥१३०॥

व्रजे—वृन्दावन में; **तोमार**—आपके; **सङ्गे**—संग में; **येइ**—जो; **सुख-आस्वादन**—दिव्य आनन्द का आस्वादन; **सेइ**—वह; **सुख-समुद्रेर**—दिव्य आनन्द के सागर का; **इहाँ**—यहाँ कुरुक्षेत्र में; **नाहि**—नहीं हैं; **एक**—एक; **कण**—कण।

अनुवाद

"यहाँ पर उस सुखसागर की एक बूँद भी नहीं है, जिसका आनन्द मैं वृन्दावन में आपके साथ लेती थी।

আমা লঞা পুনঃ লীলা করহ বৃন্দাবনে ।
তবে আমার মনো-বাঞ্ছা হয় ত' পূরণে ॥১৩১॥

आमा लञा पुनः लीला करह वृन्दावने ।
तबे आमार मनो-वाञ्छा हय त' पूरणे ॥१३१॥

आमा लञा—मुझे लेकर; **पुनः**—पुनः; **लीला**—लीलाएँ; **करह**—करो; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **तबे**—तब; **आमार मनः-वाञ्छा**—मेरे मन की इच्छा; **हय**—होगी; **त'**—निस्सन्देह; **पूरणे**—पूर्ण।

अनुवाद

"अतएव मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप वृन्दावन आयें और मेरे

साथ लीलाविलास करें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो मेरी मनोकामना पूरी हो जायेगी।"

ভাগবতে আছে যৈছে রাধিকা-বচন ।
পূর্বে তাহা সূত্র-মধ্যে করিয়াছি বর্ণন ॥১৩২॥

भागवते आछे यैछे राधिका-वचन ।
पूर्वे ताहा सूत्र-मध्ये करियाछि वर्णन ॥१३२॥

भागवते—श्रीमद्भागवत में; **आछे**—है; **यैछे**—जैसे; **राधिका-वचन**—श्रीमती राधारानी का कथन; **पूर्वे**—पहले; **ताहा**—वह; **सूत्र-मध्ये**—रूपरेखा में; **करियाछि वर्णन**—मैंने वर्णन किया है।

अनुवाद

मैं पहले ही श्रीमद्भागवत से श्रीमती राधारानी के कथन का संक्षिप्त वर्णन कर चुका हूँ।

সেই ভাবাবেশে প্রভু পড়ে আর শ্লোক ।
সেই সব শ্লোকের অর্থ নাহি বুঝে লোক ॥১৩৩॥

सेइ भावावेशे प्रभु पड़े आर श्लोक ।
सेइ सब श्लोकेर अर्थ नाहि बुझे लोक ॥१३३॥

सेइ—उसी; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पड़े**—पढ़ते हैं; **आर**—एक अन्य; **श्लोक**—श्लोक; **सेइ**—वे; **सब श्लोकेर**—सब श्लोकों का; **अर्थ**—अर्थ; **नाहि**—नहीं; **बुझे**—समझते; **लोक**—सामान्य लोग।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस भावावेश में अन्य कई श्लोक सुनाये, किन्तु सामान्य लोग उनका अर्थ नहीं समझ सके।

স্বরূপ-গোসাঞি জানে, না কহে অর্থ তার ।
শ্রী-রূপ-গোসাঞি কৈল সে অর্থ প্রচার ॥১৩৪॥

स्वरूप-गोसाञि जाने, ना कहे अर्थ तार ।
श्री-रूप-गोसाञि कैल से अर्थ प्रचार ॥१३४॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **जाने**—जानते हैं; **ना**—नहीं; **कहे**—किया; **अर्थ**—अर्थ; **तार**—उन श्लोकों के; **श्री-रूप-गोसाञि**—श्री रूप गोस्वामी; **कैल**—किया; **से**—उस; **अर्थ**—अर्थ का; **प्रचार**—प्रचार।

अनुवाद

इन श्लोकों का अर्थ स्वरूप दामोदर गोस्वामी को ज्ञात था, किन्तु उन्होंने इसे प्रकट नहीं किया। फिर भी श्री रूप गोस्वामी ने इसका अर्थ विज्ञापित किया है।

स्वरूप सङ्गे यार अर्थ करे आस्वादन ।
नृत्य-मध्ये सेई श्लोक करेन पठन ॥ १३५॥

स्वरूप सङ्गे यार अर्थ करे आस्वादन ।
नृत्य-मध्ये सेइ श्लोक करेन पठन ॥ १३५॥

स्वरूप सङ्गे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी के संग में; **यार**—जिसका; **अर्थ**—अर्थ; **करे**—करते हैं; **आस्वादन**—आस्वादन; **नृत्य-मध्ये**—नृत्य के मध्य; **सेइ श्लोक**—वह श्लोक; **करेन पठन**—पढ़ते हैं।

अनुवाद

नाचते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने निम्नलिखित श्लोक पढ़ना शुरू किया, जिसका आस्वादन उन्होंने स्वरूप दामोदर गोस्वामी के साथ किया।

आहुश्च ते नलिन-नाभ पदारविन्दं
योगेश्वरैर्हृदि विचिन्त्यमगाध-बोधैः ।
संसार-कूप-पतितोत्तरणावलम्बं
गेहं जुषामपि मनस्युदियात्सदा नः ॥ १३६॥

आहुश्च ते नलिन-नाभ पदारविन्दं
योगेश्वरैर्हृदि विचिन्त्यमगाध-बोधैः ।
संसार-कूप-पतितोत्तरणावलम्बं
गेहं जुषामपि मनस्युदियात्सदा नः ॥ १३६॥

आहुः—गोपियों ने कहा; **च**—और; **ते**—आपका; **नलिन-नाभ**—हे भगवान्, जिसकी नाभि कमल के पुष्प जैसी है; **पद-अरविन्दम्**—चरणकमल; **योग-ईश्वरैः**—महान् योगियों

के; **हृदि**—हृदय में; **विचिन्त्यम्**—ध्यान करने योग्य हैं; **अगाध-बोधैः**—जो अति विद्वान दार्शनिक हैं; **संसार-कूप**—भौतिक संसार रूपी अन्धे कुएँ में; **पतित**—उन पतितों के; **उत्तरण**—उद्धार के लिए; **अवलम्बम्**—एकमात्र आश्रय; **गेहम्**—पारिवारिक कार्यों में; **जुषाम्**—व्यस्त; **अपि**—यद्यपि; **मनसि**—मनों में; **उदियात्**—जागृत हो; **सदा**—सदा; **नः**—हमारे।

अनुवाद

"[गोपियाँ इस प्रकार बोलीं :] "हे कमल-नाभ, जो लोग भौतिक संसाररूपी गहरे कुएँ में गिर चुके हैं, उनके लिए आपके चरणकमल ही एकमात्र आश्रय हैं। आपके चरणों की पूजा तथा उनका ध्यान बड़े-बड़े योगी तथा विद्वान दार्शनिक करते हैं। हम चाहती हैं कि वे ही चरणकमल हमारे हृदयों में भी उदित हों, यद्यपि हम सभी गोपियाँ गृहस्थी के कार्यों में संलग्न रहने वाली सामान्य स्त्रीयाँ हैं।"

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (१०.८२.४८) का है। गोपियों को कभी भी कर्म-योग, ज्ञानयोग या ध्यानयोग में रुचि नहीं थी। वे तो एकमात्र भक्तियोग में रुचि रखती थीं। जब तक उन्हें बाध्य नहीं किया गया, उन्होंने भगवान् के चरणकमलों का ध्यान करना नहीं चाहा। प्रत्युत वे उन चरणकमलों को अपने वक्षस्थलों पर रखना चाहती थीं। कभी-कभी उन्हें खेद होता था कि उनके वक्षस्थल इतने कठोर हैं, जिससे उन्हें भय था कि कृष्ण अपने कोमल चरणकमल उन पर न रखना चाहें। जब वृन्दावन के चरागाहों के बालू के कण उनके चरणकमलों में गड़ जाते, तो गोपियों को वेदना होती और वे रोने लगतीं। गोपियाँ कृष्ण को हमेशा अपने पास घर पर रखना चाहती थीं। इस प्रकार उनके मन कृष्णभावनामृत में मग्न रहते थे। ऐसी शुद्ध कृष्णभावना केवल वृन्दावन में ही प्रकट हो सकती है। इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु गोपी-भाव से संतृप्त अपने मन की बात बताने लगे।

অন্যের হৃদয়—মন, মোর মন—বৃন্দাবন,
'মনে' 'বনে' এক করি' জানি ।

তাহাঁ তোমার পদ-দ্বয়, করাহ যদি উদয়,
তবে তোমার পূর্ণ কৃপা মানি ॥ ১৩৭॥

অন্যের হৃদয়—মন, মোর মন—বৃন্দাবন,
'মনে' 'বনে' এক করি' জানি ।
তাহাঁ তোমার পদ-দ্বয়, করাহ যদি উদয়,
তবে তোমার পূর্ণ কৃপা মানি ॥ ১৩৭॥

অন্যের—दूसरों के; **হৃদয়**—हृदय; **মন**—मन; **মোর মন**—मेरा मन; **বৃন্দাবন**—वृन्दावन की चेतना; **মনে**—मन के साथ; **বনে**—वृन्दावन के साथ; **এক করি'**—एक करके; **জানি**—मैं जानती हूँ; **তাহাঁ**—वहाँ वृन्दावन में; **তোমার**—आपके; **পদ-দ্বয়**—दोनों चरणकमल; **করাহ**—करो; **যদি**—यदि; **উদয়**—प्रकट; **তবে**—तब; **তোমার**—आपकी; **পূর্ণ**—पूर्ण; **কৃপা**—कृपा; **মানি**—मैं मानूँ।

अनुवाद

श्रीमती राधारानी के भाव में श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "अधिकांश लोगों के लिए मन तथा हृदय एक होते हैं, किन्तु मेरा मन कभी भी वृन्दावन से अलग नहीं होता, अतएव मैं अपने मन और वृन्दावन को एक मानती हूँ। मेरा मन पहले से वृन्दावन है और चूँकि आप वृन्दावन को पसन्द करते हैं, तो क्या आप अपने चरणकमल वहाँ रखेंगे? इसे मैं आपकी पूर्ण कृपा मानूँगी।

तात्पर्य

मन का काम है सोचना, महसूस करना तथा इच्छा करना। इसी के द्वारा मन भौतिक रूप से अनुकूल वस्तुओं को स्वीकार करता है और प्रतिकूल वस्तुओं का त्याग करता है। साधारण लोगों की ऐसी ही चेतना रहती है। लेकिन जब मन कुछ भी स्वीकार या त्याग नहीं करता और केवल भगवान् के चरणकमलों में दृढ़ता से स्थित रहता है, तो उसका मन वृन्दावन के समान बन जाता है। जहाँ कृष्ण हैं, वहीं श्रीमती राधारानी, गोपियाँ, ग्वाल-बाल तथा अन्य सभी व्रजवासी हैं। जैसे ही कोई अपना मन कृष्ण पर केन्द्रित करता है, वैसे ही उसका मन वृन्दावन के समान बन जाता है। दूसरे शब्दों में, जब किसी का मन पूरी तरह भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो जाता है और पूर्ण पुरूषोत्तम

भगवान् की सेवा में ही लगा रहता है, तब वह भक्त कहीं और नहीं, केवल वृन्दावन में ही निवास करता है।

प्राण-नाथ, शुन मोर सत्य निवेदन
व्रज—आमार सदन, ताहाँ तोमार सङ्गम, ।
ना पाइले ना रहे जीवन ॥ १३८॥

प्राण-नाथ, शुन मोर सत्य निवेदन
व्रज—आमार सदन, ताहाँ तोमार सङ्गम, ।
ना पाइले ना रहे जीवन ॥ १३८॥

प्राण-नाथ—हे मेरे प्राणनाथ; **शुन**—कृपया सुनें; **मोर**—मेरा; **सत्य**—सत्य; **निवेदन**—प्रार्थना; **व्रज**—वृन्दावन; **आमार**—मेरा; **सदन**—घर; **ताहाँ**—वहाँ; **तोमार**—आपका; **सङ्गम**—संग; **ना पाइले**—यदि मुझे नहीं मिला; **ना**—नहीं; **रहे**—रहेगा; **जीवन**—जीवन।

अनुवाद

"हे प्रभु, कृपया मेरी सच्ची विनती सुनें। मेरा घर वृन्दावन है और मैं वहाँ आपका सान्निध्य चाहती हूँ। किन्तु यदि मुझे सान्निध्य नहीं मिला, तो मेरा जीवन दूभर हो जायेगा।

तात्पर्य

जब मनुष्य का मन उपाधियों से मुक्त रहता है, तभी वह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के सान्निध्य की इच्छा कर सकता है। मन के लिए कुछ-न कुछ-कार्य होना चाहिए। यदि मनुष्य को भौतिक बातों से मुक्त होना है, तो उसका मन खाली नहीं रह सकता। उसके पास सोचने, अनुभव करने तथा चाहने के लिए कुछ-न-कुछ होना ही चाहिए। यदि मनुष्य का मन कृष्ण-सम्बन्धी विचारों से, कृष्ण के लिए भावों से, और कृष्ण की सेवा करने की इच्छा से नहीं भरा है, तो उसका मन भौतिक कार्यकलापों से भर जायेगा। जिन्होंने सारे भौतिक कार्यकलापों का परित्याग कर दिया है और उनके विषय में सोचना बन्द कर दिया है, उन्हें कृष्ण का चिन्तन करने की अभिलाषा बनाये रखनी चाहिए। कृष्ण के बिना मनुष्य रह नहीं सकता, जिस तरह वह अपने मन के किसी मनोरंजन के बिना नहीं रह सकता।

পূর্বে উদ্ধব-দ্বারে, এবে সাক্ষাতামারে,
যোগ-জ্ঞানে কহিলা উপায় ।
তুমি—বিদগ্ধ, কৃপাময়, জানহ আমার হৃদয়,
মোরে ঐছে কহিতে না যুয়ায় ॥ ১৩৯॥

পূর্বে উদ্ধব-দ্বারে, এবে সাক্ষাতামারে,
য়োগ-জ্ঞানে কহিলা উপায় ।
তুমি—বিদগ্ধ, কৃপাময়, জানহ আমার হৃদয়,
মোরে ঐছে কহিতে না য়ুয়ায় ॥ ১৩৯॥

পূর্বে—पहले; **উদ্ধব-দ্বারে**—उद्धव द्वारा; **এবে**—अब; **সাক্ষাত্**—साक्षात्; **আমারে**—मुझे; **য়োগ**—योग-ध्यान; **জ্ঞানে**—तार्किक ज्ञान; **কহিলা**—आपने कहा है; **উপায়**—उपाय; **তুমি**—आप; **বিদগ্ধ**—अत्यन्त चतुर; **কৃপা-ময়**—कृपालु; **জানহ**—आप जानते हो; **আমার**—मेरा; **হৃদয়**—मन; **মোরে**—मुझे; **ঐছে**—उस तरह; **কহিতে**—कहने के लिए; **না য়ুয়ায়**—बिल्कुल योग्य नहीं है।

अनुवाद

"हे कृष्ण, जब आप पहले मथुरा में रह रहे थे, तब आपने मुझे योग तथा ज्ञान की शिक्षा देने के लिए उद्धव को भेजा था। अब आप स्वयं वही बात कह रहे हैं, किन्तु मेरा मन उसे स्वीकार नहीं करता। मेरे मन में ज्ञानयोग या ध्यानयोग के लिए कोई स्थान नहीं है। यद्यपि आप मुझे अच्छी तरह से जानते हैं, फिर भी ज्ञानयोग तथा ध्यानयोग का उपदेश दे रहे हैं। ऐसा करना आपके लिए उचित नहीं है।"

तात्पर्य

जो कृष्ण के विचारों में सदा मग्न रहता है, उसे परम सत्य की खोज करने की चिन्तन-विधि अर्थात् योग की विधि अच्छी नहीं लगती। भक्त कभी भी चिन्तनशील कार्यों में रुचि नहीं दिखाता। उसे ज्ञान का अनुशीलन या योग का अभ्यास करने के बजाय मन्दिर में अर्चाविग्रह की पूजा करने और भगवान् की सेवा में निरन्तर लगे रहना चाहिए। मन्दिर में अर्चाविग्रह की पूजा को भक्तगण भगवान् की प्रत्यक्ष सेवा मानते हैं। भगवान् की मूर्ति अर्चाविग्रह या अर्चा-अवतार कहलाती है, जो परम भगवान् का भौतिक पदार्थ (पीतल, पत्थर या लकड़ी) में प्राकट्य होता है। अन्ततः पदार्थ में प्रकट कृष्ण अथवा आत्मा में

प्रकट कृष्ण में कोई अन्तर नहीं होता, क्योंकि दोनों ही उनकी शक्तियाँ हैं। कृष्ण के लिए पदार्थ और आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। अत: भौतिक रूप में उनका प्राकट्य उनके मूल रूप *सच्चिदानन्द विग्रह* जितना ही अच्छा है। शास्त्रों द्वारा निर्धारित तथा गुरु द्वारा बतलाये गये विधि-विधानों के अनुसार अर्चाविग्रह पूजा में संलग्न भक्त को क्रमश: अनुभव होता है कि वह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के प्रत्यक्ष सम्पर्क में है। अत: वह तथाकथित ध्यान, योगाभ्यास एवं मानसिक तर्कवितर्क में रुचि नहीं लेता।

চিত্ত কাড়ি' তোমা হৈতে, বিষয়ে চাহি লাগাইতে,
যত্ন করি, নারি কাড়িবারে ।
তারে ধ্যান শিক্ষা করাহ, লোক হাসাঞা মার,
স্থানাস্থান না কর বিচারে ॥ ১৪০ ॥

चित्त काड़ि' तोमा हैते, विषये चाहि लागाइते,
यत्न करि, नारि काड़िबारे ।
तारे ध्यान शिक्षा कराह, लोक हासाञा मार,
स्थानास्थान ना कर विचारे ॥ १४० ॥

चित्त काड़ि'—चेतना समेटकर; **तोमा हैते**—आपसे; **विषये**—लौकिक विषयों में; **चाहि**—मैं चाहता हूँ; **लागाइते**—लगाना; **यत्न करि**—मैं प्रयास करता हूँ; **नारि काड़िबारे**—मैं वापस नहीं ले सकता; **तारे**—ऐसे सेवक को; **ध्यान**—ध्यान की; **शिक्षा**—शिक्षा; **कराह**—आप देते हो; **लोक**—सामान्य लोग; **हासाञा**—हँसाना; **मार**—आप मार रहे हो; **स्थान-अस्थान**—उचित अथवा अनुचित स्थान; **ना कर**—न करो; **विचारे**—विचार।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "मैं अपनी चेतना आपसे हटाकर भौतिक कार्यों में लगाना चाहती हूँ, लेकिन लाख प्रयत्न करके भी ऐसा नहीं कर पाती। मैं स्वभाव से आपकी ओर उन्मुख हूँ। अतएव आपका यह उपदेश कि मैं आपका ध्यान करूँ, अत्यन्त हास्यास्पद प्रतीत होता है। इस तरह आप तो मुझे मारे डाल रहे हैं। आपके लिए अच्छा नहीं है कि आप मुझे अपने उपदेशों का पात्र समझें।

तात्पर्य

भक्तिरसामृतसिन्धु (१.१.११) में श्रील रूप गोस्वामी ने कहा है :

अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञान कर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा॥

शुद्ध भक्त के लिए योग के अभ्यास या ज्ञान के अनुशीलन में लगने के लिए अवकाश ही नहीं रहता। शुद्ध भक्त के लिए वास्तव में ऐसे अनावश्यक कार्यों में मन लगा पाना असम्भव है। यदि शुद्ध भक्त चाहे तो भी उसका मन उसे ऐसा नहीं करने देता। शुद्ध भक्त की यही विशेषता है—वह सकाम कर्म, चिन्तन-दर्शन या योग-ध्यान से परे होता है। इसीलिए गोपियों ने अपनी अभिव्यक्ति इस प्रकार की।

নহে গোপী যোগেশ্বর, পদ-কমল তোমার,
ধ্যান করি' পাইবে সন্তোষ ।
তোমার বাক্য-পরিপাটী, তার মধ্যে কুটিনাটী,
শুনি' গোপীর আরো বাঢ়ে রোষ ॥ ১৪১॥

নহে গোপী য়োগেশ্বর, পদ-কমল তোমার,
ধ্যান করি' পাইবে সন্তোষ ।
তোমার বাক্য-পরিপাটী, তার মধ্যে কুটিনাটী,
শুনি' গোপীর আরো বাঢ়ে রোষ ॥ १४१ ॥

নহে—नहीं; **গোপী**—गोपियाँ; **য়োগেশ্বর**—योगाभ्यास में दक्ष; **পদ-কমল তোমার**—आपके चरणकमल; **ধ্যান করি'**—ध्यान से; **পাইবে সন্তোষ**—हमें सन्तोष मिलता है; **তোমার**—आपके; **বাক্য**—कथन; **পরিপাটী**—अत्यन्त कृपापूर्वक रचित; **তার মধ্যে**—उसके मध्य; **কুটিনাটী**—छल; **শুনি'**—सुनकर; **গোপীর**—गोपियों का; **আরো**—और अधिक; **বাঢ়ে**—बढ़ता है; **রোষ**—क्रोध।

अनुवाद

"गोपियाँ योगियों जैसी नहीं हैं। वे आपके चरणकमलों का ध्यान करने एवं तथाकथित योगियों का अनुकरण करने मात्र से कभी तुष्ट नहीं होंगी। गोपियों को ध्यान की शिक्षा देना एक अन्य प्रकार का छल है। जब

उन्हें योगाभ्यास करने का उपदेश दिया जाता है, तब वे तनिक भी सन्तुष्ट नहीं होतीं। उल्टे वे आपसे और अधिक नाराज हो जाती हैं।"

तात्पर्य

श्रील प्रबोधानन्द सरस्वती ने *चैतन्य चन्द्रामृत* (५) में कहा है :

कैवल्यं नरकायते त्रिदशपूराकाशपुष्पायते
दुर्दान्तेन्द्रियकालसर्पपटली प्रोत्खातदंष्ट्रायते।
विश्वं पूर्णसुखायते विधिमहेन्द्रादिश्च कीटायते
यत्कारुण्यकटाक्षवैभववतां तं गौरमेव स्तुमः॥

जिस शुद्ध भक्त ने श्री चैतन्य महाप्रभु के माध्यम से कृष्णभावनामृत की अनुभूति पा ली है, उसके लिए अद्वैतवादी दर्शन, जिससे वह परम से एकाकार हो जाता है, नरक के समान प्रतीत होता है। शुद्ध भक्त के लिए वह योगाभ्यास, जिससे मन को वश में किया जाता है और इन्द्रियों को संयमित किया जाता है, हास्यास्पद प्रतीत होता है। भक्त का मन तथा इन्द्रियाँ पहले से भगवान् की दिव्य सेवा में लगी रहती हैं। इस तरह इन्द्रिय-कार्यों का विषैला प्रभाव हट जाता है। यदि किसी का मन सदैव भगवान् की सेवा में व्यस्त रहता है, तो उसके लिए भौतिक दृष्टि से सोचने, अनुभव करने या कर्म करने की सम्भावना नहीं रह जाती। इसी तरह सकाम कर्मी द्वारा स्वर्ग प्राप्त करने का प्रयास भी भक्त के लिए मायाजाल प्रतीत होता है। अन्ततः सारे स्वर्गीय ग्रह भौतिक हैं और कालक्रम में वे विनष्ट हो जायेंगे। भक्त कभी ऐसी नश्वर वस्तुओं की परवाह नहीं करते। वे दिव्य भक्तिमय कार्यकलापों में लगे रहते हैं, क्योंकि वे आध्यात्मिक जगत् में उन्नत होना चाहते हैं, जहाँ वे शान्तिपूर्वक सनातन रूप से कृष्ण के पूर्ण ज्ञान से युक्त होकर रह सकते हैं। वृन्दावन में सारी गोपियाँ, ग्वालबाल, यहाँ तक कि बछड़े, गायें, वृक्ष तथा जल भी पूर्णतया कृष्णभावनाभावित होते हैं। वे कृष्ण के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु से तुष्ट नहीं होते।

देह-स्मृति नाहि यार, संसार-कूप काहाँ तार,
ताहा हैते ना चाहे उद्धार ।

বিরহ-সমুদ্র-জলে, কাম-তিমিঙ্গিলে গিলে,
গোপী-গণে নেহ' তার পার ॥ ১৪২॥

देह-स्मृति नाहि यार, संसार-कूप काहाँ तार,
ताहा हैते ना चाहे उद्धार ।
विरह-समुद्र-जले, काम-तिमिङ्गिले गिले,
गोपी-गणे नेह' तार पार ॥ १४२॥

देह-स्मृति—देहात्म बोध; **नाहि**—नहीं; **यार**—जिसका; **संसार-कूप**—भौतिक जीवन का अन्धा कूप; **काहाँ**—कहाँ है; **तार**—उसका; **ताहा हैते**—उससे; **ना**—नहीं; **चाहे**—चाहते; **उद्धार**—उद्धार; **विरह-समुद्र-जले**—विरह-समुद्र के जल में; **काम-तिमिङ्गिले**—तिमिंगिल मछली से रूप में दिव्य कामदेव; **गिले**—निगल जाती हैं; **गोपी-गणे**—गोपियाँ; **नेह'**—कृपया निकाल लो; **तार पार**—उसके पार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "गोपियाँ विरह रूपी महासागर में गिर गईं हैं और उन्हें आपकी सेवा करने की अभिलाषा रूपी तिमिंगल मछली निगले जा रही है। शुद्ध भक्त होने के कारण गोपियों को इन तिमिंगल मछलियों से बचाना है। उन्हें जीवन की भौतिक अनुभूति नहीं है, तो फिर वे मुक्ति की आकांक्षा क्यों करें? गोपियों को योगियों तथा ज्ञानियों द्वारा अभीष्ट मुक्ति नहीं चाहिए, क्योंकि वे पहले से ही भौतिक अस्तित्व के सागर से मुक्त हो चुकी हैं।

तात्पर्य

देहात्म बोध की उत्पत्ति भौतिक भोग की इच्छा से होती है। यह *विषद स्मृति* कहलाती है, जो असली जीवन के विपरीत है। जीव तो कृष्ण का सनातन दास है, किन्तु जब वह भौतिक जगत् का भोग करना चाहता है, तब वह आध्यात्मिक जीवन में प्रगति नहीं कर पाता। भौतिक दृष्टि से अग्रसर होने वाला व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता। *श्रीमद्भागवत* (७.५.३०) में भी यही कहा गया है—*अदान्तगोभिर्विशतां तमिस्रं पुनः पुनश्चर्वित चर्वणानाम्*—असंयमित इन्द्रियों द्वारा मनुष्य नरक की ओर अग्रसर होता है। वह पहले से चबायी हुई वस्तु को चबाता रह सकता है, अर्थात् बारम्बार जन्म तथा मृत्यु को प्राप्त होता है। बद्धजीव जन्म तथा मृत्यु के बीच की अवधि का उपयोग

घिसेपिटे कार्यों—आहार, निद्रा, भय और मैथुन में करते हैं। निम्न पशु-योनियों में भी हमें ये ही कार्य मिलते हैं। चूँकि ये कार्यकलाप बारम्बार किये जाते हैं, अतएव उनमें अपने आपको लगाना चबाये हुए को फिर से चबाने जैसा है। यदि मनुष्य घिसेपिटे भौतिक जीवन में लगे रहने की अभिलाषा त्याग दे और कृष्णभावनामृत में लग जाये, तो वह भौतिक प्रकृति के कठोर नियमों से छूट जायेगा। उसे मुक्त होने के लिए अलग से प्रयास करने की जरूरत नहीं रहेगी। यदि वह भगवान् की सेवा मात्र में अपने आपको लगा सके, तो उसका स्वत: उद्धार हो जायेगा। इसीलिए श्रील बिल्वमंगल ठाकुर ने कहा है—*मुक्ति: स्वयं मुकुलिताञ्जलि सेवतेऽस्मान्*—"मुक्ति तो मेरे समक्ष हाथ जोड़कर खड़ी रहती है और मेरी सेवा करने की भीख माँगती रहती है।"

বৃন্দাবন, গোবর্ধন, যমুনা-পুলিন, বন,
সেই কুঞ্জে রাসাদিক লীলা ।
সেই ব্রজের ব্রজ-জন, মাতা, পিতা, বন্ধু-গণ,
বড় চিত্র, কেমনে পাসরিলা ॥ ১৪৩ ॥

वृन्दावन, गोवर्धन, यमुना-पुलिन, वन,
सेइ कुञ्जे रासादिक लीला ।
सेइ व्रजेर व्रज-जन, माता, पिता, बन्धु-गण,
बड़ चित्र, केमने पासरिला ॥ १४३ ॥

वृन्दावन—वृन्दावन की दिव्य भूमि; **गोवर्धन**—गोवर्धन पर्वत; **यमुना-पुलिन**—यमुना तट; **वन**—वे सभी वन जिनमें भगवान् की लीलाएँ सम्पन्न हुई; **सेइ कुञ्जे**—उस वन की झाड़ियाँ; **रास-आदिक लीला**—रास-नृत्य की लीलाएँ; **सेइ**—वे; **व्रजेर**—वृन्दावन के; **व्रज-जन**—व्रजवासी; **माता**—माता; **पिता**—पिता; **बन्धु-गण**—मित्रगण; **बड़ चित्र**—अत्यन्त विचित्र; **केमने पासरिला**—आप कैसे भूल गये हैं।

अनुवाद

"यह विचित्र बात है कि आप वृन्दावन की भूमि को भूल गये हैं। भला आप अपने पिता, माता तथा मित्रों को कैसे भूल गये? आपने गोवर्धन पर्वत, यमुना-तट तथा उस वन को, जहाँ आप रासनृत्य का आनन्द लूटते थे, किस तरह भुला दिया?

বিদগ্ধ, মৃদু, সদগুণ, সুশীল, স্নিগ্ধ, করুণ,
তুমি, তোমার নাহি দোষাভাস ।
তবে যে তোমার মন, নাহি স্মরে ব্রজ-জন,
সে—আমার দুর্দৈব-বিলাস ॥ ১৪৪॥

বিদগ্ধ, মৃদু, সদ্‌গুণ, সুশীল, স্নিগ্ধ, করুণ,
তুমি, তোমার নাহি দোষাভাস ।
তবে যে তোমার মন, নাহি স্মরে ব্রজ-জন,
সে—আমার দুর্দৈব-বিলাস ॥ ১৪৪॥

বিদগ্ধ—অতি সুসংস্কৃত; **মৃদু**—মৃদু; **সত্-গুণ**—সারে সদ্‌গুণোঁ সে যুক্ত; **সু-শীল**—সুশীল; **স্নিগ্ধ**—কোমল-হৃদয়; **করুণ**—দয়াবান; **তুমি**—আপ; **তোমার**—আপমেঁ; **নাহি**—নহীঁ হৈ; **দোষ-আভাস**—দোষ কা আভাস; **তবে**—ফির ভী; **যে**—নিস্সন্দেহ; **তোমার**—আপকা; **মন**—মন; **নাহি**—নহীঁ; **স্মরে**—স্মরণ করতা; **ব্রজ-জন**—বৃন্দাবন কে নিবাসিয়োঁ কো; **সে**—বহ; **আমার**—মেরা; **দুর্দৈব-বিলাস**—পূর্ব পাপোঁ কা ফল।

অনুবাদ

"হে কৃষ্ণ, আপ সমস্ত সদ্‌গুণোঁ সে যুক্ত শিষ্ট মহানুভাব হৈঁ। আপ সদাচারী হৈঁ, নম্র হৃদয় বালে তথা দয়ালু হৈঁ। মৈঁ জানতী হূঁ কি আপমেঁ দোষ কা লেশমাত্র ভী নহীঁ হৈ; ফির ভী আপকা মন বৃন্দাবনবাসিয়োঁ কা স্মরণ তক নহীঁ করতা। যহ হমারে দুর্ভাগ্য কে অলাবা ঔর ক্যা হো সকতা হৈ?

না গণি আপন-দুঃখ, দেখি' ব্রজেশ্বরী-মুখ,
ব্রজ-জনের হৃদয় বিদরে ।
কিবা মার' ব্রজ-বাসী, কিবা জীয়াও ব্রজে আসি',
কেন জীয়াও দুঃখ সহাইবারে? ॥ ১৪৫॥

না গণি আপন-দুঃখ, দেখি' ব্রজেশ্বরী-মুখ,
ব্রজ-জনের হৃদয় বিদরে ।
কিবা মার' ব্রজ-বাসী, কিবা জীয়াও ব্রজে আসি',
কেন জীয়াও দুঃখ সহাইবারে? ॥ ১৪৫॥

না গণি—মৈঁ পরবাহ নহীঁ করতী; **আপন-দুঃখ**—অপনে নিজী দুঃখ কো; **দেখি'**—দেখকর; **ব্রজেশ্বরী-মুখ**—মাতা যশোদা কা মুখ; **ব্রজ-জনের**—বৃন্দাবন কে সভী নিবাসিয়োঁ কে; **হৃদয় বিদরে**—হৃদয় ফট জাতে হৈঁ; **কিবা**—ক্যা; **মার' ব্রজ-বাসী**—আপ সভী বৃন্দাবন

के निवासियों को मार देना चाहते हो; **किबा**—अथवा; **जीयाओ**—आप उनको जीवित रखना चाहते हो; **व्रजे आसि'**—वृन्दावन में आकर; **केन**—क्यों; **जीयाओ**—उन्हें जीवित करते हो; **दुःख सहाइबारे**—दुःख झेलने के लिए।

अनुवाद

"मुझे अपने निजी दुःख की परवाह नहीं है, किन्तु जब मैं माता यशोदा का खिन्न मुखड़ा तथा आपके कारण समस्त वृन्दावनवासियों के भग्न हृदयों को देखती हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है कि आप कहीं उन सबको मारना तो नहीं चाहते। या आप यहाँ आकर उन्हें जीवनदान देना चाहते हैं? आप क्यों उन्हें कष्टप्रद स्थिति में जिन्दा रखना चाहते हैं?

তোমার যে অন্য বেশ, অন্য সঙ্গ, অন্য দেশ,
ব্রজ-জনে কভু নাহি ভায় ।
ব্রজ-ভূমি ছাড়িতে নারে, তোমা না দেখিলে মরে,
ব্রজ-জনের কি হবে উপায় ॥ ১৪৬॥

তোমার য়ে অন্য বেশ, অন্য সঙ্গ, অন্য দেশ,
ব্রজ-জনে কভু নাহি ভায় ।
ব্রজ-ভূমি ছাড়িতে নারে, তোমা না দেখিলে মরে,
ব্রজ-জনের কি হবে উপায় ॥ ১৪৬॥

তোমার—आपका; **য়ে**—वह; **अन्य वेश**—अन्य पोशाक; **अन्य सङ्ग**—अन्य साथी; **अन्य देश**—अन्य देश; **व्रज-जने**—वृन्दावन के निवासियों को; **कभु**—किसी समय; **नाहि**—नहीं; **भाय**—भाती; **व्रज-भूमि**—व्रज-भूमि; **छाड़िते नारे**—वे छोड़ना नहीं चाहते; **तोमा**—आपको; **ना**—नहीं; **देखिले**—देखकर; **मरे**—वे मर जाते हैं; **व्रज-जनेर**—वृन्दावन-वासियों का; **कि**—क्या; **हबे**—होगा; **उपाय**—उपाय।

अनुवाद

"वृन्दावन के निवासी आपको न तो राजकुमार के वेश में देखना चाहते हैं, न ही वे चाहते हैं कि आप अनजाने देश में महायोद्धाओं की संगति करें। वे वृन्दावन भूमि को छोड़ नहीं सकते और आपकी उपस्थिति के बिना वे सब मर रहे हैं। न जाने उनकी कैसी दशा होगी?

तुमि—ब्रजेर जीवन, ब्रज-राजेर प्राण-धन,
तुमि ब्रजेर सकल सम्पद् ।
कृपार्द्र तोमार मन, आसि' जीयाओ ब्रज-जन,
ब्रजे उदय कराओ निज-पद ॥ १४७॥

तुमि—व्रजेर जीवन, व्रज-राजेर प्राण-धन,
तुमि व्रजेर सकल सम्पद् ।
कृपार्द्र तोमार मन, आसि' जीयाओ व्रज-जन,
व्रजे उदय कराओ निज-पद ॥ १४७॥

तुमि—आप; **व्रजेर जीवन**—वृन्दावन के जीवन और प्राण; **व्रज-राजेर**—व्रज नरेश, नन्द महाराज के; **प्राण-धन**—प्राण-धन; **तुमि**—आप; **व्रजेर**—वृन्दावन का; **सकल सम्पद्**—सारा ऐश्वर्य; **कृपा-अर्द्र**—कृपा से द्रवित होकर; **तोमार मन**—आपका मन; **आसि'**—आकर; **जीयाओ**—जीवन दान करो; **व्रज-जन**—वृन्दावन के सभी निवासियों को; **व्रजे**—वृन्दावन में; **उदय कराओ**—प्रकट करो; **निज-पद**—अपने चरणकमल।

अनुवाद

"हे कृष्ण, आप वृन्दावन धाम के प्राण और आत्मा हैं। आप विशेषकर नन्द महाराज के जीवन हैं। आप वृन्दावन भूमि में एकमात्र ऐश्वर्य हैं और आप अत्यन्त कृपालु हैं। कृपा करके आइये और सभी वृन्दावनवासियों को जीवन दीजिये। कृपया वृन्दावन में पुनः अपने चरणकमल रखिये।"

तात्पर्य

श्रीमती राधारानी ने कृष्ण से अलग होने पर अपना निजी दुःख प्रकट नहीं किया। वे वृन्दावन धाम के अन्य सभी लोगों की दशा के प्रति कृष्ण के भावों को जगाना चाहती थीं यथा—माता यशोदा, नन्द महाराज, ग्वालबाल, गोपियाँ, पक्षि तथा यमुना-तट के भौरों, यमुना-जल, वृक्ष, जंगल तथा वृन्दावन से मथुरा जाने के पूर्व कृष्ण से सम्बन्धित सारा साज-सामान आदि। श्रीमती राधारानी के ये भाव श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रदर्शित किये जा रहे थे, अतएव उन्होंने भगवान् जगन्नाथ अर्थात् कृष्ण को वृन्दावन लौट चलने का आमन्त्रण दिया। जगन्नाथ पुरी से गुण्डिचा मन्दिर तक रथयात्रा के जाने का यही तात्पर्य है।

শুনিয়া রাধিকা-বাণী, ব্রজ-প্রেম মনে আনি,
ভাবে ব্যাকুলিত দেহ-মন ।
ব্রজ-লোকের প্রেম শুনি', আপনাকে 'ঋণী' মানি',
করে কৃষ্ণ তাঁরে আশ্বাসন ॥ ১৪৮ ॥

শুনিয়া রাধিকা-বাণী, ব্রজ-প্রেম মনে আনি,
ভাবে ব্যাকুলিত দেহ-মন ।
ব্রজ-লোকের প্রেম শুনি', আপনাকে 'ঋণী' মানি',
করে কৃষ্ণ তাঁরে আশ্বাসন ॥ ১৪৮ ॥

শুনিয়া—সুনने के पश्चात्; **রাধিকা-বাণী**—श्रीमती राधारानी की बात; **ব্রজ-প্রেম**—व्रज का प्रेम; **মনে আনি**—स्मरण करके; **ভাবে**—उस भावावेश में; **ব্যাকুলিত**—अत्यन्त व्याकुल हो गये; **দেহ-মন**—तन-मन; **ব্রজ-লোকের**—वृन्दावन के निवासियों के; **প্রেম শুনি'**—प्रेम-व्यवहार सुनकर; **আপনাকে**—स्वयं को; **ঋণী মানি'**—अत्यन्त ऋणी समझकर; **করে**—किया; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण ने; **তাঁরে**—उनको; **আশ্বাসন**—आश्वासन दिया।

অনুবাদ

"श्रीमती राधारानी के वचनों को सुनकर भगवान् कृष्ण में वृन्दावनवासियों के प्रति प्रेम जाग्रत हो आया और उनका तन तथा मन अत्यन्त व्याकुल हो उठा। अपने प्रति उनके प्रेम की बात सुनकर भगवान् ने सोचा कि वे वृन्दावनवासियों के चिर ऋणी हैं। तब कृष्ण श्रीमती राधारानी को इस प्रकार सान्त्वना देने लगे।

প্রাণ-প্রিয়ে, শুন, মোর এ-সত্য-বচন
তোমা-সবার স্মরণে, ঝুরোঁ মুঞি রাত্রি-দিনে, ।
মোর দুঃখ না জানে কোন জন ॥ ১৪৯ ॥

প্রাণ-প্রিয়ে, শুন, মোর এ-সত্য-বচন
তোমা-সবার স্মরণে, ঝুরোঁ মুঞি রাত্রি-দিনে, ।
মোর দুঃখ না জানে কোন জন ॥ ১৪৯ ॥

প্রাণ-প্রিয়ে—हे मेरी प्राण प्रिये; **শুন**—कृपया सुनो; **মোর**—मेरा; **এ-সত্য-বচন**—यह सत्य वचन; **তোমা-সবার**—तुम सब के; **স্মরণে**—स्मरण से; **ঝুরোঁ**—रोता हूँ; **মুঞি**—मैं; **রাত্রি-দিনে**—रात-दिन; **মোর দুঃখ**—मेरा दुःख; **না জানে**—नहीं जानता; **কোন জন**—कोई भी।

अनुवाद

"प्रिय श्रीमती राधारानी! कृपया मेरी बात सुनो। मैं सच कह रहा हूँ। मैं तुम समस्त वृन्दावनवासियों की याद कर-करके रात-दिन रोता रहता हूँ। कोई नहीं जानता कि इससे मैं कितना दुःखी हो जाता हूँ।"

तात्पर्य

कहा गया है—*वृन्दावनं परित्यज्य पदमेकं न गच्छति।* एक तरह से परम भगवान् कृष्ण (*ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः*) वृन्दावन से बाहर एक पग भी नहीं रखते। किन्तु अपने विविध कर्तव्यों को निभाने के लिए उन्हें वृन्दावन छोड़ना पड़ा। उन्हें कंस का संहार करने के लिए मथुरा जाना पड़ा। इसके बाद उनके पिता उन्हें द्वारका ले गये, जहाँ वे राजकाज में तथा असुरों के उत्पातों को शमन करने में लगे रहे। कृष्ण वृन्दावन से दूर थे, किन्तु वे तनिक भी सुखी नहीं थे, जैसाकि उन्होंने श्रीमती राधारानी से प्रकट किया। श्रीमती राधारानी श्रीकृष्ण की प्राणाधार हैं और उन्होंने उनसे अपने मन की बात इस प्रकार कही।

ব্রজ-বাসী যত জন, মাতা, পিতা, সখা-গণ,
সবে হয় মোর প্রাণ-সম ।
তাঁর মধ্যে গোপী-গণ, সাক্ষাত্মোর জীবন,
তুমি মোর জীবনের জীবন ॥১৫০॥

ব্রজ-বাসী যত জন, মাতা, পিতা, সখা-গণ,
সবে হয় মোর প্রাণ-সম ।
তাঁর মধ্যে গোপী-গণ, সাক্ষাত্মোর জীবন,
তুমি মোর জীবনের জীবন ॥ ১৫০॥

ব্রজ-বাসী যত জন—वृन्दावन-धाम के सभी निवासी; **माता**—माता; **पिता**—पिता; **सखा-गण**—सखा; **सबे**—सभी; **हय**—हैं; **मोर प्राण-सम**—मेरे प्राण समान; **ताँर मध्ये**—उनमें से; **गोपी-गण**—गोपियाँ; **साक्षात्**—साक्षात्; **मोर जीवन**—मेरी जीवन और प्राण; **तुमि**—तुम; **मोर जीवनेर जीवन**—मेरे जीवन का जीवन (आधार) हो।

अनुवाद

श्रीकृष्ण ने आगे कहा, "वृन्दावन धाम के सारे निवासी—मेरे माता,

पिता, ग्वालसखा तथा अन्य सभी मेरे प्राणों के समान हैं। वृन्दावन के सारे निवासियों में से गोपियाँ तो मेरे प्राण के समान हैं और गोपियों में, हे राधारानी! तुम मुख्य हो। अतएव तुम मेरे जीवन का भी जीवन हो।

तात्पर्य

श्रीमती राधारानी वृन्दावन के समस्त कार्यकलापों की केन्द्रबिन्दु हैं। वृन्दावन में कृष्ण श्रीमती राधारानी की कठपुतली हैं; इसीलिए आज भी सारे वृन्दावनवासी "जय राधे!" का उच्चारण करते हैं। यहाँ पर श्रीकृष्ण के अपने स्वयं के कथन से ऐसा लगता है कि राधारानी वृन्दावन की महारानी हैं और कृष्ण मात्र उनके अलंकरण हैं। कृष्ण को मदनमोहन कहा जाता है, किन्तु श्रीमती राधारानी तो कृष्ण को भी मोहने वाली हैं। फलस्वरूप श्रीमती राधारानी मदनमोहनमोहिनी कहलाती हैं।

তোমা-সবার প্রেম-রসে, আমাকে করিল বশে,
আমি তোমার অধীন কেবল ।
তোমা-সবা ছাড়াঞা, আমা দূর-দেশে লঞা,
রাখিয়াছে দুর্দৈব প্রবল ॥ ১৫১ ॥

तोमा-सबार प्रेम-रसे, आमाके करिल वशे,
आमि तोमार अधीन केवल ।
तोमा-सबा छाड़ाञा, आमा दूर-देशे लञा,
राखियाछे दुर्दैव प्रबल ॥ १५१ ॥

तोमा-सबार—तुम सबके; **प्रेम-रसे**—प्रेमावेश और रस से; **आमाके**—मुझे; **करिल**—तुमने किया है; **वशे**—वश में; **आमि**—मैं; **तोमार**—तुम्हारे; **अधीन**—अधीन; **केवल**—केवल; **तोमा-सबा**—तुम सब से; **छाड़ाञा**—अलग होकर; **आमा**—मुझे; **दूर-देशे**—दूर देश को; **लञा**—लाकर; **राखियाछे**—रख दिया है; **दुर्दैव**—दुर्भाग्य; **प्रबल**—अति शक्तिशाली।

अनुवाद

"हे श्रीमती राधारानी! मैं तुम सबके प्रेम के अधीन हूँ। मैं तो एकमात्र तुम्हारे वश में हूँ। तुमसे मेरा विछोह तथा दूर स्थान में मेरा प्रवास मेरे प्रबल दुर्भाग्य के कारण ही हुआ है।

প্রিয়া প্রিয়-সঙ্গ-হীনা, প্রিয় প্রিয়া-সঙ্গ বিনা,
নাহি জীয়ে,—এ সত্য প্রমাণ ।
মোর দশা শোনে যবে, তাঁর এই দশা হবে,
এই ভয়ে দুঁহে রাখে প্রাণ ॥ ১৫২ ॥

প্রিয়া প্রিয়-সঙ্গ-হীনা, প্রিয় প্রিয়া-সঙ্গ বিনা,
নাহি জীয়ে,—এ সত্য প্রমাণ ।
মোর দশা শোনে য়বে, তাঁর এই দশা হবে,
এই ভয়ে দুঁহে রাখে প্রাণ ॥ ১৫২ ॥

প্রিয়া—প्रिय नारी; **प्रिय-सङ्ग-हीना**—प्रियतम से अलग होकर; **प्रिय**—प्रेमी पुरुष; **प्रिया-सङ्ग विना**—प्रियतमा से जुदा होकर; **नाहि जीये**—नहीं जीवित रह सकता; **ए सत्य प्रमाण**—यह सत्य है; **मोर**—मेरी; **दशा**—दशा; **शोने य्रबे**—यदि कोई सुने; **ताँर**—उसकी; **एइ**—यह; **दशा**—दशा; **हबे**—होगी; **एइ भये**—इस भय के कारण; **दुँहे**—दोनों; **राखे प्राण**—जीवित रहते हैं।

अनुवाद

"जब किसी स्त्री का उसके प्रेमी से विछोह होता है या कोई पुरुष अपनी प्रिया से विलग होता है, तो उनमें से कोई भी जीवित नहीं रह सकता। यह तथ्य है कि वे एक-दूसरे के लिए जीवित रहते हैं, क्योंकि यदि इनमें से कोई मरता है, तो दूसरा इसे सुनते ही मर जाता है।

সেই সতী প্রেমবতী, প্রেমবান্সেই পতি,
বিয়োগে যে বাঞ্ছে প্রিয়-হিতে ।
না গণে আপন-দুঃখ, বাঞ্ছে প্রিয়জন-সুখ,
সেই দুই মিলে অচিরাতে ॥ ১৫৩ ॥

সেই সতী প্রেমবতী, প্রেমবান্সেই পতি,
বিয়োগে য়ে বাঞ্ছে প্রিয়-হিতে ।
না গণে আপন-দুঃখ, বাঞ্ছে প্রিয়জন-সুখ,
সেই দুই মিলে অচিরাতে ॥ ১৫৩ ॥

सेइ सती—वह सती नारी; **प्रेम-वती**—प्रेम से पूर्ण; **प्रेम-वान्**—प्रेमी; **सेइ पति**—वह पति; **वियोगे**—विरह में; **य्रे**—जो; **वाञ्छे**—इच्छा करते हैं; **प्रिय-हिते**—दूसरे के हित के लिए; **ना गणे**—और परवाह नहीं करते; **आपन-दुःख**—निजी दुःख की; **वाञ्छे**—चाहते हैं; **प्रिय-**

जन-सुख—आपने प्रिय के सुख को; **सेइ**—वे; **दुइ**—दोनों; **मिले**—मिल जाते हैं; **अचिराते**—बिना विलम्ब के।

अनुवाद

"ऐसी प्रेमवती सती पत्नी तथा प्रेमवान पति, विरह में एक-दूसरे की शुभकामना करते हैं और अपने निजी सुख की परवाह नहीं करते। वे एक-दूसरे के कल्याण की ही कामना करते रहते हैं। ऐसे प्रेमी-प्रेमिका दोनों शीघ्र ही फिर से मिलते हैं।

রাখিতে তোমার জীবন, সেবি আমি নারায়ণ,
তাঁর শক্ত্যে আসি নিতি-নিতি ।
তোমা-সনে ক্রীড়া করি', নিতি যাই যদু-পুরী,
তাহা তুমি মানহ মোর স্ফূর্তি ॥ ১৫৪॥

রাখিতে তোমার জীবন, সেবি আমি নারায়ণ,
তাঁর শক্ত্যে আসি নিতি-নিতি ।
তোমা-সনে ক্রীড়া করি', নিতি যাই যদু-পুরী,
তাহা তুমি মানহ মোর স্ফূর্তি ॥ ১৫৪॥

রাখিতে—মাত্র रखने के लिए; **तोमार जीवन**—तुम्हारा जीवन; **सेवि आमि नारायण**—मैं सदा भगवान् नारायण की पूजा करता हूँ; **ताँर शक्त्ये**—उनकी शक्ति से; **आसि निति-निति**—मैं हर रोज तुम्हारे पास आता हूँ; **तोमा-सने**—तुम्हारे साथ; **क्रीड़ा करि'**—लीलाएँ करने के लिए; **निति**—प्रतिदिन; **याइ यदु-पुरी**—मैं द्वारका धाम को लौट जाता हूँ, जो यदुपुरी के नाम से प्रसिद्ध है; **ताहा**—वह; **तुमि**—तुम; **मानह**—अनुभव करती हो; **मोर**—मेरी; **स्फूर्ति**—उपस्थिति।

अनुवाद

"तुम मेरी अत्यन्त प्रिय हो और मैं जानता हूँ कि तुम मेरे बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती। तुम्हें जीवित रखने के लिए ही मैं भगवान् नारायण की पूजा करता हूँ। उनकी कृपामयी शक्ति से मैं तुम्हारे साथ लीला करने के लिए नित्य वृन्दावन आता हूँ। फिर मैं द्वारका धाम लौट जाता हूँ। इस तरह तुम वृन्दावन में सदैव मेरी उपस्थिति का अनुभव कर सकती हो।

মোর ভাগ্য মো-বিষয়ে, তোমার যে প্রেম হয়ে,
সেই প্রেম—পরম প্রবল ।
লুকাঞা আমা আনে, সঙ্গ করায় তোমা-সনে,
প্রকটেহ আনিবে সত্বর ॥ ১৫৫॥

मोर भाग्य मो-विषये, तोमार ये प्रेम हये,
सेइ प्रेम—परम प्रबल ।
लुकाञा आमा आने, सङ्ग कराय तोमा-सने,
प्रकटेह आनिबे सत्वर ॥ १५५॥

मोर भाग्य—मेरा भाग्य; **मो-विषये**—मुझ से सम्बन्धित; **तोमार**—तुम्हारा; **ये**—जो कुछ; **प्रेम**—प्रेम; **हये**—है; **सेइ प्रेम**—वह प्रेम; **परम प्रबल**—अत्यन्त प्रबल; **लुकाञा**—छुपकर; **आमा आने**—मुझे लाता है; **सङ्ग कराय**—तुम्हारे साथ संग करवाता है; **तोमा-सने**—तुम्हारे साथ; **प्रकटेह**—प्रत्यक्ष प्रकट होता है; **आनिबे**—लायेगा; **सत्वर**—अति शीघ्र।

अनुवाद

"हमारा प्रेम-व्यापार इतना शक्तिशाली इसीलिए है, क्योंकि सौभाग्यवश मुझे नारायण की कृपा प्राप्त है। इससे मैं दूसरों से अप्रकट होकर वहाँ आ सकता हूँ। मुझे आशा है कि शीघ्र ही मैं सबको दिख सकूँगा।

तात्पर्य

कृष्ण की उपस्थिति दो प्रकार की होती है—*प्रकट* तथा *अप्रकट*। निष्ठावान भक्त के लिए ये दोनों एक-सी हैं। यदि कृष्ण शरीर से उपस्थित न भी हों, तो कृष्ण के कार्यों में भक्त की सतत तल्लीनता उन्हें उपस्थित करा देती है। इसकी पुष्टि *ब्रह्म-संहिता* (५.३८) में हुई है :

प्रेमाञ्जनच्छुरितभक्तिविलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपं
गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि॥

शुद्ध भक्त अपने उत्कट प्रेम के कारण भगवान् कृष्ण को अपने हृदय में ही विद्यमान देखता है। आदि भगवान् गोविन्द की जय हो! जब

वृन्दावनवासियों के समक्ष कृष्ण प्रकट नहीं होते, तो वे लोग उनके विचारों में सदैव मग्न रहते हैं। इसलिए उस समय कृष्ण द्वारका में रहते हुए भी साथ ही साथ समस्त वृन्दावनवासियों के समक्ष उपस्थित रहते थे। यह उनकी *अप्रकट* उपस्थिति थी। जो भक्तगण कृष्ण के विचारों में सदैव डूबे रहते हैं, वे निश्चित रूप से शीघ्र ही कृष्ण का आमने-सामने प्रत्यक्ष दर्शन पायेंगे। दूसरे शब्दों में, जो भक्तगण सदैव कृष्णभावनामृत में डूबे रहते हैं और कृष्ण के विचारों में पूरी तरह मग्न रहते हैं, वे अवश्यमेव भगवद्धाम को लौट जाते हैं। फिर वे कृष्ण को प्रत्यक्ष देखते हैं, उनके साथ वार्तालाप करते हैं और उनकी संगति का आनन्द लूटते हैं। इसकी पुष्टि *भगवद्गीता* (४.९) में की गई है—*त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।*

शुद्ध भक्त जीवन-भर कृष्ण का गुणगान करता है और उनकी सेवा करता है। अत: अपना शरीर त्यागने पर वह तुरन्त गोलोक वृन्दावन लौट जाता है, जहाँ स्वयं कृष्ण उपस्थित होते हैं। तब वह कृष्ण से प्रत्यक्ष मिलता है। यही सफल मानव जीवन है। *प्रकटेह आनिबे सत्वर* का यही अर्थ है। शुद्ध भक्त को शीघ्र ही भगवान् श्रीकृष्ण का साक्षात् दर्शन होता है।

যাদবের বিপক্ষ, যত দুষ্ট কংস-পক্ষ,
তাহা আমি কৈলুঁ সব ক্ষয় ।
আছে দুই-চারি জন, তাহা মারি' বৃন্দাবন,
আইলাম আমি, জানিহ নিশ্চয় ॥ ১৫৬॥

য়াদবের বিপক্ষ, য়ত দুষ্ট কংস-পক্ষ,
তাহা আমি কৈলুঁ সব ক্ষয় ।
আছে দুই-চারি জন, তাহা মারি' বৃন্দাবন,
আইলাম আমি, জানিহ নিশ্চয় ॥ ১৫৬॥

য়াদবের বিপক্ষ—यदुकुल के सभी शत्रु; **য়ত**—सब; **দুষ্ট**—दुष्ट; **কংস-পক্ষ**—कंस के साथी; **তাহা**—उनको; **আমি**—मैंने; **কৈলুঁ সব ক্ষয়**—मार दिया है; **আছে**—फिर भी हैं; **দুই-চারি জন**—दो-चार दैत्य; **তাহা মারি'**—उनको मारने के बाद; **বৃন্দাবন**—वृन्दावन; **আইলাম আমি**—मैं अति शीघ्र आऊँगा; **জানিহ নিশ্চয়**—इसे निश्चित जानो।

अनुवाद

"मैं यदुवंश के उत्पाती असुर शत्रुओं को पहले ही मार चुका हूँ और मैंने कंस तथा उनके मित्रों का भी वध कर दिया है। फिर भी दो-चार असुर अभी भी बचे हुए हैं। मैं उन्हें मारना चाहता हूँ और उनका वध करने के बाद मैं शीघ्र ही वृन्दावन लौट आऊँगा। इसे तुम निश्चित जानो।

तात्पर्य

जिस तरह कृष्ण वृन्दावन से एक पग भी बाहर नहीं जाते, उसी तरह कृष्ण का भक्त भी वृन्दावन नहीं छोड़ना चाहता। किन्तु जब उसे कृष्ण का कार्य संभालना होता है, तब वह वृन्दावन छोड़ देता है। अपना कार्य पूरा करने के बाद शुद्ध भक्त वृन्दावन, अर्थात् भगवद्धाम वापस लौट आता है। कृष्ण ने राधारानी को आश्वासन दिया कि वृन्दावन से बाहर के असुरों का वध करने के बाद वे लौट आयेंगे। उन्होंने वचन दिया, "बचे हुए कुछ असुरों को मार करके तुरन्त ही मैं वापस आ रहा हूँ।"

সেই শত্রু-গণ হৈতে, ব্রজ-জন রাখিতে,
রহি রাজ্যে উদাসীন হঞা ।
যেবা স্ত্রী-পুত্র-ধনে, করি রাজ্য আবরণে,
যদু-গণের সন্তোষ লাগিয়া ॥ ১৫৭ ॥

সেই শত্রু-গণ হৈতে, ব্রজ-জন রাখিতে,
রহি রাজ্যে উদাসীন হঞা ।
যেবা স্ত্রী-পুত্র-ধনে, করি রাজ্য আবরণে,
যদু-গণের সন্তোষ লাগিয়া ॥ ১৫৭ ॥

সেই—वे; **শত্রু-গণ হৈতে**—शत्रुओं से; **ব্রজ-জন**—वृन्दावन के निवासियों को; **রাখিতে**—संरक्षण देने के लिए; **রহি**—मैं रहता हूँ; **রাজ্যে**—अपने राज्य में; **উদাসীন**—तटस्थ; **হঞা**—होकर; **যেবা**—जो कोई; **স্ত্রী-পুত্র-ধনে**—पत्नियों, पुत्रों और धन-सम्पति; **করি রাজ্য আবরণে**—मैं अपने राज्य में रखता हूँ; **যদু-গণের**—यदुकुल के; **সন্তোষ**—सन्तोष; **লাগিয়া**—के लिए।

अनुवाद

"मैं वृन्दावन के निवासियों को अपने शत्रुओं के हमलों से बचाना

चाहता हूँ। इसीलिए मैं अपने राज्य में रहता हूँ, अन्यथा मैं अपने राजसी पद के प्रति उदासीन हूँ। मैं राज्य में जो भी पत्नियाँ, पुत्र तथा धन रखता हूँ, वे सारे के सारे केवल यदुओं के सन्तोष के लिए हैं।

তোমার যে প্রেম-গুণ, করে আমা আকর্ষণ,
আনিবে আমা দিন দশ বিশে ।
পুনঃ আসি' বৃন্দাবনে, ব্রজ-বধূ তোমা-সনে,
বিলসিব রজনী-দিবসে ॥ ১৫৮॥

তোমার য়ে প্রেম-গুণ, করে আমা আকর্ষণ,
আনিবে আমা দিন দশ বিশে ।
পুনঃ আসি' বৃন্দাবনে, ব্রজ-বধূ তোমা-সনে,
বিলসিব রজনী-দিবসে ॥ ১৫৮॥

তোমার—तुम्हारे; **য়ে**—जो कुछ; **প্রেম-গুণ**—प्रेम के गुण; **করে**—करते हैं; **আমা**—मुझे; **আকর্ষণ**—आकर्षित; **আনিবে**—ले आयेंगे; **আমা**—मुझे; **দিন দশ বিশে**—दस-बीस दिनों में; **পুনঃ**—दोबारा; **আসি'**—आकर; **বৃন্দাবনে**—वृन्दावन में; **ব্রজ-বধূ**—वृन्दावन की गोपियाँ; **তোমা-সনে**—तुम्हारे साथ; **বিলসিব**—मैं आनन्द मनाऊँगा; **রজনী-দিবসে**—दिन-रात को।

अनुवाद

"तुम्हारे प्रेममय गुण मुझे सदैव वृन्दावन की ओर खींचते रहते हैं। वे दस-बीस दिनों में मुझे, निश्चय ही, वापस बुला लेंगे और लौटने पर मैं तुम्हारे तथा व्रजभूमि की सारी बालाओं के साथ रात-दिन विलास करूँगा।"

এত তাঁরে কহি কৃষ্ণ, ব্রজে যাইতে সতৃষ্ণ,
এক শ্লোক পড়ি' শুনাইল ।
সেই শ্লোক শুনি' রাধা, খণ্ডিল সকল বাধা,
কৃষ্ণ-প্রাপ্ত্যে প্রতীতি হইল ॥ ১৫৯॥

এত তাঁরে কহি কৃষ্ণ, ব্রজে য়াইতে সতৃষ্ণ,
এক শ্লোক পড়ি' শুনাইল ।
সেই শ্লোক শুনি' রাধা, খণ্ডিল সকল বাধা,
কৃষ্ণ-প্রাপ্ত্যে প্রতীতি হইল ॥ ১৫৯॥

এত তাঁরে কহি কৃষ্ণ, ব্রজে য়াইতে সতৃষ্ণ,
এক শ্লোক পড়ি' শুনাইল ।
সেই শ্লোক শুনি' রাধা, খণ্ডিল সকল বাধা,
কৃষ্ণ-প্রাপ্ত্যে প্রতীতি হইল ॥ ১৫৯॥

एत—इतना; **ताँरे**—श्रीमती राधारानी को; **कहि**—कहकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **व्रजे**—वृन्दावन में; **याइते**—जाने के लिए; **स-तृष्ण**—अति उत्सुक; **एक श्लोक**—एक श्लोक; **पड़ि'**—पढ़कर; **शुनाइल**—उन्हें सुनाया; **सेइ श्लोक**—वह श्लोक; **शुनि'**—सुनकर; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **खाण्डिल**—नष्ट हो गईं; **सकल**—सब प्रकार की; **बाधा**—बाधाएँ; **कृष्ण-प्राप्त्ये**—कृष्ण को पाने के लिए; **प्रतीति हइल**—विश्वास हुआ।

अनुवाद

श्रीमती राधारानी से बातें करते हुए कृष्ण वृन्दावन लौट आने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो उठे। उन्होंने उन्हें एक श्लोक सुनाया, जिससे उनके (श्रीमती राधारानी के) सारे कष्ट दूर हो गये और आश्वासन प्राप्त हुआ कि उन्हें पुनः श्रीकृष्ण प्राप्त हो जायेंगे।

मयि भक्तिर्हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते ।
दिष्ट्या यदासीन्मत्स्नेहो भवतीनां मदापनः ॥१६०॥

मयि भक्तिर्हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते ।
दिष्ट्या यदासीन्मत्स्नेहो भवतीनां मदापनः ॥१६०॥

मयि—मुझे; **भक्तिः**—श्रवण, कीर्तन आदि नौ प्रकार की भक्ति; **हि**—अवश्य; **भूतानाम्**—सभी जीवों के; **अमृतत्वाय**—भगवान् के नित्य पार्षद बनने के लिए; **कल्पते**—बिल्कुल उचित (योग्य) है; **दिष्ट्या**—सौभाग्य से; **यत्**—जो कुछ; **आसीत्**—वहाँ था; **मत्-स्नेहः**—मेरे लिए प्रेम और स्नेह; **भवतीनाम्**—तुम सब गोपियों का; **मत्-आपनः**—मुझे लौटाने का कारण है।

अनुवाद

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, "मुझे प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है मेरी भक्ति करना। हे गोपियों, तुम लोगों ने सौभाग्यवश मेरे लिए जितना भी स्नेह एवं प्रेम प्राप्त कर रखा है, उसी के कारण मैं तुम्हारे पास वापस आ रहा हूँ।"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.८२.४४) का है।

एइ सब अर्थ प्रभु स्वरूपेर सने ।
रात्रि-दिने घरे बसि' करे आस्वादने ॥१६१॥

एइ सब अर्थ प्रभु स्वरूपेर सने ।
रात्रि-दिने घरे वसि' करे आस्वादने ॥ १६१ ॥

एइ सब—ये सब; **अर्थ**—अर्थ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **स्वरूपेर सने**—स्वरूप दामोदर सहित; **रात्रि-दिने**—रात-दिन; **घरे वसि'**—अपने घर में बैठकर; **करे**—करते थे; **आस्वादने**—आस्वादन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अपने कमरे में स्वरूप दामोदर के साथ बैठ जाते और इन श्लोकों का रसास्वादन दिन-रात किया करते।

নৃত্য-কালে সেই ভাবে আবিষ্ট হঞা ।
শ্লোক পড়ি' নাচে জগন্নাথ-মুখ চাঞা ॥ ১৬২ ॥

নৃত্য-কালে সেই ভাবে আবিষ্ট হঞা ।
শ্লোক পড়ি' নাচে জগন্নাথ-মুখ চাঞা ॥ ১৬২ ॥

নৃত্য-কালে—নৃত্य करते समय; **सेइ भावे**—उसी भाव में; **आविष्ट**—मग्न; **हञा**—होकर; **श्लोक पड़ि'**—ये श्लोक पढ़ते हुए; **नाचे**—नृत्य कर रहे थे; **जगन्नाथ-मुख**—जगन्नाथ के मुख को; **चाञा**—देखते हुए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पूर्णतया भावमग्न होकर नृत्य किया। जगन्नाथ के मुख का दर्शन करते हुए वे नाचते और इन श्लोकों को सुनाते जाते।

স্বরূপ-গোসাঞির ভাগ্য না যায় বর্ণন ।
প্রভুতে আবিষ্ট যাঁর কায়, বাক্য, মন ॥ ১৬৩ ॥

স্বরূপ-গোসাঞির ভাগ্য না যায় বর্ণন ।
প্রভুতে আবিষ্ট যাঁর কায়, বাক্য, মন ॥ ১৬৩ ॥

स्वरूप-गोसाञिर—स्वरूप दामोदर गोस्वामी का; **भाग्य**—भाग्य; **ना**—नहीं; **याय वर्णन**—वर्णन किया जा सकता; **प्रभुते**—महाप्रभु की सेवा में; **आविष्ट**—पूर्णरूपेण मग्न; **याँर**—जिनका; **काय**—तन; **वाक्य**—वाणी; **मन**—मन।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी के सौभाग्य का वर्णन नहीं किया जा

सकता, क्योंकि वे अपने शरीर, मन तथा वाणी से महाप्रभु की सेवा में सदैव लीन रहते हैं।

স্বরূপের ইন্দ্রিয়ে প্রভুর নিজেন্দ্রিয়-গণ ।
আবিষ্ট হঞা করে গান-আস্বাদন ॥ ১৬৪ ॥

स्वरूपेर इन्द्रिये प्रभुर निजेन्द्रिय-गण ।
आविष्ट हञा करे गान-आस्वादन ॥ १६४ ॥

स्वरूपेर—स्वरूप दामोदर की; **इन्द्रिये**—इन्द्रियों में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **निज-इन्द्रिय-गण**—निजी इन्द्रियाँ; **आविष्ट हञा**—पूर्णतया आविष्ट होकर; **करे**—करती थीं; **गान**—गायन; **आस्वादन**—आस्वादन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की इन्द्रियाँ स्वरूप की इन्द्रियों से अभिन्न थीं। अतएव चैतन्य महाप्रभु स्वरूप दामोदर के गाने का आस्वादन करते हुए पूर्णतया निमग्न हो जाते थे।

ভাবের আবেশে কভু ভূমিতে বসিয়া ।
তর্জনীতে ভূমে লিখে অধোমুখ হঞা ॥ ১৬৫ ॥

भावेर आवेशे कभु भूमिते वसिया ।
तर्जनीते भूमे लिखे अधोमुख हञा ॥ १६५ ॥

भावेर आवेशे—भावावेश के कारण; **कभु**—कभी-कभी; **भूमिते**—भूमि पर; **वसिया**—बैठकर; **तर्जनीते**—तर्जिनी अंगुली के साथ; **भूमे**—भूमि पर; **लिखे**—लिखते थे; **अधोमुख हञा**—नीचे देखते हुए।

अनुवाद

कभी-कभी भावावेश में चैतन्य महाप्रभु जमीन पर बैठ जाते और नीचे देखते हुए जमीन पर अपनी अँगुली से लिखा करते।

অঙ্গুলিতে ক্ষত হবে জানি' দামোদর ।
ভয়ে নিজ-করে নিবারয়ে প্রভু-কর ॥ ১৬৬ ॥

अङ्गुलिते क्षत हबे जानि' दामोदर ।
भये निज-करे निवारये प्रभु-कर ॥ १६६ ॥

अङ्गुलिते—अँगुली पर; **क्षत**—जख्म; **जख्म**; **हबे**—हो जायेंगे; **जानि'**—यह जानकर; **दामोदर**—स्वरूप दामोदर; **भये**—भय के कारण; **निज-करे**—अपने हाथ से; **निवारये**—रोकते थे; **प्रभु-कर**—महाप्रभु का हाथ।

अनुवाद

यह जानकर कि अँगुली से इस प्रकार लिखते रहने से महाप्रभु को क्षति पहुँच सकती है, स्वरूप दामोदर ने अपने हाथ से उन्हें रोका।

प्रभुर भावानुरूप स्वरूपेर गान ।
यबे येइ रस ताहा करे मूर्तिमान् ॥ १६७ ॥

प्रभुर भावानुरूप स्वरूपेर गान ।
यबे येइ रस ताहा करे मूर्तिमान् ॥ १६७ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भाव-अनुरूप**—भाव के अनुसार; **स्वरूपेर**—स्वरूप दामोदर का; **गान**—गायन; **यबे**—जब; **येइ**—जो कुछ; **रस**—रस; **ताहा**—वह; **करे**—करते थे; **मूर्तिमान्**—साकार।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर महाप्रभु के भाव के अनुरूप ही गाया करते थे। जब भी महाप्रभु किसी रस विशेष का आस्वादन करते, स्वरूप दामोदर उसे गाकर साकार कर देते।

श्री-जगन्नाथेर देखे श्री-मुख-कमल ।
ताहार उपर सुन्दर नयन-युगल ॥ १६८ ॥

श्री-जगन्नाथेर देखे श्री-मुख-कमल ।
ताहार उपर सुन्दर नयन-युगल ॥ १६८ ॥

श्री-जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ का; **देखे**—देखते थे; **श्री-मुख-कमल**—कमलमुख; **ताहार उपर**—उस पर; **सुन्दर**—सुन्दर; **नयन-युगल**—युगल नयन (दो नयन)।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भगवान् जगन्नाथ के सुन्दर कमल जैसे मुख तथा नेत्रों के दर्शन किए।

সূর্যের কিরণে মুখ করে ঝলমল ।
মাল্য, বস্ত্র, দিব্য অলঙ্কার, পরিমল ॥ ১৬৯॥

সূর্য্যের কিরণে মুখ করে ঝলমল ।
মাল্য, বস্ত্র, দিব্য অলঙ্কার, পরিমল ॥ ১৬৯॥

সূর্য্যের—सूर्य की; **কিরণে**—किरणों से; **মুখ**—मुख; **করে**—करता था; **ঝলমল**—चमकता; **মাল্য**—माला; **বস্ত্র**—वस्त्र; **দিব্য অলঙ্কার**—सुन्दर आभूषण; **পরিমল**—सुगन्ध से घिरा हुआ।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ माला पहने थे, सुन्दर वस्त्रों से सज्जित एवं सुन्दर आभूषणों से अलंकृत थे। उनका मुख सूर्य की किरणों से जगमगा रहा था और समूचा वातावरण सुगन्धित था।

প্রভুর হৃদয়ে আনন্দ-সিন্ধু উথলিল ।
উন্মাদ, ঝঞ্ঝা-বাত তৎক্ষণে উঠিল ॥ ১৭০॥

প্রভুর হৃদয়ে আনন্দ-সিন্ধু উথলিল ।
উন্মাদ, ঝঞ্ঝা-বাত তৎক্ষণে উঠিল ॥ ১৭০॥

প্রভুর হৃদয়ে—श्री चैतन्य महाप्रभु के हृदय में; **আনন্দ-সিন্ধু**—दिव्य आनन्द का सागर; **উথলিল**—उठा; **উন্মাদ**—उन्माद; **ঝঞ্ঝা-বাত**—तूफान; **তৎ-ক্ষণে**—एकदम; **উঠিল**—उमड़ पड़े।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के हृदय में दिव्य आनन्द का सागर उमड़ रहा था और उनमें उन्मत्तता के लक्षण तुरन्त तूफान की तरह जोर पकड़ने लगे।

আনন্দোন্মাদে উঠায় ভাবের তরঙ্গ ।
নানা-ভাব-সৈন্যে উপজিল যুদ্ধ-রঙ্গ ॥ ১৭১॥

আনন্দোন্মাদে উঠায় ভাবের তরঙ্গ ।
নানা-ভাব-সৈন্যে উপজিল যুদ্ধ-রঙ্গ ॥ ১৭১॥

আনন্দ-উন্মাদে—दिव्य आनन्द के उन्माद में; **উঠায়**—उठाया; **ভাবের**—भावों की;

तरङ्ग—तरंगें; **नाना**—अनेक; **भाव**—भाव; **सैन्ये**—सैनिकों में; **उपजिल**—प्रकट हो गये; **युद्ध-रङ्ग**—युद्ध के रूप में।

अनुवाद

दिव्य आनन्द की उन्मत्तता से विविध भावों की तरंगें उत्पन्न हुईं। ये भाव युद्ध करते हुए प्रतिद्वन्द्वी सैनिकों जैसे प्रतीत हो रहे थे।

ভাবোদয়, ভাব-শান্তি, সন্ধি, শাবল্য ।
সঞ্চারী, সাত্ত্বিক, স্থায়ী স্বভাব-প্রাবল্য ॥ ১৭২ ॥

भावोदय, भाव-शान्ति, सन्धि, शाबल्य ।
सञ्चारी, सात्त्विक, स्थायी स्वभाव-प्राबल्य ॥ १७२ ॥

भाव-उदय—भावों का उदय होना; **भाव-शान्ति**—शान्ति के भाव; **सन्धि**—विभिन्न भावों की सन्धि; **शाबल्य**—सभी भावों का मिश्रण; **सञ्चारी**—सभी प्रकार के भावों का संचार; **सात्त्विक**—दिव्य; **स्थायी**—स्थायी; **स्वभाव**—स्वाभाविक भाव; **प्राबल्य**—बढ़ावा।

अनुवाद

प्राकृतिक भावों के सभी लक्षणों में वृद्धि हो गई; फलत: भावों का उदय, भाव-शान्ति, मिश्रित भाव, युक्त-भाव, दिव्य भाव तथा स्थाई भाव तथा भाव प्रबलता देखी गई।

প্রভুর শরীর যেন শুদ্ধ-হেমাচল ।
ভাব-পুষ্প-দ্রুম তাহে পুষ্পিত সকল ॥ ১৭৩ ॥

प्रभुर शरीर येन शुद्ध-हेमाचल ।
भाव-पुष्प-द्रुम ताहे पुष्पित सकल ॥ १७३ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **शरीर**—शरीर; **येन**—जैसे; **शुद्ध**—शुद्ध; **हेमाचल**—हिमालय पर्वत; **भाव**—भाव; **पुष्प-द्रुम**—पुष्पों के वृक्ष; **ताहे**—उस स्थिति में; **पुष्पित**—खिल रहे हो; **सकल**—सभी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का शरीर दिव्य हिमालय पर्वत जैसा लगने लगा, जिसमें भावों के पुष्पित वृक्ष उगे हों और ये सारे वृक्ष खिल रहे हों।

देखिते आकर्षये सबार चित्त-मन ।
प्रेमामृत-वृष्ट्यै प्रभु सिञ्चे सबार मन ॥ १७४ ॥

देखिते आकर्षये सबार चित्त-मन ।
प्रेमामृत-वृष्ट्ये प्रभु सिञ्चे सबार मन ॥ १७४ ॥

देखिते—देखने से; **आकर्षये**—आकर्षित करता था; **सबार**—प्रत्येक का; **चित्त-मन**—मन तथा चेतना; **प्रेम-अमृत-वृष्ट्ये**—भगवत्-प्रेम के अमृत की वर्षा से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सिञ्चे**—छिड़का; **सबार**—प्रत्येक का; **मन**—मन।

अनुवाद

इन सारे लक्षणों को देखकर हर एक के मन तथा चित्त आकृष्ट हो रहे थे। महाप्रभु ने हर एक के मन को दिव्य भगवत्प्रेम रूपी अमृत से सींच दिया।

जगन्नाथ-सेवक यत राज-पात्र-गण ।
यात्रिक लोक, नीलाचल-वासी यत जन ॥ १७५ ॥

जगन्नाथ-सेवक यत राज-पात्र-गण ।
यात्रिक लोक, नीलाचल-वासी यत जन ॥ १७५ ॥

जगन्नाथ-सेवक—भगवान् जगन्नाथ के सेवक; **यत**—सब; **राज-पात्र-गण**—तथा सरकारी अधिकारी गण; **यात्रिक**—यात्री गण; **लोक**—सामान्य लोग; **नीलाचल-वासी**—जगन्नाथ पुरी के निवासी; **यत जन**—वहाँ जितने भी लोग थे।

अनुवाद

उन्होंने जगन्नाथजी के सेवकों, सरकारी अफसरों, यात्रियों, सामान्य जनता तथा जगन्नाथ पुरी के सभी निवासियों के मनों को सिंचित किया।

प्रभुर नृत्य प्रेम देखि' हय चमत्कार ।
कृष्ण-प्रेम उछलिल हृदये सबार ॥ १७६ ॥

प्रभुर नृत्य प्रेम देखि' हय चमत्कार ।
कृष्ण-प्रेम उछलिल हृदये सबार ॥ १७६ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **नृत्य**—नृत्य; **प्रेम**—प्रेम; **देखि'**—देखकर; **हय**—हो

गया; **चमत्कार**—आश्चर्य; **कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण-प्रेम; **उछलिल**—उमड़ पड़ा; **हृदये**—दिलों में; **सबार**—सबके।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के नृत्य तथा भाव-प्रेम को देखकर सारे लोग चकित हो गये। उन सबके हृदयों में कृष्ण-प्रेम का उछाल लेने लगा।

प्रेमे नाचे, गाय, लोक, करे कोलाहल ।
प्रभुर नृत्य देखि' सबे आनन्दे विह्वल ॥ १७७॥

प्रेमे नाचे, गाय, लोक, करे कोलाहल ।
प्रभुर नृत्य देखि' सबे आनन्दे विह्वल ॥ १७७॥

प्रेमे—प्रेम में; **नाचे**—नाचे; **गाय**—गाये; **लोक**—सामान्य लोग; **करे**—किया; **कोलाहल**—कोलाहल; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **नृत्य**—नृत्य; **देखि'**—देखकर; **सबे**—सब; **आनन्दे**—दिव्य आनन्द में; **विह्वल**—विह्वल हो गये।

अनुवाद

हर व्यक्ति भाव-प्रेम में नाचने और गाने लगा तथा महान् कोलाहल गूँजने लगा। हर कोई श्री चैतन्य महाप्रभु को नाचते देखकर दिव्य आनन्द से अभिभूत हो गया।

अन्येर कि काय, जगन्नाथ-हलधर ।
प्रभुर नृत्य देखि' सुखे चलिला मन्थर ॥ १७८॥

अन्येर कि काय, जगन्नाथ-हलधर ।
प्रभुर नृत्य देखि' सुखे चलिला मन्थर ॥ १७८॥

अन्येर कि काय—दूसरों की बात क्या करें ; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **हलधर**—बलराम; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **नृत्य**—नृत्य; **देखि'**—देखकर; **सुखे**—अत्यन्त हर्ष में; **चलिला**—चलने लगे; **मन्थर**—धीरे धीरे।

अनुवाद

अन्यों की जाने दें, भगवान् जगन्नाथ तथा भगवान् बलराम तक श्री चैतन्य महाप्रभु का नृत्य देखकर परम प्रसन्नतापूर्वक धीरे-धीरे चलने लगे।

কভু সুখে নৃত্য-রঙ্গ দেখে রথ রাখি' ।
সে কৌতুক যে দেখিল, সেই তার সাক্ষী ॥ ১৭৯ ॥

কভু সুখে নৃত্য-রঙ্গ দেখে রথ রাখি' ।
সে কৌতুক যে দেখিল, সেই তার সাক্ষী ॥ ১৭৯ ॥

কভু—कभी; **সুখে**—सुख में; **নৃত্য-রঙ্গ**—नृत्य के रंग को; **দেখে**—देखते थे; **রথ**—रथ; **রাখি'**—रोककर; **সে কৌতুক**—वह मनोरंजन ; **যে**—जो कोई; **দেখিল**—देख सकता था; **সেই**—वह; **তার**—उसका; **সাক্ষী**—साक्षी।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ तथा भगवान् बलराम कभी-कभी रथ रोक देते और प्रसन्नतापूर्वक महाप्रभु का नृत्य देखने लगते। जो कोई भी उन्हें रथ रोककर नृत्य देखते देख सका, वह उनकी लीलाओं का साक्षी है।

এই-মত প্রভু নৃত্য করিতে ভ্রমিতে ।
প্রতাপরুদ্রের আগে লাগিলা পড়িতে ॥ ১৮০ ॥

এই-মত প্রভু নৃত্য করিতে ভ্রমিতে ।
প্রতাপরুদ্রের আগে লাগিলা পড়িতে ॥ ১৮০ ॥

এই-মত—इस प्रकार; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **নৃত্য করিতে**—नाचते नाचते; **ভ্রমিতে**—घूमते घूमते; **প্রতাপরুদ্রের**—राजा प्रतापरुद्र के; **আগে**—आगे; **লাগিলা**—लगे; **পড়িতে**—नीचे गिर गये।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु इस तरह नाच तथा घूम रहे थे, तब वे महाराज प्रतापरुद्र के सामने गिर पड़े।

সম্ভ্রমে প্রতাপরুদ্র প্রভুকে ধরিল ।
তাঁহাকে দেখিতে প্রভুর বাহ্য-জ্ঞান হইল ॥ ১৮১ ॥

সম্ভ্রমে প্রতাপরুদ্র প্রভুকে ধরিল ।
তাঁহাকে দেখিতে প্রভুর বাহ্য-জ্ঞান হইল ॥ ১৮১ ॥

সম্ভ্রমে—अत्यन्त सम्मान सहित; **প্রতাপরুদ্র**—राजा प्रतापरुद्र; **প্রভুকে**—श्री चैतन्य

महाप्रभु को; **धरिल**—ऊपर उठाया; **ताँहाके**—उनको; **देखिते**—देखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **बाह्य-ज्ञान**—बाहरी चेतना; **हइल**—हो गई।

अनुवाद

महाराज प्रतापरुद्र ने बड़े सम्मान से महाप्रभु को उठाया, किन्तु राजा को देखकर महाप्रभु को बाह्य चेतना आ गई।

राजा देखि' महाप्रभु करेन धिक्कार ।
छि, छि, विषयीर स्पर्श हइल आमार ॥ १८२॥

राजा देखि' महाप्रभु करेन धिक्कार ।
छि, छि, विषयीर स्पर्श हइल आमार ॥ १८२॥

राजा देखि'—राजा को देखकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करेन**—किया; **धिक्-कार**—धिक्कार; **छि छि**—छि: छि:; **विषयीर**—लौकिक विषयों में रुचि लेने वाले का; **स्पर्श हइल**—स्पर्श हो गया; **आमार**—मेरा।

अनुवाद

राजा को देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने आपको यह कहकर धिक्कारा, "छि:! कितने दुःख की बात है कि मैंने ऐसे व्यक्ति का स्पर्श कर लिया, जो संसारी मामलों में रुचि रखता है।"

आवेशेते नित्यानन्द ना हैला सावधाने ।
काशीश्वर-गोविन्द आछिला अन्य-स्थाने ॥ १८३॥

आवेशेते नित्यानन्द ना हैला सावधाने ।
काशीश्वर-गोविन्द आछिला अन्य-स्थाने ॥ १८३॥

आवेशेते—आवेश में; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **ना**—नहीं; **हैला**—थे; **सावधाने**—सावधान; **काशीश्वर**—काशीश्वर; **गोविन्द**—गोविन्द; **आछिला**—थे; **अन्य-स्थाने**—एक अन्य स्थान पर।

अनुवाद

जब चैतन्य महाप्रभु गिरे, तो न तो नित्यानन्द प्रभु ने, न ही काशीश्वर या गोविन्द ने उनको संभाला। नित्यानन्द अत्यधिक आवेश में थे और काशीश्वर तथा गोविन्द अन्यत्र थे।

यद्यपि राजार देखि' हाड़ির সেবন ।
প্রসন্ন হঞাছে তাঁরে মিলিবারে মন ॥ ১৮৪॥

য়দ্যপি রাজার দেখি' হাড়ির সেবন ।
প্রসন্ন হঞাছে তাঁরে মিলিবারে মন ॥ ১৮৪॥

য়দ্যপি—যদ্যপি; **রাজার**—राजा को; **দেখি'**—देखकर; **হাড়ির সেবন**—भंगी की सेवा; **প্রসন্ন হঞাছে**—सन्तुष्ट हुए; **তাঁরে মিলিবারে**—उन्हें मिलने के लिए; **মন**—उनका मन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु पहले ही राजा के व्यवहार से प्रसन्न हो चुके थे, क्योंकि राजा ने भगवान् जगन्नाथ के लिए झाड़ू लगाने का काम स्वीकार किया था। अतः श्री चैतन्य महाप्रभु राजा को वास्तव में मिलना चाहते थे।

তথাপি আপন-গণে করিতে সাবধান ।
বাহ্যে কিছু রোষাভাস কৈলা ভগবান্ ॥ ১৮৫॥

তথাপি আপন-গণে করিতে সাবধান ।
বাহ্যে কিছু রোষাভাস কৈলা ভগবান্ ॥ ১৮৫॥

তথাপি—फिर भी; **আপন-গণে**—अपने साथियों को; **করিতে**—करने के लिए; **সাবধান**—सावधान; **বাহ্যে**—बाहर से; **কিছু**—कुछ; **রোষ-আভাস**—दिखावटी क्रोध; **কৈলা**—दिखाया; **ভগবান্**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्।

अनुवाद

तथापि अपने निजी संगियों को आगाह करने के लिए पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने ऊपर से रोष प्रकट किया।

तात्पर्य

जब महाराज प्रतापरुद्र ने महाप्रभु से भेंट करने के लिए पूछा, तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह कहते हुए तुरन्त मना कर दिया :

निष्किञ्चिनस्य भगवद्भजनोन्मुखस्य
पारं परं जिगमिषोर्भवसागरस्य।

सन्दर्शनं विषयिणामथ योषितां च
हा हन्त हन्त विषभक्षणतोऽप्यसाधु॥
(चैतन्य-चन्द्रोदय-नाटक ८.२३)

निष्किञ्चनस्य शब्द उस व्यक्ति का सूचक है, जिसने अपने सारे भौतिक कार्यकलाप समाप्त कर लिए हैं। ऐसा व्यक्ति भवसागर पार करने के लिए कृष्णभावनामृत में अपने कार्यकलाप सम्पन्न करना प्रारम्भ कर सकता है। ऐसे व्यक्ति के लिए संसारी लोगों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना अथवा किसी स्त्री से घनिष्ठ सम्पर्क रखना अत्यन्त खतरनाक सिद्ध होता है। यह औपचारिकता भगवद्धाम वापस जाने के लिए गम्भीर व्यक्ति को निभानी पड़ती है। इसीलिए जब राजा से उनका स्पर्श हुआ, तो महाप्रभु ने अपने निजी संगियों को इन सिद्धान्तों को समझाने के लिए ही बाहर से रोष प्रकट किया। चूँकि महाप्रभु राजा के विनीत आचरण से अत्यन्त सन्तुष्ट थे, अतएव उन्होंने जान-बूझकर राजा को अपना शरीर स्पर्श करने दिया, किन्तु अपने निजी संगियों को आगाह करने के लिए उन्होंने बाहर से रोष व्यक्त किया।

প্রভুর বচনে রাজার মনে হৈল ভয় ।
সার্বভৌম কহে,—তুমি না কর সংশয় ॥ ১৮৬॥

प्रभुर वचने राजार मने हैल भय ।
सार्वभौम कहे,—तुमि ना कर संशय ॥ १८६॥

प्रभुर वचने—श्री चैतन्य महाप्रभु के कथन से; **राजार**—राजा के; **मने**—मन में; **हैल**—था; **भय**—भय; **सार्वभौम कहे**—सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा; **तुमि**—आप (राजा); **ना कर संशय**—चिन्ता मत करो।

अनुवाद

महाप्रभु द्वारा बाहरी रोष दिखाये जाने पर राजा प्रतापरुद्र भयभीत हो गये, लेकिन सार्वभौम भट्टाचार्य ने राजा से कहा, "आप चिन्ता न करें।"

তোমার উপরে প্রভুর সুপ্রসন্ন মন ।
তোমা লক্ষ্য করি' শিখায়েন নিজ গণ ॥ ১৮৭॥

तोमार उपरे प्रभुर सुप्रसन्न मन ।
तोमा लक्ष्य करि' शिखायेन निज गण ॥ १८७॥

तोमार उपरे—आपके ऊपर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सु-प्रसन्न**—अत्यन्त सन्तुष्ट; **मन**—मन; **तोमा**—आपको; **लक्ष्य करि'**—लक्ष्य करके; **शिखायेन**—वे सिखा रहे हैं; **निज गण**—अपने निजी साथियों को।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने राजा से कहा, "महाप्रभु आप से अत्यन्त प्रसन्न हैं। वे आपको लक्ष्य बनाकर अपने निजी संगियों को शिक्षा दे रहे थे कि संसारी लोगों से किस तरह व्यवहार करना चाहिए।"

तात्पर्य

यद्यपि ऊपर से राजा कंचन तथा कामिनी में रुचि रखने वाले संसारी व्यक्ति थे किन्तु भीतर से वे अपने भक्ति-कार्यों द्वारा शुद्ध हो चुके थे। उन्होंने भगवान् जगन्नाथ को प्रसन्न करने के लिए सड़क पर झाड़ू देने का काम करके यह दिखला दिया था। यदि कोई धनाढ्य व्यक्ति ऊपर से कंचन तथा कामिनी में रुचि रखने वाला प्रतीत होता है, किन्तु यदि वास्तव में वह अत्यन्त दीन तथा विनीत है और पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के शरणागत है, तो वह संसारी नहीं कहा जायेगा। ऐसा निर्णय श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके विश्वस्त भक्त ही कर सकते हैं। किन्तु सामान्य नियम के रूप में, भक्तों को कामिनी तथा कंचन में रुचि रखने वाले व्यक्तियों से घनिष्टता से मिलना-जुलना नहीं चाहिए।

অবসর জানি' আমি করিব নিবেদন ।
সেই-কালে যাই' করিহ প্রভুর মিলন ॥১৮৮॥

अवसर जानि' आमि करिब निवेदन ।
सेइ-काले याइ' करिह प्रभुर मिलन ॥ १८८॥

अवसर जानि'—शुभ अवसर पाकर; **आमि**—मैं; **करिब**—करूँगा; **निवेदन**—निवेदन; **सेइ-काले**—उसी समय; **याइ'**—आकर; **करिह**—आप करो; **प्रभुर मिलन**—श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने आगे कहा, "उपयुक्त अवसर पाकर मैं आपका

निवेदन प्रस्तुत करूँगा। तब आपके लिए आकर महाप्रभु से मिलना आसान होगा।"

তবে মহাপ্রভু রথ প্রদক্ষিণ করিয়া ।
রথ-পাছে যাই' ঠেলে রথে মাথা দিয়া ॥১৮৯॥

তবে মহাপ্রভু রথ প্রদক্ষিণ করিয়া ।
রথ-পাছে য়াই' ঠেলে রথে মাথা দিয়া ॥ ১৮৯ ॥

তবে—उस समय; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **রথ**—रथ; **প্রদক্ষিণ**—प्रदक्षिणा; **করিয়া**—करके; **রথ-পাছে**—रथ के पीछे; **য়াই'**—जाकर; **ঠেলে**—धकेला; **রথে**—रथ पर; **মাথা দিয়া**—सिर लगाकर।

अनुवाद

जगन्नाथ की प्रदक्षिणा करके श्री चैतन्य महाप्रभु रथ के पीछे चले गये और अपने सिर से रथ को ढकेलने लगे।

ঠেলিতেই চলিল রথ 'হড়' 'হড়' করি' ।
চতুর্দিকে লোক সব বলে 'হরি' 'হরি' ॥১৯০॥

ঠেলিতেই চলিল রথ 'হড়' 'হড়' করি' ।
চতুর্দিকে লোক সব বলে 'হরি' 'হরি' ॥ ১৯০ ॥

ঠেলিতেই—जैसे ही उन्होंने धकेला; **চলিল**—चल पड़ा; **রথ**—रथ; **হড় হড় করি'**—घर्र घर्र का शोर करके; **চতুঃ-দিকে**—चारों ओर; **লোক**—सामान्य लोग; **সব**—सब; **বলে**—कीर्तन करने लगे; **হরি হরি**—"हरि हरि" पावन नाम बोलकर।"

अनुवाद

उनके ढकेलते ही रथ 'घर्र' 'घर्र' की आवाज करके चल पड़ा। चारों ओर से लोग भगवान् के पवित्र नाम—"हरि! हरि!"—का उच्चारण करने लगे।

তবে প্রভু নিজ-ভক্ত-গণ লঞা সঙ্গে ।
বলদেব-সুভদ্রাগ্রে নৃত্য করে রঙ্গে ॥১৯১॥

तबे प्रभु निज-भक्त-गण लञा सङ्गे ।
बलदेव-सुभद्राग्रे नृत्य करे रङ्गे ॥ १९१ ॥

तबे—उस समय; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **निज**—अपने; **भक्त-गण**—भक्तों को; **लञा**—लेकर; **सङ्गे**—अपने साथ; **बलदेव**—भगवान् बलराम; **सुभद्रा**—भाग्य की देवी सुभद्रा; **अग्रे**—आगे; **नृत्य**—नृत्य; **करे**—करने लगे; **रङ्गे**—बड़े आनन्द में।

अनुवाद

जैसे ही रथ चल दिया, श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निजी संगियों को भगवान् बलराम तथा लक्ष्मी देवी सुभद्रा के रथों के समक्ष ले गये। वे अत्यधिक प्रेरित होकर उनके समक्ष नाचने लगे।

তাহাঁ নৃত্য করি' জগন্নাথ আগে আইলা ।
জগন্নাথ দেখি' নৃত্য করিতে লাগিলা ॥ ১৯২ ॥

তাহাঁ নৃত্য করি' জগন্নাথ আগে আইলা ।
জগন্নাথ দেখি' নৃত্য করিতে লাগিলা ॥ ১৯২ ॥

তাহাঁ—वहाँ; **নৃত্য করি'**—नृत्य करके; **জগন্নাথ**—भगवान् जगन्नाथ के; **আগে**—आगे; **আইলা**—आये; **জগন্নাথ দেখি'**—भगवान् जगन्नाथ को देखकर; **নৃত্য**—नृत्य; **করিতে**—करने; **লাগিলা**—लगे।

अनुवाद

बलदेवजी तथा सुभद्रा के समक्ष नृत्य करने के बाद श्री महाप्रभु भगवान् जगन्नाथ के रथ के समक्ष आये और उन्हें देखकर पुनः नाचने लगे।

চলিয়া আইল রথ 'বলগণ্ডি'-স্থানে ।
জগন্নাথ রথ রাখি' দেখে ডাহিনে বামে ॥ ১৯৩ ॥

চলিয়া আইল রথ 'বলগণ্ডি'-স্থানে ।
জগন্নাথ রথ রাখি' দেখে ডাহিনে বামে ॥ ১৯৩ ॥

চলিয়া—चलते चलते; **আইল**—आया; **রথ**—रथ; **বলগণ্ডি-স্থানে**—बलगंडि नामक स्थान पर; **জগন্নাথ**—भगवान् जगन्नाथ ने; **রথ**—रथ; **রাখি'**—रोककर; **দেখে**—देखा; **ডাহিনে বামে**—बाएँ और दाएँ।

अनुवाद

जब वे बलगंडि नामक स्थान पर पहुँचे, तो भगवान् जगन्नाथ ने अपना रथ रोक दिया और दाएँ-बाएँ देखने लगे।

वामे—'विप्र-शासन' नारिकेल-वन ।
डाहिने त' पुष्पोद्यान येन वृन्दावन ॥ १९४॥

वामे—'विप्र-शासन' नारिकेल-वन ।
डाहिने त' पुष्पोद्यान ग्रेन वृन्दावन ॥ १९४॥

वामे—बाँयें ओर; **विप्र-शासन**—वह स्थान जहाँ ब्राह्मण रहते थे; **नारिकेल-वन**—नारियल का वन; **डाहिने**—दाईं ओर; **त'**—निस्सन्देह; **पुष्प-उद्यान**—पुष्पों का उद्यान; **ग्रेन**—जैसे; **वृन्दावन**—वृन्दावन।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ ने बाईं ओर ब्राह्मणों की बस्ती विप्रशासन और नारियल के वृक्षों का कुँज देखा। दाहिनी ओर उन्होंने पवित्र धाम वृन्दावन के जैसे सुन्दर पुष्पों के उद्यान देखे।

तात्पर्य

उड़ीसा प्रदेश में ब्राह्मणों के रहने वाले घरों को सामान्यतया *विप्रशासन* कहते हैं।

आगे नृत्य करे गौर लञा भक्त-गण ।
रथ राखि' जगन्नाथ करेन दरशन ॥ १९५॥

आगे नृत्य करे गौर लञा भक्त-गण ।
रथ राखि' जगन्नाथ करेन दरशन ॥ १९५॥

आगे—सामने; **नृत्य करे**—नृत्य किया; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **लञा**—साथ लेकर; **भक्त-गण**—भक्तों को; **रथ राखि'**—रथ को रोककर; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ के; **करेन दरशन**—दर्शन किये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्त रथ के सामने नाच रहे थे और भगवान् जगन्नाथ अपना रथ रोककर उनका नृत्य देखने लगे।

সেই স্থলে ভোগ লাগে,——আছয়ে নিয়ম ।
কোটি ভোগ জগন্নাথ করে আস্বাদন ॥ ১৯৬ ॥

সেइ স্থলে ভোগ লাগে,——আছয়ে নিয়ম ।
কোটি ভোগ জগন্নাথ করে আস্বাদন ॥ ১৯৬ ॥

सेइ स्थले—उस स्थल पर; **भोग लागे**—भोग लगाया जाता है; **आछये नियम**—यह नियम है; **कोटि भोग**—करोड़ों भोग; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **करे**—किया; **आस्वादन**—चखा।

अनुवाद

भगवान् को विप्रशासन स्थान पर भोजन समर्पित किये जाने की प्रथा थी। उन्हें असंख्य व्यंजन समर्पित किये गये और जगन्नाथजी ने उन सबका आस्वादन किया।

জগন্নাথের ছোট-বড় যত ভক্ত-গণ ।
নিজ নিজ উত্তম-ভোগ করে সমর্পণ ॥ ১৯৭ ॥

জগন্নাথের ছোট-বড় ব্রত ভক্ত-গণ ।
নিজ নিজ উত্তম-ভোগ করে সমর্পণ ॥ ১৯৭ ॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ के; **छोट**—छोटे; **बड़**—उन्नत; **व्रत**—सभी; **भक्त-गण**—भक्त-गण; **निज निज**—अपना पकाया हुआ; **उत्तम-भोग**—उत्तम भोग; **करे**—किया; **समर्पण**—समर्पण।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ के सभी तरह के भक्तों ने—नये भक्त से लेकर उन्नत भक्तों ने—अपना-अपना सर्वोत्तम भोजन भगवान् को समर्पित किया।

রাজা, রাজ-মহিষী-বৃন্দ, পাত্র, মিত্র-গণ ।
নীলাচল-বাসী যত ছোট-বড় জন ॥ ১৯৮ ॥

রাজা, রাজ-মহিষী-বৃন্দ, পাত্র, মিত্র-গণ ।
নীলাচল-বাসী ব্রত ছোট-বড় জন ॥ ১৯৮ ॥

राजा—राजा; **राज-महिषी-वृन्द**—रानियाँ; **पात्र**—मन्त्री; **मित्र-गण**—मित्र; **नीलाचल-वासी**—जगन्नाथ पुरी के सभी निवासी; **यत**—जितने; **छोट-बड़**—छोटे-बड़े; **जन**—व्यक्ति।

अनुवाद

इसमें राजा, उनकी रानियाँ, उनके मन्त्री तथा मित्र और जगन्नाथ पुरी के छोटे-बड़े सभी निवासी सम्मिलित थे।

नाना-देशेर देशी यत यात्रिक जन ।
निज-निज-भोग ताहाँ करे समर्पण ॥ १९९॥

नाना-देशेर देशी यत यात्रिक जन ।
निज-निज-भोग ताहाँ करे समर्पण ॥ १९९॥

नाना-देशेर—विभिन्न देशों के; **देशी**—स्थानीय; **यत**—सभी प्रकार के; **यात्रिक**—यात्री; **जन**—लोग; **निज-निज**—अपना पकाया हुआ; **भोग**—भोग; **ताहाँ**—वहाँ; **करे**—किया; **समर्पण**—समर्पण।

अनुवाद

विभिन्न देशों से जगन्नाथ पुरी आये हुए यात्रियों तथा स्थानीय भक्तों ने जगन्नाथजी को अपने हाथों से पकाया हुआ भोजन अर्पित किया।

आगे पाछे, दुइ पार्श्वे पुष्पोद्यान-वने ।
येइ याहा पाय, लागाय,—नाहिक नियमे ॥ २००॥

आगे पाछे, दुइ पार्श्वे पुष्पोद्यान-वने ।
येइ याहा पाय, लागाय,—नाहिक नियमे ॥ २००॥

आगे पाछे—आगे-पीछे; **दुइ पार्श्वे**—दोनों ओर; **पुष्प-उद्यान-वने**—फूल के बागों में; **येइ**—जिस किसी ने; **याहा पाय**—अवसर पाया; **लागाय**—भोग लगाया; **नाहिक नियमे**—वहाँ कोई सख्त नियम नहीं था।

अनुवाद

भक्तों ने रथ के आगे और पीछे, रथ के दोनों ओर तथा पुष्पोद्यान के भीतर—सभी जगह अपना भोजन अर्पित किया। जहाँ-जहाँ भी सम्भव

था, उन्होंने भगवान् को भोग चढ़ाया, क्योंकि इसके लिए कोई नियत नियम नहीं थे।

ভোগের সময় লোকের মহা ভিড় হৈল ।
নৃত্য ছাড়ি' মহাপ্রভু উপবনে গেল ॥২০১॥

भोगेर समय लोकेर महा भिड़ हैल ।
नृत्य छाड़ि' महाप्रभु उपवने गेल ॥ २०१ ॥

भोगेर समय—भोग समर्पित करने के समय; **लोकेर**—सभी लोगों की; **महा**—बड़ी; **भिड़**—भीड़; **हैल**—हो गई; **नृत्य छाड़ि'**—अपना नृत्य छोड़कर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उपवने गेल**—निकट के उद्यान में गये।

अनुवाद

भोजन अर्पित करते समय बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई। तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपना नृत्य रोक दिया और वे पास के बगीचे में चले गये।

প্রেমাবেশে মহাপ্রভু উপবন পাঞা ।
পুষ্পোদ্যানে গৃহ-পিণ্ডায় রহিলা পড়িয়া ॥২০২॥

प्रेमावेशे महाप्रभु उपवन पाञा ।
पुष्पोद्याने गृह-पिण्डाय रहिला पड़िया ॥ २०२ ॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **उपवन पाञा**—निकट के सुन्दर बगीचे में आकर; **पुष्प-उद्याने**—उस पुष्प-उद्यान में; **गृह-पिण्डाय**—ऊँचे चबूतरे पर; **रहिला**—रहे; **पड़िया**—सीधे लेटकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु बगीचे में चले गये। वहाँ वे प्रेमावेश में निमग्न होकर एक चबूतरे पर लेट गये।

নৃত্য-পরিশ্রমে প্রভুর দেহে ঘন ঘর্ম ।
সুগন্ধি শীতল-বায়ু করেন সেবন ॥২০৩॥

नृत्य-परिश्रमे प्रभुर देहे घन घर्म ।
सुगन्धि शीतल-वायु करेन सेवन ॥ २०३ ॥

नृत्य-परिश्रमे—नृत्य के कारण थकान; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **देहे**—शरीर पर; **घन घर्म**—अधिक पसीना; **सुगन्धि**—सुगन्धित; **शीतल-वायु**—शीतल वायु; **करेन सेवन**—अत्यन्त आनन्द पाया।

अनुवाद

महाप्रभु नाचने के कठोर श्रम से बहुत थक गये थे और उनके सारे शरीर पर पसीना था। अतएव उन्होंने बगीचे की सुगन्धित शीतल वायु का आनन्द उठाया।

যত ভক্ত কীর্তনীয়া আসিয়া আরামে ।
প্রতি-বৃক্ষ-তলে সবে করেন বিশ্রামে ॥২০৪॥
यत भक्त कीर्तनीया आसिया आरामे ।
प्रति-वृक्ष-तले सबे करेन विश्रामे ॥ २०४ ॥

यत भक्त—सारे भक्त; **कीर्तनीया**—संकीर्तन करने वाले; **आसिया**—आकर; **आरामे**—विश्राम-स्थल पर; **प्रति-वृक्ष-तले**—प्रत्येक वृक्ष के नीचे; **सबे**—वे सब; **करेन**—करने लगे; **विश्रामे**—विश्राम।

अनुवाद

संकीर्तन करने वाले सारे भक्त भी वहाँ आ गये और उन्होंने वृक्षों के नीचे विश्राम किया।

এই ত' কহিল প্রভুর মহা-সঙ্কীর্তন ।
জগন্নাথের আগে যৈছে করিল নর্তন ॥২০৫॥
एइ त' कहिल प्रभुर महा-सङ्कीर्तन ।
जगन्नाथेर आगे यैछे करिल नर्तन ॥ २०५ ॥

एइ त'—इस प्रकार; **कहिल**—मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **महा-सङ्कीर्तन**—महासंकीर्तन; **जगन्नाथेर आगे**—भगवान् जगन्नाथ के समक्ष; **यैछे**—जैसे; **करिल**—उन्होंने किया; **नर्तन**—नृत्य।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा किये गये महासंकीर्तन का वर्णन किया है, जिस तरह वे जगन्नाथ के समक्ष नाचे थे।

रथाग्रेते प्रभु यैछे करिला नर्तन ।
चैतन्याष्टके रूप-गोसाञि कर्याछे वर्णन ॥२०६॥

रथाग्रेते प्रभु ग्रैछे करिला नर्तन ।
चैतन्याष्टके रूप-गोसाञि कर्म्याछे वर्णन ॥ २०६ ॥

रथ-अग्रेते—रथ के आगे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ग्रैछे**—जैसे; **करिला**—किया; **नर्तन**—नृत्य; **चैतन्य-अष्टके**—*चैतन्याष्टक* नामक प्रार्थना में; **रूप-गोसाञि**—श्रील रूप गोस्वामी ने; **कर्म्याछे**—किया है; **वर्णन**—स्पष्ट वर्णन।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी ने चैतन्याष्टक नामक अपनी स्तुति में महाप्रभु द्वारा जगन्नाथजी के रथ के समक्ष नाचने का स्पष्ट वर्णन किया है।

तात्पर्य

श्रील रूप गोस्वामी ने तीन स्तुतियाँ लिखी हैं और इनमें से हर एक का शीर्षक *चैतन्याष्टक* है। अगला श्लोक (७) प्रथम चैतन्याष्टक से है, जो *स्तवमाला* नामक ग्रंथ में सम्मिलित है।

रथारूढ़स्यारादधिपदवि नीलाचल-पतेर्
अदभ्र-प्रेमोर्मि-स्फुरित-नटनोल्लास-विवशः ।
स-हर्षं गायद्भिः परिवृत-तनुर्वैष्णव-जनैः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥२०७॥

रथारूढ़स्यारादधिपदवि नीलाचल-पतेर्
अदभ्र-प्रेमोर्मि-स्फुरित-नटनोल्लास-विवशः ।
स-हर्षं गायद्भिः परिवृत-तनुर्वैष्णव-जनैः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ २०७॥

रथ-आरूढ़स्य—भगवान् का जो रथ पर सवार थे; **आरात्**—के सामने; **अधिपदवि**—बड़ी सड़क पर; **नीलाचल-पतेः**—नीलाचल के स्वामी भगवान् जगन्नाथ का; **अदभ्र**—महान्;

प्रेम-ऊर्मि—भगवत्-प्रेम की तरंगो से; **स्फुरित**—जो प्रकट हुआ; **नटन-उल्लास-विवशः**—नृत्य के दिव्य आनन्द से विह्वल होकर; **स-हर्षम्**—हर्ष सहित; **गायद्भिः**—गायकों से; **परिवृत**—घिरकर; **तनुः**—शरीर; **वैष्णव-जनैः**—भक्तों से; **सः चैतन्यः**—वे श्री चैतन्य महाप्रभु; **किम्**—क्या; **मे**—मेरा; **पुनः अपि**—दोबारा; **दृशोः**—दृष्टि के; **ग्रास्यति**—प्रवेश करेंगे; **पदम्**—पथ में।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु ने रथ पर विराजमान नीलाचल के स्वामी भगवान् जगन्नाथ के समक्ष प्रमुख मार्ग में परम प्रसन्नतापूर्वक नृत्य किया। नृत्य करने के दिव्य आनन्द से अभिभूत होकर तथा नामोच्चार करने वाले वैष्णवों से घिरे महाप्रभु ने उत्कट भगवत्प्रेम की लहरें प्रकट कीं। ऐसे श्री चैतन्य महाप्रभु कब मेरे समक्ष पुनः दृष्टिगोचर होंगे?"

इहा येइ शुने सेइ श्री-चैतन्य पाय ।
सुदृढ़ विश्वास-सह प्रेम-भक्ति हय ॥२०८॥

इहा ग्रेइ शुने सेइ श्री-चैतन्य पाय ।
सुदृढ़ विश्वास-सह प्रेम-भक्ति हय ॥ २०८॥

इहा—यह; **ग्रेइ**—जो कोई; **शुने**—सुनता है; **सेइ**—वह व्यक्ति; **श्री-चैतन्य पाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु को पायेगा; **सु-दृढ़**—सुदृढ़; **विश्वास**—विश्वास; **सह**—के साथ; **प्रेम-भक्ति**—प्रेमाभक्ति; **हय**—होगी।

अनुवाद

जो भी रथयात्रा के इस विवरण को सुनता है, उसे श्री चैतन्य महाप्रभु प्राप्त होंगे। उसे वह उच्च अवस्था भी प्राप्त होगी, जिससे उसे भगवद्भक्ति तथा भगवत्प्रेम में दृढ़ विश्वास प्राप्त होगा।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥२०९॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्रार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ २०९॥

श्री-रूप—श्री रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों पर; **यार**—जिसकी ; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ का; **कहे**—वर्णन किया है; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की प्रार्थना करते हुए और उनकी कृपा की कामना करते हुए मैं कृष्णदास श्रीचैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के तेरहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ जिसमें जगन्नाथजी की रथयात्रा के अवसर पर महाप्रभु के भावमय नृत्य का वर्णन हुआ है ।